मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास
1963

मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहास

प्राक्कथन

अतिप्राचीन कालसँ एखनधरि मिथिलाक भूमि संस्कृतिक एक विशिष्ट केन्द्र रहल अछि आओर संस्कृतिक ओहि पातर डोरीसँ बान्हल अजुको मिथिलावासी निबाहि रहल अछि। मैथिल संस्कृतिक अपन जे वैशिष्ट्य छैक तकर निखार अखनोधरि नहि भेल छैक। भारतमे जखन् आर्य लोकनि आएल छलाह तखन ओ लोकनि पश्चिमोत्तर सीमामे अपन वासस्थान बनौलन्हि आओर शनैः शनैः हुनक विस्तार भेलन्हि आओर पूर्वी भारतमे ओ लोकनि सर्वप्रथम मिथिलहिमे अपन चरण रखलन्हि। इएह कारण थीक जे दक्षिण बिहारक अपेक्षा उत्तर बिहार प्राचीन साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान प्राप्त केलक।

जनक आओर याज्ञवल्क्यक समयमे मिथिलामे आर्य संस्कृति अपन चरमोत्कर्ष पर छल[१]। मिथिलाक वैशिष्ट्यक विस्तृत विवरण महाभारतमे

(१) '............the Videhas maintained a high position in the Vedic Society at least in the Brāhmaṇa period, and from the superior intellectual position that they had attained in this period it is legitimate to assume that Vedic Aryan Culture had taken its root in Videha long before the Brāhmaṇa age and most probably in the early Saṁhitā age of the Ṛkveda'—देखू : Dr. B. C. Law क पोथी '*Tribes in ancient India*' पृष्ठ २३६-३७ आओर देखू A. B. Keith : *Vedas of the Black Yaju's school* Vol. I 38 आओर *JASB* 1897 पृष्ठ ८७-८६.

सुरक्षि[illegible] बौद्ध विद्वान् लोकनि सेहो जनक वंशक स्तुति गौने छथि[3]। ब्रह्मज्ञान प्राप्त करबाक हेतु लोक सब ताहि दिन जनक ओतए जाइत छलाह[4] बृहदारण्यक उपनिषद्मे 'जनको वैदेहः' (अध्याय ३) भेटइत अछि जाहिसँ ई अनुमान लगाएब समीचीन बुझना जाइत अछि जे ताहि दिनमे दूरस्थ प्रान्तसँ ब्रह्मविद्या प्राप्त करबाक हेतु विदेह अबैत छलाह। याज्ञवल्क्यकेँ योगीश्वर कहल गेल छन्हि[5]। न्यायशास्त्रक प्रणेता महर्षि गौतम मैथिल छलाह। मुण्डकोपनिषद्मे न्याय, मीमांसा एवं धर्मशास्त्रक उल्लेख भेटइत अछि। एवं प्रकारे ई निश्चित भ जाइत अछि जे मिथिला अति-प्राचीन कालसँ दर्शन एवं संस्कृतिक प्राचीन केन्द्र बनल रहल अछि जकर विवरण आब प्रस्तुत अछि।

समाज

[प्रारम्भसँ १५०० ई० धरि]

वेद-ब्राह्मण युग :

जेना कि पूर्वहि कहि चुकल छी जे मिथिलाक अस्तित्व वैदिक कालहिसँ अद्यावधि सुरक्षित अछि। मिथिलामे आर्यक आगमनक

(२) भण्डारकर शोध संस्थानसँ प्रकाशित महाभारतक Vol. II. 20, 30, 132, 134 ; III. 134-135—सर्वेशज्ञो मैथिलस्य मैनाकस्येव पर्वताः। निकृष्ट भूता राजानो वत्साह्यनड्डु हो यथा॥ XII. 312 ; 327.

(३) अश्वघोषक 'बुद्धचरित'—९।२०

ध्रुवानुजौ यौ बलिबज्रबाहुवैभ्राजमाषाढ़ मथान्तिदेवम्।
विदेहराजं जनकं तथैव (रामं द्रुमंसेनजितस्वराज्ञः)॥

(४) बृहदारण्यक उपनिषद् : २. १. १,

सहोवाचाजातशत्रु सहस्रमेतस्यां वाचि दध्मो।
जनको जनक इति वैजना धावन्तीति॥

(५) योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं संपूज्य मुनयोऽब्रुवन्। देखू : *याज्ञवल्क्य स्मृतिक* प्रथम श्लोक।

पूर्व सामाजिक व्यवस्था केहेन छल तकर ठीक-ठीक अनुमान लगाएव असम्भव मुदा आजुक मिथिलामे हमरा लोकनि जे देखइत छी ताहिसँ बहुत भिन्न ओहि दिनक अवस्था नहि छल। प्रत्येक देशक अपन-अपन देशगत विशेषता होइत छैक आओर ओहि पर ओहि देशक भूगोलक प्रभाव रहिते छक। मिथिला एहि नियमक अपवाद नहि रहल अछि आओर रहबे कियेक करैत ? समाजिक नियम एवं उपबन्धक निर्माण कोनो एक दिनमे नहि होइत छैक आओर सामाजिक व्यवस्था पर मात्र भूगोलक नहि वरन् आर्थिक व्यवस्थाक प्रभाव सेहो पड़इत छैक। पूर्व वैदिक कालमे समाजक व्यवस्था कठोर नहि बनल छल आओर बहुत दूर तक ओ व्यवस्था स्वच्छन्द एवं मुक्त छल। समाजमे प्रत्येक व्यक्तिकेँ मुक्त वातावरणक अनुभव होइत छलक आओर ओ लोकनि कोनो स्थायी नियमक निर्माण कए नहि बैसि गेल छलाह। गतिशील समाज छल आओर तेँ विकासोन्मुख सेहो। एवं प्रकारे ई समाज बहुतो दिन धरि चलल आओर शनैः शनैः आर्यक विस्तार जहिना भारतक भिन्न-भिन्न भागमे होमए लागल तहिना समाजोमे तदनुकूल परिवर्तन अवश्यम्भावी बुझना गेल आओर समाजक महारथी लोकनि ओहि दिसि अपन ध्यान देलन्हि। साम्राज्यक विस्तारक संगहि अर्थनीतिक पेंच कसल जाए लागल समाज ओहिसँ भिन्न नहि रहि सकल। वर्णाश्रमक व्यवस्था, भने कोनो उच्च आदर्शसँ भेल हो, पछाति अपन दुर्गुणेक संग हमरा लोकनिक समक्ष उपस्थित भेल आओर जेना-जेना वर्ग-विभेद बढ़ल गेल तेना-तेना एकर स्वरूप दिन-प्रति-दिन विकृत होइत गेलैक। जँ से नहि होइत तँ मिथिलामे पुनः जनक सन शासक, याज्ञवल्क्य सन विधि निर्माता एवं गौतम सन सूक्ष्म विचारक किऐक नहि अवतीर्ण भेलाह ? आर ने फेर उत्पन्न भेलीहे कोनो गार्गी आओर मैत्रयी ? एहि मूल तथ्यकेँ जा धरि हमरालोकनि अवगाहन करबाके चेष्टा नहि करब ता धरि हमरा लोकनिक कल्याण नहि आ ने तत्वक उचित दिग्दर्शने।

ऋग्वेदक पुरुष-सूक्तमे सर्वप्रथम चारू वर्णनक उल्लेख भेटइत अछि[६]।

---

(६) ऋग्वेद—१०, ६, १२ ; आओर देखू ओतहि—१, ११३, ६ आओर ८।३५।१६–१८

प्रारम्भमे एहने बूझि पड़ैछ जे जखन आर्य लोकनिकेँ विस्तार भेलन्हि आओर हुनका लोकनिकेँ एहिठामक आदिवासीसँ सम्पर्क भेलन्हि तखन दुहुक संस्कृति भिन्न छलन्हि आओर ओ लोकनि वर्णक विभाजन उचित बुझलन्हि आओर तदनुकूल वर्णक विभाजन भेल[७]। मिथिलामे जखन आर्यक प्रसार भेल तखन एहेन बुझना जाइछ जे वर्ण-व्यवस्थाक प्रचलन भए चुकल छल। सम्प्रति एहि व्यवस्थामे जे कट्टरता हमरालोकनिकेँ देखबामे अबैत अछि से ताहि दिन नहि छल। यद्यपि विभिन्न सूत्र साहित्यक रचना एकरा ओहि दिशि लएबाक प्रयासमे छल। विवाहादिक प्रसंगमे ऋग्वेद आओर शतपथ-ब्राह्मणमे भिन्नता देखबामे अबैछ[८]। ब्राह्मण-कालमे शूद्र लोकनिक अवस्था शोचनीय भए गेल छल। ओ लोकनि सब अधिकारसँ वंचित भए गेल छलाह आओर हुनका समाजमे निकृष्ट स्थान छलैन्ह[९]—कालान्तमे किछु एहन व्यवस्था बनल जाहिमे ब्राह्मण-क्षत्रिय लोकनि सम्मिलितरूपेँ निम्नवर्गक शोषणमे रत भए गेलाह। एकर मूल कारण ई छल जे जँ जँ सामाजिक व्यवस्था गूढ़ होइत गेल तँ तँ ई दुहू वर्ण उत्पादनक साधन एवं तत्सम्बन्धी ज्ञानक कुञ्जी अपना हाथमे दबौने गेलाह आओर निम्न दुहू वर्गक लोक हिनका सबहिक अधीन होइत गेल। कोनो चारा जे नहि रहि गेल छलैक आओर एहने स्थिति छलै, जखन शूद्रकेँ वेदसँ वंचित कएल गेलैक। एहि सब घटनाक्रमक उल्लेख तत्कालीन साहित्य एवं कथामे सुरक्षित अछि जकर अध्ययन अपेक्षित। निस्वार्थ भावेँ जँ वैज्ञानिक पद्धतिसँ एहि सब साधनक अध्ययन हो तखने हमरा लोकनिक शुद्ध वैज्ञानिक इतिहास एवं जातीय संस्कृतिक पतो तखने लागत। इतिहास एवं समाजमे अध्ययनक ई पद्धति अपना सबहिक ओतए अखनो धरि प्रारम्भ नहि भेल अछि। गरीब लोकनिक की दशा रहल होइत तकर

---

(७) द्रष्टव्य—R. K. Mookherjee : *Hindu Civilisation* पृष्ठ ८६ सँ

(८) *शतपथब्राह्मण* १, ८, ३, ६ आओर देखू ४, १, ५, ७ ब्राह्मण आओर क्षत्रियकेँ अपनासँ छोट वर्गमे विवाह करबाक अधिकार प्राप्त छलैन्ह।

(९) हुनक दुर्दशाक वर्णन एतरेय *ब्राह्मण* ७।२९ मे वर्णित अछि, विशेष विवरणक हेतु देखू R. S. Sharma : *Śudras in Ancient India*

पूर्वाभास तँ महाभारतक अध्ययनसँ भेटइत अछि, जतए इन्द्रोकेँ ई कहए पड़ल छन्हि जे जँ दुखक अनुभव करबाक हो तँ मर्त्यलोक जा कए हुनका संग रहिके देखि आउ। महाभारतक अनुशासन-पर्वमे शौद्रमुनि संवाद एहि दृष्टिकोणसँ सर्वथा महत्वपूर्ण अछि[१०]।

समाजक वर्गीकरण दिनानुदिन विषम होइत गेल आओर सामन्तवादी व्यवस्थाक वीजारोपण ओहि युगमे भए गेल। शूद्र आओर अन्यान्य छोटछीन वर्गक लोग सब जमीनक अभावमे मजूर अथवा बेगारीक अवस्थाकेँ प्राप्त केलक आओर ओम्हर दोसर दिशि गगनचुम्बी अट्टालिका ओकरा लोकनिक दयनीय एवं उपेक्षित आओर असहाय अवस्था पर अट्टहास करए लागल। सूत्र एवं स्मृति साहित्य एहि बातक पुष्ट प्रमाण अछि[११]। करहुक मामलामे वैश्य–शूद्रकेँ तंग होमए पड़इत छलन्हि[१२] वैदिक युगमे जाति वा वर्गक निर्णय कर्मसँ होइत छल आओर आन वर्णक लोको अपन कर्मसँ ब्राह्मण भऽ सकइत छल। *शतपथ ब्राह्मण*मे लिखल अछि जे राजा जनक याज्ञवल्क्यक उपदेश एवं अपन कर्तव्यसँ ब्राह्मण भेल छलाहे[१३] तैत्तरिय ब्राह्मण (६।६।१।४)मे कहल गेल अछि जे विद्वानेंकेँ ब्राह्मण कहवाक चाही। मनुक्खक जीवनक क्रम तीन टा विभाजन सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषद्‌मे भेटइत अछि। स्त्रीक स्थान समाजमे निकृष्ट छल। स्त्री, शूद्र, श्वान आओर गायकेँ 'अनृत'क संज्ञा देल गेल छैक[१४]। विवाहमे खरीद-विक्रीक प्रथा छल

(१०) विशिष्ट विवरणक हेतु देखू प्रो० त्रिपुरारी चक्रवर्तीक देल कलकत्ता विश्वविद्यालयमे भाषण : *Socialist tradition in the Mahabharata.*

(११) द्रष्टव्य : D. R. Chanana : *Slavery in Ancient* आओर Dr. U. N. Ghoshal *Indian Histriography & other Essays.*

(१२) Upendra Thakur : *History of Mithila* p. 75 ; देखू हमर *History of Bihar.*

(१३) शतपथ ब्राह्मण–११।६।२।१० आओर देखू—कठक ३०।१ मैत्रेय-संहिता ४।८।१ ; १०७।६

(१४) Majumdar & Pusalkar : *The Vedic Age* p. 420.

बहु विवाहक प्रथा तँ छलहे आओर संगहि धन सम्पतिसँ सेहो स्त्रीगणके वंचित राखल जाइत छल। सामाजिक दृष्टिकोणसँ पूर्व वैदिक कालमे जे मुक्त वातावरण रहल हो, उतर वैदिक कालक प्रारम्भहिसँ एहिमे संकीर्णताक समावेश देखबामे अवैछ आओर-आओर एहि अनुसार भावनाकेँ प्रश्रय देवाक हेतु अत्यधिक साहित्य एवं कर्मकाण्डी नियमक निर्माण भेल। ओना उपरसँ देखबामे तँ इएह बुझि पड़इत अछि जे स्त्रीगणक स्थान समाजमे बड़ उच्च छलन्हि मुदा ई स्थिति वास्तविकतासँ बड़ दूर छल। गार्गी आओर मैत्रेयीक नामसँ कोनो देश अपनाके गौरवान्वित बुझओ, मुदा हमरा लोकनिकेँ एतए ई स्मरण राखब अत्यावश्यक जे ओ लोकनि नियमक अपवाद मात्र छलीहे[15] ओहिठाम याज्ञवल्क्यक दोसर पत्नी कात्यायनीके देखिओक त बुझवामे असौकर्य नहि होएत जे समाजमे स्त्रीक वास्तविक स्थिति की छल? सुलभा आओर गार्गीक देनसँ भारतक दर्शन भरपूर अछि। जत' एक दिसि मनुखके अधिकाधिक विवाह करबाक अधिकार प्राप्त छलन्हि ओहिठाम एक स्त्रीकेँ दोसर विवाह करवाक आओर दोसराक संग मेलजोलक कोनो अधिकार नहि छलैक। *सुरुविजातक* (नं० ४८९)मे एकटा कथा सुरक्षित अछि जकर रुपान्तर हम एहिठाम प्रस्तुत कए रहल—'मिथिलाक राज्य बड़ विस्तृत अछि। एहिठाम शासकके १६००० पत्नी छन्हि'[16]। एहिसँ पत्यक्ष भऽ जाइत अछि जे सामाजिक व्यवस्थामे स्त्रीगणक की स्थिति छल।

ऐतरेय ब्राह्मणमे कहलगेल अछि, जे पुतोहु अपन श्वसूरक सोझाँ नहि जाइत छलीह[17] जँ अनचोकसँ कतहु श्वसूरक नजरि पुतोहु पर पड़ि जाइन्ह तँ पुतोहु वेचारी कतहु नुका रहइत छली। एहिसँ ई स्पष्ट भ जाइत अछि जे अति प्राचीन कालहुमे मिथिलामे पर्दाक प्रथा प्रचलित छल। मैथिल समाजमे ताहि दिनसँ अद्यावधि कोनो विशेष परिवर्तन नहि देखबामे अवैछ। विधवाक स्थितियो प्रायः अजुके जकाँ छल आओर विधवा लोकनिक स्थिति

(१५) *Ibid* 420–आओर देखू: *Great Woman of India* पृष्ठ १३८-९.

(१६) आओर विस्तृत विवरणक हेतु देखू Cowell द्वारा सम्पादित जातक खण्ड ६।३०-३१.

(१७) *एतरेय ब्राह्मण—१२।११ ; १३।१३*

बड़ बदतर छल। रखेल रखबाक प्रथा, दासी पुत्रीक संग दुर्व्यवहार, व्यभिचार एवं वेश्यावृति उल्लेख सेहो भेटइत अछि। राजदरबारमे असंख्य दासी पुत्री आओर रखेल व्यवस्था रहइत छल। मिथिलाक विभाण्डक मुनिक पुत्र ऋषि-शृंगकेँ अंगक एक सुन्दरी फुसिआ लेने छलन्हि। किंवदन्ती अछि अंगक राजा लोमपाद अपन बेटी शान्ताकेँ एहि कार्यक हेतु अगुऔने छल। एहि घटनाक उल्लेख अश्वघोष सेहो कएने छथि[१८]। पुराण आओर जातकमे वर्णित समाज मे बहुत किछु समानता अछि। दिन प्रतिदिन समाजमे कट्टरता एवं अनुदार भावना जड़ि पकड़ने गेल। धनक महत्व बढ़य लागल आओर विद्या आओर विद्वानक महत्व क्रमशः घटय लागल। लक्ष्मी सरस्वतीक आपसी द्वेष बौद्ध युगमे विशेषरूपेँ चरितार्थ भेल अछि। ब्राह्मणक अपेक्षा आब धनाढ्यक प्रतिष्ठा बढ़ि गेल। आवश्यकतानुसार आब लोक अपन रोजगार चुनऽ लागल आओर प्राचीन कालमे ब्राह्मण लोकनिक लेल खेती आओर व्यापार के जे निषिद्ध कहल गेल छल से आब नहि रहल। पुराणादिक अध्ययनसँ ई बात स्पष्ट भ जाइत अछि[१९]। बौद्ध-साहित्यसँ ई ज्ञात होइत अछि जे आब ब्राह्मण लोकनि अपन जीविकाक हेतु सब काज करइत छलाह[२०]। जातकतँ एहि प्रकारक कथासँ भरले अछि। सामाजिक नैतिकतामे सेहो परिवर्तन भेल आओर प्राचीन मूल्यांकन क मापदण्डमे सेहो समयानुसार उचित संशोधन आओर परिवर्तन भेल।

बौद्ध-युग

भोजन भावक नियमादिमे सेहो परिवर्तन अवश्यम्भावी छल। ब्राह्मणक सत्ताक भीत ढहि चलल आओर क्षत्रिय लोकनिक प्रभाव

---

(१८) बुद्धचरित : ऋष्यशृङ्ग मुनि सुतं तथैव स्त्रीष्वपंडितम्
उपायै विविधैः शान्ता जग्राह च जहार च (४।१९)

(१९) देखू हमर लेख : *Position of the Brāhmaṇas in Ancient India* जे P. K. Gode Commemoration Volume मे प्रकाशित भेल अछि।

(२०) देखू : *Dialogues of Buddha*

दिनानुदिन बढ़ि रहल छल। जातकमे लिखल अछि जे ब्राह्मण लोकनि एहि युगमे सभहिक संग भोजन-भाव करइत छलाह आ ओर एहेन ब्राह्मण सबके कट्टर वैदिक लोकनि अपना पाँतीसँ फराके रखइत छलाह। एहि प्रकारक ब्राह्मण लोकनिकेँ पतित कहल जाइत छलन्हि। सामाजिक मान्यताक हेतु एहि युगमे संघर्ष चलइत रहल आ ओर तरह-तरहक उथल-पुथलक कारणे समाजमे सतत अस्थायित्व बनल रहल। एकर कारण ई छल जे ई० पू० छठम शताब्दमे आजीविका जैन आ ओर बौद्ध सम्प्रदायक विकास भेल छल आ ओर ई लोकनि वेदक अपौरुषेयतामे सन्देह व्यक्त कएने छलाह आ ओर समाजक वर्गीकरणमे सेहो। एकरे प्रभावस्वरूप जाति-पाँतिक जंजाल भथि रहल छल आ ओर एहि अग्निधारमे बहुत सड़ल विचारक होम भए रहल छल। मिथिलामे प्रारम्भमे एहि सब सम्प्रदायक प्रभाव न्यूने छल आ ओर वैशालीसँ आगाँ एहि सम्प्रदाय सभहिक दालि नहि गलल छलन्हि। वैशालीक लिच्छविके बुद्ध तँ तावर्तिश देव कहने छलथीन्ह मुदा वैशालीक अध्ययनसँ ईहो प्रत्यक्ष होएत जे वैशालियो वर्णाश्रम-धर्मक प्रभावसँ सर्वथा मुक्त नहि छल। भने वर्णाश्रम-धर्मक प्रभाव नहि रहल हो मुदा धनक प्रभाव ओहिठामक समाजमे छल आ ओर वर्ग विभाजनक प्रत्यक्ष उदाहरण तँ ई अछि जे हुनका लोकनिक रहन-सहन वर्गगत छलनि[२१]। जँ एहि व्यवस्थामे कतहु कोनो प्रकारक छूट देखबामे अबइत हो त ओकरा नियमक अपवाद कहब। समाजक भद्र लोकनि चाण्डालकेँ हेय दृष्टिसँ देखइत छलाह आ ओर समाजमे चाण्डालक स्थिति बत्तर छलन्हि ओ लोकनि नगरसँ बाहर रहइत छलाह। घृणित कार्य हुनके सबसँ कराओल जाइत छल। मिथिलाक इतिहासकारक मतेँ केओ हुनका लोकनिक अवस्थामे सुधार नहि आनि सकल[२२]।

---

(२१) तुलना करू : *Cambridge History of India* Vol. I पृ० २०९

(२२) Thakur : *History of Mithila* पृष्ठ १३१ This down-trodden fraction of humanity could never raise its head even though the great Buddha and Mahabir had come and gone.

भृत्य, गुलाम आओर बहियाक स्थिति तँ आर चिन्तनीय छल। बेगारीक बाजार ओतबे गर्म छल[२३]। स्वयं बुद्ध जे अपना मुँहसँ गुलामक दयनीय अवस्थाक वर्णन कएनें छथि ताहिसँ तँ रोमांच भए जाइछ[२४]। विधुर पण्डितक जातकमे चारि प्रकारक गुलामक वर्णन भेटइत अछि। मिथिलामे जे हमरा लोकनि 'बहिया'क प्रथा देखै छी से कोनो नवीन वस्तु नहि बल्कि बहुतो दिनसँ चल आबि रहल अछि। कौटिल्यक अर्थशास्त्र आओर अन्यान्य ग्रन्थ सभमे एहि बातक उल्लेख भेटइत अछि। वेश्याक प्रचलन एहू युगमे छल आओर ओहि कालमे वैशालीमे सर्वप्रसिद्ध अम्बपालीक नाम तँ सर्वविदित अछिये। यद्यपि बुद्ध स्वयं एहि व्यवस्थाक विरोधी छलाह आओर एतए धरि जे ओ स्त्रीकेँ संघमे अएबासँ वर्जित करइत छलथिन्ह मुदा तइयो जखन अम्बपाली हुनका प्रति अपन भक्ति दरसौलक तखन भगवान ओकर निमन्त्रण स्वीकार कए ओकरा ओतए भोजन करब सेहो स्वीकार कैलन्हि[२५]। अभिजात वर्गक लोक सबहिक ओतए तँ गणिकाक ढेर लागल रहइत छल। एहि मे बहुतो नृत्य एवं संगीत कलामे निपुण होइत छलीह। कोनो-कोनो राज दरबारमे तँ १६००० गणिकाक होएबाक उल्लेख भेटइत अछि[२६]। बौद्ध-युगमे सेहो पर्दा-प्रथा प्रचलित छल।

बौद्धयुगीन वर्ण-व्यवस्थामे सेहो थोड़-बहुत परिवर्त्तन भेल। अशिक्षित ब्राह्मण लोकनि निम्नस्तरकेँ प्राप्त भेलाह। सामाजिक मापदण्ड भेल धन-सम्पत्ति आओर राज्याधिकार तऽ आब क्षत्रिय लोकनिक समाजमे विशेष रूपेँ आहूत होमय लागल तथा वैशाली आओर विदेहमे तँ हुनका लोकनिक सत्ता आओर बढ़ि गेल। क्षत्रिय लोकनिक प्रभावक सबसँ पैघ

(२३) देखू हमर लेख : Visṭi or Forced Labour in Ancient India.

(२४) देखू : D. R. Chanana क पूर्वोल्लिखित पोथी B M. Barua *Inscriptions of Ashoka*, II 307.

(२५) एहि सब सम्बन्धमे विस्तृत विवरणक हेतु देखू हमरे लिखल— 'सिद्धार्थ' (पटना : सिद्धार्थ प्रेससँ प्रकाशित)

(२६) द्रष्टव्य : *Journal of Indian History* XXXII 250.

उदाहरण इएह भेल जे वैशालीक अभिषेक पुरस्करणीमे लिच्छवी राजा लोकनि अनका स्नान नहि करए दइत रहथिन्ह। समस्त लिच्छवी क्षेत्र तीन हिस्सामे वर्ग अथवा वर्णक आधारपर बटल छल आओर प्रत्येक क्षेत्रक रहनिहार अपनहि क्षेत्रमे विवाहादि कए सकइत छल। पैघ वर्णक बालक जँ छोट वर्णक कन्यासँ विवाह करय तँ ताहि दिनमे एकर मान्यता छल मुदा एहिठाम एक बात स्मरण रखबाक ई अछि जे राजकुमार नाभाग (वैशालीक राजकुमार) जखन एक वैश्य कन्यासँ विवाह कैलन्हि तखन हुनका गद्दीसँ वंचित कए देल गेल। एहिसँ ई अनुमान लगाओल जाइत अछि जे राजदरबारमे अन्तर्जातीय विवाहकेँ प्रोत्साहन नहि देल जाइत छल। कुलीन परिवार एवं अभिजात वर्गक सदस्यगण ताहू दिनमे एकर कट्टर विरोधी छलाह।

ब्रह्मचारी एवं धर्मप्रचारक लोकनि कतहु भोजन क सकइत छलाह। ओ लोकनि जातीयताक बन्धनसँ मुक्त छलाह। शूद्र लोकनि भनसिया नियुक्त होइत छलाह आओर माछ-माँसक व्यवहार ब्राह्मण लोकनिक ओतए सेहो होइत छल। भोजन-भावमे आधुनिक कट्टरता ताहि दिनमे नहि छल। गैर-ब्राह्मण लोकनि सेहो सब किछु खाइत-पिबैत छलाह। छुआछूतक प्रधानता नहि रहितहुँ ई देखबामे अबैछ जे 'चाण्डाल' सँ सब केओ फराके रहइत छलाह आओर 'चाण्डाल' सब नगरक बाहर रहइत छल। 'चाण्डाल' केँ अछूत बूझल जाइत छल आओर ओकर नजरि ककरो भोजनपर पड़ि जाइत छल तँ ओहि भोजनक परित्याग कएल जाइत छल। बुद्धक संघक स्थापनाक पछाति बहुतो शूद्र आओर छोट वर्णक लोक सब ओहिमे सम्मिलित भेल छल।

वर्णाश्रमक प्रधानता बौद्ध युगमे रहल[२७]। एहि युगमे ब्रह्मचर्याश्रमक प्रधानता विशेष छल। विभिन्न आश्रमक महत्वपर एहि युगमे वेस वाद-विवाद चलि रहल छल। विवादक मुख्य प्रश्न इएह छल जे वाणप्रस्थ

(२७) देखू हमर लेख : Some aspects of Social history as gleaned through the Jaimini Grhyasutra जे बरौदाक Journal of the Oriental Institute मे छपल अछि।

आओर सन्यासमे कौन उत्तम ? ओना तँ एहि युगमे हम देखैत छी जे सन्यासक प्रवृति दिनानुदिन बढ़ि रहल छल। मार्कण्डेय पुराणमे एकटा कथा वर्णित अछि जाहिसँ ई ज्ञात होइछ जे वैशालीक बहुतो राजा-महाराजा लोकनि— खनित्र, मरुत, वरिष्यन्त आओर मंखदेव आदि—सन्यास ग्रहण कएने छलाह। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वाणप्रस्थ आओर सन्यास सम्बन्धी नियम एखनो पूर्णरूपेण स्थायी नहि भेल छल। बौधायन धर्मसूत्रमे तँ वाणप्रस्थ आओर सन्यासक प्रतिकूल वातावरण देखबामे अबइछ। किछु धर्मसूत्र सभमे गृहस्थाश्रमक अपेक्षा वाणप्रस्थक सराहना कएल गेल छैक मुदा इहो विचार ततेक संदिग्ध रूपें प्रकट भेल अछि जे ओहि सब आधार पर किछु निश्चित बात कहब असम्भव।

एहि युगमे सम्मिलित परिवारक चर्च सेहो भेटइत अछि। भिन्न-भिनाओजकेँ नीक नहि बुझल जाइत छलैक। कन्याक हेतु विवाहक निश्चित आयु १६ वर्ष छलैक आओर जाहि कन्याके भाइ इत्यादि नहि रहइत छलैक से अपन पैत्रिक धनक उत्तराधिकारिणी सेहो होइत छल। 'स्त्रीधन' सिद्धान्तक विकास एहि युगमे भए चुकल छल[२८]। सती प्रथाक उल्लेख सेहो ठाम-ठाम भेटइत अछि। वैशालीक राजागण खनित्र आओर वरिष्यन्तक पत्नी सती भेल रहथिन्ह। मादरी जे अपनाकेँ एहि सतीत्वमे अनने छलीह ताहूसँ सती प्रथाक दिशि संकेत होइत अछि। कहबी छैक जे महाभारतक युद्धमे सेहो बहुतो गोटे सती भेल छलीह।

वैशाली

वैशालीक लेल बौद्ध-युग स्वर्ण युगे छल। एहि कालमे वैशालीक महत्व विशेष छल। जाहि पुष्करिणीक उल्लेख हम उपर कए चुकल छी ताहिमे स्नान करबाक हेतु श्रावस्तीक सेनापति बन्धुलक स्त्री मल्लिका बड़ु

---

(२८) विशेष विवरणक हेतु देखू A. S. Altekar : *Position of woman in Hindu Civilisation*

स्थान छलैह (एकर उल्लेख जातकमे भेल अछि[२९])। वस्तुतः स्नान करबा लेल ओ दुहु के लए ओहिठाम गेलाह मुदा पहरा लोकनि हुनका दुहुकें नहि जाए देलथिन्ह आओर अन्तमे एहि लेल युद्ध भेल आओर ओ दुइ गोटए ओहिमे स्नान कए घुरइत गेलाह। एकर अतिरिक्त वैशालीमे आर अनेको दर्शनीय वस्तु छल— जेना उदेन चैत्य। गौतमक चैत्य, सत्तम्बक चैत्य, बहुपुत्रक चैत्य, सारदन्द चैत्य, चापाल चैत्य, कपिनह्य चैत्य, मर्कटह्रदतीर चैत्य आओर 'मुकुट बन्धन[३०] चैत्य' इत्यादि। एहिठाम महालि, महानाम, सिंह[३१] गोशृङ्गी आओर भद्र नामक प्रधान व्यक्ति भेल छलाह। वैशालीक आम्र-कानन जाहिमे अम्बपाली रहइत छलीह सेहो बड़ प्रसिद्ध छल। वैशालीक सामाजिक व्यवस्थाक विवरण बौद्ध ग्रन्थ सबमे भरल अछि। चुल्लवग्गमे लिच्छवी भद्र (भद्दू)क उल्लेख अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे एकरा हुनका बौद्ध संघसँ निष्कासित कए देल गेल छल मुदा पुनः हुनका संघमे लए लेल गेल। ओहि समयमे समाजसँ निष्कासित करबाक अथवा ओहिमे छल— जाहि सभ्यकें निष्कासित करबाक होन्हि तनिका भोजनार्थ निमंत्रण देल जाइत छल आओर आसन पर बैसला उत्तर हुनक जातक पात्रकें उलटि देल जाइत छल। पुनः जखन हुनका समाजमे लेल जाइत छलन्हि तखन ओहि पात्रकें सोझे राखल जाइत छलैक। जाहि समयमे तोमरदेव वैशालीक प्रधान छलाह ताहि कालमे ओतए एकटा भीषण महामारी भेल छल। ओहि कालमे जखन बुद्ध वैशाली आएल छलाह तखन लिच्छवी लोकनि साजगाज कए हुनक स्वागत कएने छलाह। केओ नील, केओ पीत, केओ श्वेत आओर लाल रंगक राजवस्त्र एवं आभूषण आर वेशभूषासँ सुसज्जित

---

(२९) द्रष्टव्य : जातक भाग० १।५८

> वेसालीनगरे गणराजकुलानाम् अभिषेकमंगलपोक्खरणिम् ।
> ओतरित्वा नहात्वा पानीयम् पातुकम् अहिस्सामीति ॥

(३०) द्रष्टव्य : हमर पोथी Bihar, the homeland of Buddhism.

(३१) देखू : राहुलजीक उपन्यास 'सिंह सेनापति'

भए भगवान बुद्धक स्वागतार्थ उपस्थित भेल छलाह। बौद्ध साहित्य आओर विशेष महावस्तुमे एकरा विस्तृत उल्लेख भेटइत[३२] अछि।

बौद्ध-धर्मक दृष्टिकोणसँ वैशाली विशेषरुपे महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। वैशालीमे ई निर्णय लेल गेल छल जे स्त्री लोकनिकेँ संघमे प्रवेशक अनुमति देल जाइन्हि आओर एतहि भिक्षुणी संघक स्थापना सेहो भेल छल। आनन्दक कहला पर बुद्ध एहि बातकेँ मानने छलाह आओर एहि पर अपन स्वीकृति दैत बौद्ध धर्मक सम्वन्धमे भविष्यवाणी सेहो कएने छलाह—'स्त्री जातिक प्रवेशसँ बौद्ध धर्म आब ५०० वर्ष धरि जीवित रहत'। वैशालीसँ जेबाक काल बुद्ध ई कहि गेल छलाह जे आब ओ पुनः घुरि क एतए नहि आबि सकताह। वैशालीक लोग सब ई सुनि बड्ड दुखी भेल छल[३३]। हुनका महापरिनिर्वाणक सए वर्ष पाछाँ वैशाली बौद्ध संघक दोसर संगति भेल छल। मिथिलाक माँटिक प्रभाव एहन जे एतहुका लोग सब बड्ड पैघ तार्किक होइत छलाह। नागार्जुनक शिष्य भिक्षुदेव जखन वैशाली जेबाक हेतु तैयार भेल छलाह तखन नागार्जुन कहने छलथिन्ह—'ओना अहाँ जाए चाहै छी तँ जाउ मुदा ई स्मरण राखब जे ओहि ठामक नवीनो भिक्षुक लोकनि बड्ड जबर्दस्त तार्किक होइत छथि'। अजातशत्रु वशालीकेँ जीति कए मगध साम्राज्यमे मिला लेने छल[३४]। जैन-ग्रन्थ सबसँ वैशालीक

(३२) *महावस्तु* : संत्यत्र लिच्छवयः पीतास्या पीतरथा पीतरश्मिप्रत्योदयष्टि।
पीतवस्त्रा, पीतालङ्कारा, पीतोष्णीशा, पीतछत्राः पीतखङ्ग मुनिपादुका।
पीतास्या पीतरथा पीतरश्मि प्रत्योदमुष्णीशा
पीता च पंचककुपा पीता वस्त्रा अलङ्कारा
नीलास्या, नीलरथा, नीलरश्मि प्रत्योद्मुष्णीशा
नीला च पंचककुपा नीला वस्त्रा अलंकाराः॥

(३३) इदं अपश्चिमं नाथ वैशाल्यास्तव दर्शनम्
न भूयो सुगतो बुद्धो वैशाली आगमिष्यति।

(३४) Lefmann द्वारा सम्पादित *ललित विस्तर* (Chapter III p. 21) मे वैशालीक विवरण एवं प्रकारे अछि—This great city is prosperous and proud, charming and delightful,

सामाजिक वर्गीकरणक ज्ञान प्राप्त होइत अछि। वैशालीमे क्षत्रिय, ब्राह्मण आओर वणिक् भिन्न-भिन्न उपनगरमे रहइत छलाह। एक अचेल कोर भट्टक नामक नागा सन्यासी सेहो ओतए रहइत छल।

सामाजिक जीवन

सामाजिक क्षेत्रोमे हुनका लोकनिक मध्य सहयोग एवं सहकारिताक भावना व्यापक छलन्हि। जे केओ अस्वस्थ्य भ जाइत छलाह अथवा हुनका लोकनिक ओतए जे कोनो उत्सव मनाओल जाइत छलन्हि तँ ओहिठाम सब केओ उपस्थित होइत छलाह। जे केओ विदेशी अतिथि अवइत छल थिन्ह तँ सब केओ सम्मलित रुपेँ हुनका स्वागत करबाक हेतु जाइत छलाह। ओ लोकनि सुन्दर वस्त्राभूषणसँ सुसज्जित रहइत[३५] छलाह। रंगीन वस्त्रसँ हुनका लोकनिकेँ बड्ड प्रेम छलन्हि। ओ लोकनि बड्ड कर्मठ होइत छलाह दालि, भात तरकारीक अतिरिक्त माछ-मांसक प्रचलन सेहो छल। अपना नगरसँ हुनका लोकनिकेँ बड्ड प्रेम छलन्हि। हीरा, जवाहरात आओर सोना-चानीसँ हुनका लोकनिक हाथी, घोड़ा आओरो सजल रहइत छलैन्हि। शिकार हुनका लोकनिकेँ बड्ड प्रिय छलन्हि। अंगुत्तर निकायमे लिखल अछि जे लिच्छवी बालक आओर युवक बड्ड नटखटिया होइत छलाह। ओ लोकनि स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी होइत छलाह[३६]। शिक्षा प्राप्त करबाक हेतु ओ लोकनि दूर-दूर प्रान्त तक जाइत छलाह। लिच्छवी लोकनिक ओतए विवाहक नियमावली कठोर छल[३७]। जाहि कन्याकेँ विवाह करबाक विचार

---

crowded with many people, adorned with building of every description, storied mansions, buildings with towers and palaces, noble gateways and charming with bud of flowers in her numerous gardens and groves आओर देखू K. Deva and V. K. Mishra : *Report on Vaisali excavation* ; Buddha Ghosh : *Sumangal-Vilasini* Vol. I p. 309.

(३५) महावस्तु भाग १ पृष्ठ २५९

(३६) ललितविस्तर I २१

(३७) cf. Rockhill : *Life of Buddha* p. 62

होन्हि से लिच्छवीगणकेँ सूचना दइत रहथिन्ह आओर गण हुनका लेल सुन्दर वर चूनि दइत रहथिन्ह। स्त्रीक सतीत्वक रक्षार्थं लिच्छवी लोकनि किछु उठा नहि रखइत छलाह। एहिमे राजा आओर रंकमे कोनो भेद कानूनमे नहि छल। मृतकक संबन्धमे सेहो हुनका लोकनिकेँ अपन नियम छलन्हि। ठाम-ठाम मुर्दा जरेबाक प्रथा छल आओर कतहु–कतहु गारबाक आओर केओ-केओ मुर्दाकेँ ओहिना छोड़ि दइत छलाह जकरा पशु इत्यादि खा जाइत छल। कतहु–कतहु मुर्दाकेँ गाछमे लटका देल जाइत छलैक[३८]। हुनका लोकनिक ओतए एकटा उत्सव होइत छल जकरा 'सब्बरत्तिवार' कहल जाइत छल जाहिमे ओ लोकनि भरि राति जागिके नाच गान करइत छलाह।[३९] एहीठाम वर्द्धमान महावीरक जन्म भेल छल।

मौर्य युग

सामाजिक दृष्टिकोणसँ मौर्ययुग समस्त भारतीय इतिहासमे महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। मौर्ययुगमे सर्वप्रथम समस्त भारतक एकीकरण भेल छल आओर एक छत्र राज्यक स्थापना सेहो। राज्यक स्वरुप मंगलकारी छल तेँ सामाजिक प्रगति हैब सम्भवो भेल। सांसारिकताक प्रति आस्था लोकमे बढ़लैक आओर प्रत्येक व्यक्ति जीवनकेँ सुखी भावेँ व्यतीत करबा लेल इच्छुक छल। साहित्यिक आओर अन्य साधन सबसँ ई ज्ञात होइत अछि जे मनुष्य सुगठित, स्वस्थ आओर बलवान होइत छलाह। वस्त्राभूषणक प्रति हुनका लोकनिक स्नेह विशेष रहैन्हि आओर खेल-कूद, नाच-गान, संगीतक वेस प्रचलन छल। मगधक राजधानी पाटलिपुत्र ताहि दिनमे संसारक सर्वश्रेष्ठ नगर छल आओर प्राचाम क्रीड़ाक केन्द्र सेहो। एहि क्रीड़ाक अन्तर्गत शाल-मंजिका आओर अशोक-पुष्प-प्रचायिका विशेषरुपेँ प्रचलित छल।

---

(३८) Beal : *Romantic Legends of Sākya Buddha* पृष्ठ १५९-६० आओर तुलना करू *Indian Antiquary* XXXII 234.

(३९) संयुक्त निकाय I पृष्ठ २०१-२ आओर देखू : *Psalms of Bretheren* पृष्ठ ६३

कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे आओर अशोकक शिलालेखमे उत्सव, समाज, आओर यात्राक उल्लेख भेल अछि जाहिमे आमोद-प्रमोदक व्यवस्था छल आओर सब केओ बड्ड उत्साहसँ भाग लैत छलाह।[४०]

कौटिल्य वर्णाश्रम धर्मक बड्ड पैघ समर्थक छलाह। एहि धर्मक समुचित पालन कराएब राजाक प्रधान कर्त्तव्य छल। मुदा अशोकक शासनकालमे वर्णाश्रम धर्म पर विशेष ध्यान नहि देल गेल कारण अशोक स्वयं बौद्ध धर्म ग्रहण कय चुकल छलाह आओर हुनका वर्णाश्रम धर्मक प्रति कोनो आस्था नहि रहि गेल छलन्हि। एहिठाम ई बात स्मरण राखबाक चाही जे चन्द्रगुप्त मौर्य स्वयं शूद्र छलाह आओर हिनके नेतृत्वमे सर्वप्रथम भारतक एकता फलीभूत भेल छल तैँ हमरा लोकनि एहि युगमे ई देखैत छी जे शूद्रक प्रति कौटिल्यक विचार उदार छन्हि। एहि युगमे वर्ण व्यवस्था तँ छलहे मुदा एहि वर्णक अन्तर्गत कतेको जाति उपजाति बढ़ि गेल। मनु त बहुतो विदेशी जाति सबकेँ सेहो क्षत्रियक श्रेणीमे रखने छथि[४१]। मिथिलाक लिच्छवी लोकनि सेहो मनुव्रात्य कहने छथि। व्रात्य केँ सेहो ओ चारि वर्णमे बँटने छथि— जेना व्रात्य ब्राह्मण, व्रात्य क्षत्रिय, व्रात्य वैश्य आओर व्रात्य शूद्र। मेगास्थनीज लिखने छथि जे ओहिठाम केओ गुलाम नहि छल।

एहि कालमे स्त्रीक अवस्थामे किछु परिवर्तन देखबामे अबैछ। कौटिल्य हुनका लोकनिकेँ सम्प्रति अर्जित करबाक आओर रखबाक अधिकार देने छथिन्ह। अपना जेवर पर खर्च करबाक अधिकार सेहो हुनका लोकनिकेँ छलन्हि। जँ कोनो व्यक्तिकेँ बेटा नहि रहैक तँ ओकरा बेटीके ओहि सम्पतिक स्वाधिकार भेटइत छलैक। स्त्रीक कल्याणक हेतु अशोकक शासन कालमे 'स्त्री-अध्यक्ष-महामात्र'क नियुक्ति भेल छल। गुलाम लोकनिक प्रति सेहो राज्यक विचार उदार छल। प्रत्येक गुलामकेँ अपन स्वतंत्रता प्राप्त करबाक अधिकार प्राप्त छलैक।

---

(४०) द्रष्टव्य : कौटिल्य अर्थशास्त्र II 25.

(४१) मनु १०।४३-४४ हिनका लोकनिकेँ हेय दृष्टिसँ बृहल् कहल गेल अछि।

मौर्योत्तरकालीन समाज

मौर्य साम्राज्यक पतनोत्तरकालीन भारतीय राजनीतिक इतिहास संदिग्ध अछि। मुदा मौर्योत्तर कालमे चारि वर्णक व्यवस्था बनल रहल। जाति आओर उपजातिक संख्यामे विशेष वृद्धि भेल। एहि चारू वर्णक लोक अपना-अपना वर्णक अभ्यन्तरेमे वैवाहिक संबन्ध इत्यादि स्थापित करइत छलाह। वाराहमिहिर अपन 'बृहत्संहिता'मे एहि बातक संकेत कएने छथि जे नगरमे एहि चारू वर्णक भिन्न-भिन्न क्षेत्र होइत छल। चीनी यात्रीक विवरणसँ ई ज्ञात होइत अछि जे ब्राह्मण लोकनि पूज्य छलाह। ओ लोकनि शुद्ध जीवन व्यतीत करइत छलाह। स्मृति-साहित्य सँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे समाजमे एहि युगमे ब्राह्मण लोकनिक प्रतिष्ठा विशेष छल। नारद लिखने छथि जे श्रोत्रिय लोकनिकेँ कर नहि लगबाक चाही। धर्मशास्त्र सभमे ब्राह्मण लोकनिकेँ आओर कतेक प्रकारक सुविधा प्राप्त भेल छन्हि। गुप्त युगमे ब्राह्मण लोकनिक वर्गीकरण वैदिक शाखाक अनुरुप भेल। पाछाँ आबि आओर वर्गीकरण भेल[४२]— मौर्योत्तरकालीन भारतमे क्षत्रिय लोकनिक प्रधानता बढ़ल छल। शासन आओर राज्यक भार हुनके लोकनिक हाथमे छलन्हि। ओ लोकनि विद्वान तँ होइतहिँ छलाह आओर ताहु पर विशेष रुपेँ ओ लोकनि युद्ध-विद्या, कला आओर संगीतमे सेहो पारंगत होइत छलाह। एकर विस्तृत विवरण समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्तिमे वर्णित अछि। जे केओ शासक वा राजा होइत छलाह हुनके क्षत्रियक संज्ञा भेटैत छलन्हि। गुप्त शासक लोकनि ओना तँ नीच वर्गक छलाह मुदा ओ लोकनि जखन शासक भेलाह तखन हुनके लोकनिकेँ क्षत्रिय बुझ लगलैन्ह। राजाक गुणक विवरण बाणक हर्ष-चरितमे सेहो भेटइत अछि। व्यापार आओर कृषिक विशेष भार वैश्य लोकनि पर छलन्हि। ई लोकनि दान आओर धर्मक प्रपत्ती होइत छलाह। स्थान-स्थान पर धर्मशाला, अस्पताल आओर सत्रक स्थापना ई लोकनि बड़ा प्रेम सँ करबइत छलाह। व्यापार आओर उद्योगक संचालनार्थ ई लोकनि अपना मध्य जे संगठन बनौने छलाह तकरा

(४२) एकर उल्लेख बिहारसँ प्राप्त कत्तेक अभिलेखोमे भेटइत अछि, तुलना करू R. K. Choudhary : *Select Inscription of Bihar*

श्रेणी अथवा गिल्ड कहल जाइत छल। मिथिलामे श्रेष्ठी आओर सार्थवाहक जे उल्लेख भेटइत अछि सेहो हिनके लोकनिक तत्वावधानमे बनइत छल। शूद्र लोकनिक स्थान चिन्तनीय छलन्हि। ओ लोकनि छोट-छीन रोजगारक संग खेती गृहस्थी सेहो करइत जाइत छलाह। हुनका लोकनिकेँ वेद पढ़वाक अधिकार सँ वंचित राखल गेल छल। बिना मन्त्रक ओ लोकनि अपन यज्ञादि करइत छलाह। मूल रुपेँ ओ लोकनि दू भागमे बटल छलाह— सत्-शूद्र आओर असत्-शूद्र। असत्-शूद्रकेँ अछूत कहल जाइत छलन्हि। अनुलोम आओर प्रतिलोम प्रथाक कारणे कतेको मिश्रित जाति समाजमे आबि चुकल छलाह। चाण्डाल लोकनि नगरसँ बाहर रहइत छलाह। मिथिलाक उत्तरी छोर पर किरात जातिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि।

विवाहादिक नियममे कोनो विशेष परिवर्तन एहि युगमे नहि भेल। अपन अपन जातिक अन्तर्गतहिमे विवाहादि होइत छल। अनुलोम प्रतिलोम विवाहक उल्लेख सेहो यदा कदा भेटिते अछि। अन्तर्जातीय विवाह सेहो होइत छल मुदा सामाजिक नियम से नहि छल। गुप्तकालीन साहित्य सबमे ठाम-ठाम गान्धर्व विवाहक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। एहि युगमे स्त्रीगणक स्थितिमे आओर अवनति भेल। हुनका लोकनिकेँ वेदक अध्ययनसँ वंचित राखल गेल। वेद मन्त्रोच्चारण ओ लोकनि नहि कए सकइत छलीह। किछु गोटे पढ़ल-लिखल होइत छलीह मुदा ओहन स्त्रीगणक संख्या महान समुद्रमे एक ठोप तेल जकाँ छल। किछु सम्पन्न परिवारक स्त्रीगण नृत्य-संगीतमे निपुण होइत छलीह। पर्दा प्रथा छल की नहि से कहब असम्भव यद्यपि कालिदास अपन रचना सबमे अप्रत्यक्ष रुपसँ घूँघट किंवा घोघक उल्लेख कएने छथि। वैशालीसँ जे चित्रादि प्राप्त भेल अछि ताहि आधार पर किछु कहब असम्भव। एहि युगमे विधवाक सम्बन्धमे स्मृतिकार लोकनि नियम आओर कठोर बना देलन्हि। शंख, अंगीरस आओर हारीत स्मृतिमे तँ एतेक धरि कहल गेल अछि जे विधवा लोकनिकेँ अपना पतिक चिता पर जरिकेँ प्राणान्त कए लेबाक चाही। सतीक उल्लेख केवल साहित्ये टा मे नहि वरन् तत्कालीन अभिलेखोमे

भेटइत अछि[४३]। वस्त्राभूषणमे लोग सब शौकीन होइत छलाह। रेशमी, सूती आओर ऊनी कपड़ाक विशेष प्रचलन छल। धोती, साड़ी, साया, दुपट्टा, अंगया, जनउ, बाला इत्यादिक व्यवहार होइत छल। मिथिला क्षेत्र सँ प्राप्त जे मूर्ति भेटल अछि ताहिसँ वेशभूषाक ज्ञान होइत अछि। लोक सब नाभीक नीचा सँ धोती पहिरैत छलाह आओर स्त्रीगण सभ साड़ी सेहो ओहिना। स्त्रीगण सब साड़ीक संगहि दुपट्टो ओढ़इत छलीह। टोपीक व्यवहार सेहो होइत छल—नौलागढ़ सँ जे एकटा माँटिक मुरुत भेटल अछि ताहि मे देखइत छी एक मनुख वेस सुन्दर मुरेठा बन्हने अछि—ई मुरुत गुप्तकालीन थीक। ओहूसँ पहिलुका आओर एकटा सुन्दर स्त्रीक माटिक मुरुत भेटल अछि जाहि मे केश-विन्यासक शैली आओर विशेषता देखबा मे अवइये। सौन्दर्य साधन एवं शृङ्गार प्रक्रियाक रुप रहि दुहु माटिक मुरुत सँ बढिया जकाँ ज्ञात होइत अछि आओर संगहि दू युगक-सौन्दर्य साधनक ज्ञान सेहो। स्त्रीक मुरुत शुंगकालीन थीक आओर मनुक्खक गुप्तकालीन।[४४] आओर बहुतो माटिक मुरुत मिथिला मे भेटल तत्कालीन वस्त्राभूषणक ज्ञान होइछ। वैशाली सँ अनेकानेक एहन मुरुत सब भेटल अछि। औंठी, कण्ठहार, कर्णफूल, बाला इत्यादिक व्यवहार होइत छल। ताहि दिन जे मिथिला मे स्त्रीगण लोकनि पाइत पहिरैत रहथि तकरो अन्यतम नमूना मिथिलाक मुरुत सब मे भेटइत अछि। सुगन्धित तेल आओर अन्यान्य सौन्दर्य साधनक व्यवहार सेहो ताहि दिन मे होइत छल। दाँत मे मिस्सी लगेबाक प्रथा सेहो छल आओर चीनी यात्री हियुएनसंग एकर उल्लेख कएने छथि।

गुप्तोत्तरकालीन मैथिल समाज (५५४-१०९७)

स्मृतिकार द्वारा वर्णित वर्णाश्रमधर्मक प्रधानता एहू युग मे रहल। एहि युग मे अनुलोम तथा प्रतिलोम सँ सेहो कतेक उपजाति अथवा वर्णक विकास

(४३) देखू D. C. Sircar : *Select Inscription* मे Eran Stone Pillar inscription.

(४४) देखू R. K. Choudhary : *G. D. College Bulletin Series Nos. 1-2*

भेल। असत् शूद्र अन्त्यज नामसँ पाँचम वर्ग मे परिगणित भेल। एहि युग मे पंच गौड़ ब्राह्मणक सूत्रपात भेल। ब्राह्मण लोकनि दोसरो वर्णक जीविका केँ अपनौलन्हि। यज्ञक संगहि संग ओ लोकनि मूर्ति-पूजा आओर पुरोहितहि सेहो शुरु केलन्हि। ब्राह्मण लोकनि सेनापतिक काज मे निपुण होमए लगलाह। पालवंशक अधीन बहुतो ब्राह्मण सेनापति रहथि जकर उल्लेख पाल अभिलेख मे भेटैत अछि।[४५] एहि युग मे ब्राह्मण लोकनिकेँ काफी मात्रा मे खेत दान मे भेटल छलन्हि जाहिसँ ई अनुमान लगाओल जा सकछ ओ जे लोकनि आब खेता मे निपुण भ गेल छलाह आओर स्वयं खेती करितो छलाह। क्षत्रियक स्थान आब राजपूत लए चुकल छलाह। ओहि युग मे विशेषतर राजा राजपूते छलाह। क्षत्रिय लोकनि सेहो विद्वान होइत छलाह। राजपूत सामाजिक दृष्टिकोणसँ ब्राह्मणक बराबरी मे आबि चुकल छल। क्षत्रिय लोकनि सेहो खेती करइत छलाह। ओहि कालमे ३६ क्षत्रिय उपजातिक उल्लेख भेटइत अछि। वैश्य लोकनि व्यापार मे अपूर्व उन्नति केलन्हि।

कायस्थ

कायस्थ लोकनिक वृहत्‌रुपमे एहि युगमे उल्लेख भेटइत[४६] अछि। उशनस आओर वेदव्यासक स्मृतिमे (१, १०–११) कायस्थक उल्लेख जातिक रुपमे भेल अछि।[४७]याज्ञवल्क्य स्मृतिमे सेहो कायस्थक उल्लेख भेल अछि। गुप्तकालीन अभिलेखमे सेहो 'प्रथम कायस्थ'क उल्लेख भेटइत अछि। गुणैगार ताम्रपत्रमे सैनिक मंत्री लोकनाथकँ 'कायस्थ' कहल गेल छन्हि। बंगाल-पूर्णियाक पुण्ड्रवर्धनभुक्तिमे कायस्थक प्रधानता आर 'दत्त' पदवीक उल्लेख भेटइत अछि। ५५०क पश्चात् कायस्थ लोकनि एक जातिक रूपमे समाजमे आबि गेलाह। चण्डेल अभिलेखमे कायस्थक इतिहास सुरक्षित अछि। डा० बी० पी० मजुमदार अपना पोथीमे लिखने छथि जे अभिलेख सभमे कायस्थक उल्लेख ११म शताब्दस प्रारम्भ होइत अछि[४८]।

---

(४५) देखू R. K. Choudhary : *Select inscriptions of Bihar*
(४६) P. V. Kane : *History of Dharmsāstras* II 75
(४७) *Indian Historical Quarterly* VI 55
(४८) B. P. Mazumdar : *Socio-economic History of Northern India* p. 98

हम उपर कहि चुकल छी जे ६–७म शताब्दसँ एहि जातिक उल्लेख शिलालेख सबमे भेटब प्रारम्भ भ जाइछ। एहि युगमे कायस्थ कतेको उपजाति बनि चुकल छल. ओना तँ 'करण' (जाहिसँ कायस्थक बोध होइत अछि) क उल्लेख अति प्राचीन साहित्यमे अछि आओर विभिन्न अभिलेखोमे 'करणिक' शब्द व्यवहृत अछि। मिथिलामे कर्णाट वंशक स्थापनाक संगहि संग मैथिल कर्ण कायस्थ लोकनिक प्रभुता बढ़लन्हि[४९]। मिथिलाक वैशाली क्षेत्र ११–१२म शताब्दक एकटा लेख प्राप्त भेल अछि जे करण-कायस्थक उल्लेख करइत अछि। ई लेख बुद्धक प्रतिमाक पादपीठ पर खोदल अछि। एहि मूर्त्तिक दान केनिहार करणिक महायान पंथी भक्त छलाह[५०]। दरभंगा जिलान्तर्गत खोजपुरमे दुर्गाक पादपीठ पर जे एकटा शिलालेख अछि ताहू पर मदनक पुत्र सूर्यकर (जे प्रायः हरसिंहदेवक मंत्री छलाह)क एकटा लेख भेटइत अछि[५१]। एहि पंक्तिक लेखकक पूर्वज लोकनि नान्यदेवक सङ्गहि मिथिला आएल छलाह आओर प्रारम्भसँ कर्णाट राज्यक अन्त धरि मंत्रित्व पदक भार ग्रहण कएने छलाह[५२]। पाँजिक आधार पर जे हमर पितामह एहि क्षेत्रमे काज कएने छलाह तकर आब किछुये अंश हमरा संगमे बाँचल अछि।

शूद्र

शूद्र लोकनिक अवस्था एहि युगमे आओर खसि पड़लन्हि। एहि युगसँ डोम, चमार, नट आदिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। भाटक उल्लेख

---

(४९) रासबिहारीदास : मिथिलादर्पण भाग २। हिनक विश्लेषण ओना तँ ठीक छन्हि मुदा एहूमे अशुद्धि एवं भ्रामक बातक भरमार अछि।

(५०) ... देयधर्मोऽयम् अवरमहायान यायिनः करणिकोच्छाहः
माणिक सुतस्य...

(५१) ई सूर्यकर संभवतः बलाइनवंशीय छलाह।

(५२) जँ केओ पाँजिक आधारपर मैथिलकर्णकायस्थक इतिहास लिखथि तँ एहिसँ मिथिलाक इतिहासक बहुतो गुत्थी सुलझि जाएत। पाँजि एहि दृष्टिकोणसँ बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।

सेहो भेटइत अछि। एहि युगमे जाति कर्म, नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध इत्यादि संस्कारक उल्लेख भेटइत अछि। विवाह संस्कारके बड्ड प्रधान मानल जाइत छल। बहु पत्नित्वक उदाहरण सेहो भेटइत अछि। ब्राह्मण अन्य जातिक भोजन वा जल नहि ग्रहण करइत छलाह। एहि युगमे प्रायश्चित क विधान सेहो बनल। माछ, माँस आओर मदिराक व्यवहार सेहो होइत छल। सिद्ध कवि लोकनिक लेख तँ एही सब बात सँ भरल अछि। चर्यापद (जे मैथिली थीक) मे एक ठाम लिखल अछि जे स्त्री लोकनि मदिरा बेचइत छलीह। क्षत्रिय लोकनि विशेष मदिरा पान करइत छलाह। पहिरब-ओढ़बमे कोनो विशेष फर्क देखबामे नहि अबइछ। मूर्ति सबसँ शृङ्गारिकताक भान होइछ। कर्णफूल, हार, भुजदण्ड, करधनी, कंगन, बाला आदि आभूषणमे व्यवहार होइत छल। कुमकुम लगेबाक प्रथा सेहो छल। सती प्रथाक प्रचलन सेहो छल। एक लेखमे दीपावलीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि—'दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पन्न प्रेक्षा मध्यमण्डपे'—। संगीत आओर नृत्यक आयोजन तँ हो ते छल। चर्यापादमे सतरंजक उल्लेख सेहो अछि। जूआ सेहो प्रचलित छल। एहि युगमे अन्धविश्वास आओर तन्त्र-मन्त्रक प्रधानता बढ़ि चुकल छल। ज्योतिष पर लोकक आस्था जमि चुकल छल। विजयसेनक देवपारा लेखमे ग्राम ललनाक नगर जीवनक अनभिज्ञता आओर अबोधपनक उल्लेख भेल अछि। जेँ कि मुसलमानक संग सम्पर्क बढ़ि रहल छल तेँ शुद्धिक सिद्धान्तक प्रतिपादन सेहो एहि युगमे भेल। बिहारमे पानक प्रचलन सेहो खूब छल। चौपड़ि खेल सेहो जनप्रिय छल।

शबरस्वामी द्वारा वर्णित मैथिलसमाज

एहि युगमे जे किछु मीमांसक लोकनि भेल छथि हुनको लेखादिसँ मिथिलाक सामाजिक इतिहास पर प्रकाश पड़ैत अछि। शबरस्वामी 'हूराहिरी'क उल्लेख कएने छथि (तस्माद वराहं गावोऽनु धावन्ती—शतपथ ब्राह्मण—४, ४।३।१९) – गम्हरी, दही, दूध, चूड़ा, आदिक उल्लेख सेहो हिनका रचना मे भेटइत अछि। दास आओर गुलामक उल्लेख सेहो ई कएने छथि। चिड़इखेबाक प्रथा अप्रत्यक्ष रूपसँ हुनका लेखनीसँ ज्ञात

होइछ[५३]। दही-भातक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। माछ खेबाक निपुणताक वर्णन मे एहने बुझि पड़इत अछि जेना शबरस्वामी नाचि उठल होथि।[५४] खीर बनेबाक उल्लेख सेहो ओ कएने छथि।

१०९७–१५००ई धरिक मिथिलाक समाज

ई युग मिथिलाक सामाजिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ बड्ड महत्वपूर्ण मानल गेल। ओना वर्णाश्रमधर्मपर आधारित समाज व्यवस्था तँ रहबे कएल मुदा एहि युगमे मिथिलाक इतिहास मे किछु विशेष परिवर्तन भेल। बौद्ध-धर्मक ह्रास भेलाक पाछाँ ब्राह्मण - व्यवस्थाक पुनर्स्थापन मिथिला मे भेल आओर जातीयताक व्यवस्थामे जे थोड़-बहुत लचड़ एहि बीचमे आबि गेल छल तकरा मैथिल निबन्धकार लोकनि अनेकानेक स्मृति-ग्रन्थ आदि लिखि कए ठोस बनौलन्हि[५५]। कुलीन-प्रथाक विकास मिथिलामे एहि युग मे भेल छल। सामाजिक कार्यकलापक हेतु बहुतो ग्रन्थ लिखल गेल। आओर एहि चण्डेश्वर रचित 'गृहस्थ - रत्नाकर'क सर्वश्रेष्ठ स्थान अछि। ओना तँ बंगाली लोकनि कहइत छथि जे कुलीन प्रथाक विकास सब प्रथम बंगालमे भेल छल आओर आसामी विद्वान लोकनि ओकरा आसाम प्रथा

(५३) शबरस्वामीक *भाष्य* II iii 1; III 1. 2; III 1. 13; V. III 26; IX. iv. 32

(५४) X. vii. 66–ये एकस्मिनकार्ये न विकल्पेन साधकाः श्रूयन्ते ते परस्परेण विरोधिनो भवन्ति……

लोकवन्—यथा मत्स्यान् न पयसा समश्नीयादिति। यद्यपि सगुणमत्स्या भवन्ति तथापि पयसा सह न समश्यन्ते।

(५५) ज्योतिरीश्वरक *वर्णनरत्नाकर* सामाजिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ बड्ड महत्वपूर्ण अछि। एहि ग्रन्थक विशेष अध्ययन एखनोधरि नहि भेल अछि।

मैथिलक वैशिष्ट्यक हेतु तुलना करू: Grierson: *Linguistic Survey of India* Vol. V Pt. II p 4

मानइत छथि[५६]। वास्तविकता तँ ई अछि जे एहि प्रथाक प्रणेता छलाह महाराज आदिशूर जनिका दरबार मे रहि कए वाचस्पति मिश्र 'न्यायकणिक' नामक ग्रन्थ लिखने छलाह[५७]। ई आदिशूर मिथिलाक शासक छलाह आओर ९म-शताब्द मे ई पूर्वी मिथिलामे राज्य करइत छलाह। ओना तँ ब्राह्मण लोकनिक प्रधानता मिथिलामे बहुत पूर्वहि सँ छल कियैक तँ मैथिल ब्राह्मण सम्प्रदायक उल्लेख सिलहटक क्षेत्र मे सेहो भेटइत छैक आओर छठम शताब्द मे निधनपुर ताम्रलेख मे सेहो एकर उल्लेख अछि। आदिशूर जखन मिथिलाक राजा छलाह तखन बौद्ध-धर्मक प्रभाव बढि रहल छल आओर तँ ओ किछु ब्राह्मण केँ कोलाञ्च सँ बजाय अपना ओतए रखलन्हि आओर कुलीन-प्रथाक सूत्रपात ओहि सँ भेल। कोलाञ्चक ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ बुझल जाइत छलाह तँ ओतय सँ ब्राह्मण लोकनि केँ बजाकेँ राखल जाइत छल। मिथिलासँ प्राप्त दू टा अभिलेख मे एहिबातक उल्लेख भेटइत अछि—बनगाँव सँ प्राप्त विग्रहपाल तृतीयक अभिलेख आओर पंचोभ सँ प्राप्त महामाण्डलिक संग्रामगुप्तक अभिलेख।[५८] आदिशूरक दरबार मे ब्राह्मण लोकनिक वर्गीकरण सम्पन्न भेल आओर पाछाँ बल्लालसेन अपना वंश केँ आदिशूरक वंश सँ मिलाकए अपना केँ कुलीन प्रथाक जन्मदाता घोषित कैलन्हि—स्मरण रखबाक आवश्यकता ई अछि जे हमरा लोकनिक ओतए

(५६) तुलना करू : N. N. Vasu : *Social History of Kāmrupa* Vol. II पृष्ठ १६८ श्रीभोलालालदास द्वारा देल उत्तर सेहो अध्ययन करबाक योग्य अछि।
मिथिलाक हेतु आओर देखू : Ramanāth Jha द्वारा सम्पादित *Hariharaśūkti-muktāwali* क भूमिका।

(५७) देखू : प्रथम मैथिली लेखकसंघक प्रथम वार्षिकोत्सव (दरभंगा १९५६) मे हमर अध्यक्षीय भाषण।

(५८) एहि दुहू शिलालेखक हेतु देखू हमर *Selected Inscription* विस्तृत विवरणक हेतु देखू परमेश्वरझाक *'मिथिलातत्वविमर्श'* आओर Upendra Thakur : *History of Mithila* पृष्ठ ३५६ सँ आओर S. N. Singh : History of Tirhut.

जे पाँजि अछि ताहि मे मूलगाँवक व्यवस्था अछि आओर इएह एक प्राचीनताक सबसँ पैघ प्रमाण भेल। ओना तँ कहल जाइत छैक जे १०० ई० मे मिथिला मे ई प्रथा परिपक्व भए चुकल छल मुदा एकरा लिपिबद्ध कए नियमानुसार चलेबाक श्रेय कर्णाटशासक हरसिंहदेव केँ छन्हि।

मध्ययुगीन मैथिल समाज केँ अपन शुद्धरक्तक गर्व छलैक आओर जखन आन-आन ठाम हिन्दू लोकनिक मान मर्दित होइत छलन्हि तखन मैथिल शासक लोकनिक अपन शुद्धत्वक गुण-गौरवसँ नहि अघाइत छलाह। कुलीन प्रथाक पंजीबद्ध करबाक श्रेय हरसिंहदेव केँ छन्हि। प्रत्येक मैथिल ब्राह्मण आओर मैथिल कायस्थक पंजीकरण भेल आओर ताहि दिन सँ अद्यावधि ई प्रथा एहि दुनू जाति मे चलि आबि रहल अछि। पाँजि रखनिहार लोकनि केँ पंजिकार कहल जाइत छलन्हि आओर विवाहादि पढ़ैबाक जे कार्य करइत छलाह से लोकनि घटक कहौलथि।[५९] ब्राह्मण लोकनिकेँ अपन गोत्र शाखा आओर प्रवर तँ अहुना छलैन्ह आब ओ लोकनि आओर उच्च-नीचमे बहि गेला। ब्राह्मण लोकनि मुख्य रुपेँ श्रोत्रिय, योग, पंजीबद्ध आओर जएबार चारि भाग मे बटलाह आओर कायस्थहुक मध्य भलमानुस आओर गृहस्थक व्यवस्था भेल। एहि व्यवस्थाक अनुसार विवाहक सम्बन्ध सेहो परिवर्तन होएब आवश्यक भेल आओर आब बिनु पंजिकारक सम्मति सँ कोनो विवाह नहि भए सकइत छल। कायस्थ लोकनिक सिद्धान्तक काज मे एखनो पंजीकार अधिकार जाँचलाक बाद 'अस्वजन-पत्र' दइत छथिन्ह आओर तखनहि सिद्धान्त सम्पन्न होइत छैक। ग्रियर्सनमहोदय एहि प्रथाक निपुणताँ देखि आश्चर्यचकित भए गेल छलाह आओर 'पाँजि' के मिथिलाक इतिहासक एक महत्वपूर्ण साधन कहने छलाह। ताहि दिनक समाज मे एकर जे कोनो महत्व रहल हो मुदा एकर प्रभाव नीक नहि पड़ल। विवाहादिक क्षेत्र सीमित तँ भइये गेल, संगहि संग, बिकौआक प्रथा सेहो प्रचलित भए गेल। सामाजिकना संकीर्णता दिनानुदिन बढइत चलल गेल। मैथिल विद्वानहि मे केओ एहि कुलीन-प्रथा केँ 'क्रान्तिकारी सुधार' कहलन्हि अछि तँ केओ एकर

(५९) तुलना करू *JBORS* XXXIII. 55 ; आर देखू J K. Mishra : *History of Maithili Literature* I. 27 : *JBORS* III 516 आओर देखू रमानाथझाक लिखल अलयीकुल प्रकाश।

दुर्गुणक वीभत्स चित्रण कएने छथि। हमरा विचारे दोसर मत सार्थका विशेष सामीप्य मे अछि[६०]।

क्षत्रियक रूपमे एहि युगमे राजपूत लोकनिक विकास भेलन्हि। कर्णाट-शासक लोकनि क्षत्रिय आओर राजपूतो कहवइत रहथि। कहल गेल अछि जे जखन हरसिंहदेव अपन पंजी-प्रथा चलौलन्हि तखन क्षत्रिय आओर राजपूतो लोकनि पाँजिकेँ अपनौलन्हि। मिथिलामे एहि कालमे गन्धवरिया राजपूतक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। ज्योतिरीश्वरक वर्णान रत्नाकरमे ३६ राजपूत वंशक उल्लेख अछि—जेना परमार चौहान, कछवाहा चण्डेल, वैसवार, सिसौदिया, गुहिलोट, भाट इत्यादि। ई लोकनि निश्चित रूपेँ बाहरसँ आएल छलाह। क्षत्रियक अपेक्षा एहि युगमे ब्राह्मण-कायस्थ लोकनिक महत्व विशेष छलन्हि। वैश्यमे व्यापारी वर्ग, कर्मकार, कलाकार, पशुपालक, खेतिहर आओर साहुकार लोकनिक गिनती छलन्हि। एहि युगमे वैश्य लोकनिक मुख्य व्यवसाय खेती रहि गेल छलन्हि ओना ई लोकनि व्यापार सेहो करइत छलाह। समाजमे हिनका लोकनिक स्थान बहुत उच्च नहि रहि गेल छलन्हि। धनीमानी रहितहुँ सामाजिक स्तरमे ई लोकनि नीचे गनल जाइत छलाह। आर्थिक उन्नतिक सब भार हिनके लोकनि पर छलन्हि। शूद्र लोकनिक स्थान तऽ दयनीय छल। तेली, सूरी, धांगर, यादव, धानुक, केओट, अमात आदि जातिक लोग शूद्रक श्रेणीमे अबइत छलाह आओर हिनका लोकनिकेँ कोनो विशेष सामाजिक अधिकार प्राप्त नहि छलन्हि। ई लोकनि विशेष कए बान्हल मजूर होइत छलाह आओर हिनका लोकनिक सब किछु मालिक पर निर्भर करइत छलन्हि। वर्णरत्नाकरमे एकर उल्लेख

---

(६०) रमानाथझाक *हरिहससूक्तिमुक्तावली* क भूमिकामे एकरा क्रान्तिकारी कहल गेल छैक। Dr. Upendra Thakur : *History of Mithila* पृष्ठ ३६२-६५ आओर देखू *Bihar through the Ages* पृष्ठ ४२५ 'Kulinism led to excessive orthodoxy and empty Formalism....created a barrier between man and man. Violation of the rules of caste involved social ostracism'. आओर देखू हमर *History of Bihar.*

तँ अछिए। विद्यापति सेहो अपन 'लिखनावली' मे हिनका लोकनिक दयनीय स्थितिक वर्णन कएने छथि[६१]। लिखनावलीमे जे पत्रादिक नमूना अछि ताहि सँ छोट जातिक सामाजिक अवस्थाक ज्ञान होइछ—स्वयं विद्यापति लिखने छथि :

उच्चैः कक्षमधः कक्षे समकक्षे नरं प्रति ।
नियमे व्यवहारे च लिख्यते लिखनक्रमः ॥

वर्णरत्नाकरमे दू प्रकारक छोट जातिक उल्लेख अछि—अनिर्वासित आओर निर्वासित। एकर अतिरिक्त ज्योतिरीश्वर 'मंद जातीय'क एक पैघ सूची प्रस्तुत कएने छथि जाहि सबसँ छोट जातिक सामाजिक अस्तित्वक पता चलइयै। गुलामीक प्रथा आओर वेगारीक प्रथा सेहो छल[६२]—स्त्रीक अवस्था तँ आओर दयनीय भ गेल छल। समाजमे स्त्रीकेँ कोनो उच्च स्थान प्राप्त नहि छलन्हि। एकर स्पष्टीकरण तँ ज्योतिरीश्वरक निम्नलिखित वाक्यहि सँ भए जाइत अछि (अ) स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लभ्य (आ) स्त्रीक चरण अइसन दारुण[६३] (वर्णरत्नाकर १७।५४)। विद्यापति सेहो स्त्रीके 'अलप गेआनी' कहने छथि। ई बात ठीक जे एहि युगमे लखिमा, धीरमति, विश्वासदेवी आओर चन्द्रकला सेहो भेल छलीह मुदा हिनका लोकनिक आधार पर ई नहि कहल जा सकैछ जे समस्त मिथिलामे स्त्रीक स्थान हिनके सब जकाँ छल। ओना तँ चैतन्यदेवक एक पत्नी सेहो मैथिलानी छलीह मुदा ई एहि सबकेँ अपवादे बुझबाक चाही। सती प्रथाक प्रचलन सेहो छल। चौठम (मुँगेर)क बाबूजितेन्द्रनारायणसिंहक ओहिठाम सँ हमरा जे एकटा कागत अकबरकालीन प्राप्त भेल अछि ताहि सँ एहि बातक पुष्टि होइत अछि। भवसिंहक दुहु पत्नी सेहो वाग्मतीक तट पर सती भेल

---

(६१) विशेष विवरणक हेतु हमरे अंग्रेजीमे लिखल अप्रकाशित *मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास* देखू।

(६२) तुलना करू 'सामन्तवाद' पर अंग्रेजी मे हमर लेख जे *Journal of Indian History* Vol. XXXVIII मे प्रकाशित भेल अछि।

(६३) *JBRS* XXXVI 183-91; XXXVII 121-23 डा० लक्ष्मणझाक लेख।

छलीह। स्त्री शिक्षा पर कोनो विशेष ध्यान नहि देल जाइत छल। पर्दा-प्रथाक प्रचलन मुसलमानक प्रकोपक फलस्वरुपे बढ़ि गेल छल। वेश्यावृतिक प्रचलन सेहो छल[६४]।

विवाहिता स्त्री लोकनि सिन्दुरक व्यवहार करइत छलीह आओर हुनका लोकनिकेँ सुहागिन कहल जाइत छलन्हि। पाटी फारबाक, काजर लगेबाक, तरहथ्थी रंगबाक आओर नह रंगबाक प्रथा स्त्रीगणक मध्य विशेष रुपेँ प्रचलित छल। पानसँ दाँत लाल कएल जाइत छल आओर मिस्सी लगेबाक प्रथा प्रचलित छल। ओ लोकनि तरह-तरहक आभूषण धारण करइत छलीह। गोदना पड़ेबाक उल्लेख सेहो लोकगीतादिमे भेटइत अछि। घोघ काढ़बाक प्रथा छल। धोती-साड़ीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। स्त्री लोकनि साया आओर चोली पहिरैत छलीह। कसीदा काढ़बामे मैथिल स्त्री निपुण होइत छलीह। अविवाहित बालिका लंहगा, घघरा आओर कंचुकी पहिरैत छलीह। दाउदक चन्दावानमे जे चन्दा आओर लोरिकक कथा अछि ताहुसँ तत्कालीन वेश-भूषाक ज्ञान होइत अछि। ओहि सँ ज्ञात होइछ जे ओहि कालमे कुण्डलक व्यवहार छल। भोज-भातक प्रथा छल। पनहीक व्यवहार होइत छल। चूड़ा-दहीक उल्लेख ज्योतिरीश्वर स्वयं 'पुन-र्भोजन वर्णना' कएने छलि।

चण्डेश्वरक कृत्य-रत्नाकर मे ओहि युगक पूजा-पाठ एवं उत्सवादिक वर्णन भेटइत अछि। गौरीपूजा, दुर्गाव्रत, दुर्गारथ, वारह द्वादशी, नरसिंह द्वादशी, बुद्ध द्वादशी, मत्स्य द्वादशी, रास कल्याण, महाष्टमी आदिक उल्लेख उपर्युक्त ग्रन्थ मे अछि। एकर अतिरिक्त उदकशैव महोत्सव, विनायक पूजा, भास्कर पूजा, सूर्य पूजा, आदिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। धर्मक अन्तर्गत एहि सबहक व्याख्या होएत। फगुआक उल्लेख सेहो भेल अछि। हिन्दू मुसलमानक संपर्क बढ़लासँ हिन्दू लोकनिक मध्य एक प्रकारक अस्त-

---

(६४) तुलना करू: वर्णरत्नाकर आओर धूर्तसमागम नाटक।

व्यस्तता आबि गेल छलन्हि। सेहो विद्यापति अपन कीर्तिलता मे[६५] एकर विस्तृत वर्णन कएने छथि।

आर्थिक अवस्था

प्रारम्भसँ १५०० धरि

प्रारम्भ सँ मौर्य युग धरि

मिथिलाक आर्थिक अवस्था अति प्राचीन काल सँ अद्यपर्यन्त कृषि पर आधारित रहल अछि। प्राचीन कालमे एखन जकाँ जलक अभाव नहि छल। एकर प्राकृतिक बनावट किछु एहेन अछि जाहि सँ एहिठाम कृषिक प्रगति नीक जकाँ होइत अछि। वैदिक कालमे खेत जोतबाक, बीआ पारबाक, कटनी आओर फसल तैयार करबाक उल्लेख विस्तृतरुप मे भेटइत अछि[६६]।

(६५) *कीर्तिलता* पल्लव ३-४ पृष्ठ ४४

धरि आनए बाभन बटुआ
मथा चढ़ाबए गाइक चुडुआ
फोट चाट जनेउ तोड़
उमर चढ़ाबय चाह घोड़
हिन्दु बोलि दुरहि निकार
छोटेओ तुरका भमकी मार
हिन्दुहि गोट्टओ गिलिए हल
तुरुक देखि होइ भान।

विद्यापतिक हेतु आओर देखू Dr. Subhadra Jha क द्वारा सम्पादित : *The Songs of Vidyapati* आओर म० म० डा० उमेशमिश्र द्वारा रचित *विद्यापति ठाकुर*।

(६६) तुलना करू : अहमदाबाद प्राच्यमहाविद्यासम्मेलन मे स्वीकृत हमर एक लेखक सारांश *Agriculture in the Vedic period* आओर देखू *शतपथ ब्राह्मण* १, ६।१।३

पकला उत्तर अन्न कें काटल जाइत छल आओर तखन ओकरा बोझ बान्हि कए खरिहान मे आनल जाइत छल, दाउन होइत छल तकर पश्चात् ओसौनी होइत छलैक आओर तखन ओकरा राखल जाइत छल। एहि लेल कृषक लोकनिके बड्ड परिश्रम करए पड़इत छलन्हि। नाप-तौलक आधार छल 'खाड़ी'। बखारीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। मिथिला मे चाउर, जौ, मूंग, मकइ, तिल, गहूम, आओर मसुरी उपजैत छल[६७]। जौक रोपनी शीतकाल मे होइत छल आओर कटैत छल गर्मीक मास मे। धानक रोपनी बरसात मे होइत छल आओर अगहन मे एकर कटनी होइत छल। अनावृष्टि सँ कृषिकेँ क्षति पहुँचैत छलैक। कीड़ा-मकोड़ा सँ सेहो फसिल बरबाद होइत छल। अन्हर, बिहाड़ि, बसात, अतिवृष्टि आओर अनावृष्टिक संगहि टिड्डीक प्रकोप सँ कृषि कें धक्का पहुँचइत छलैक। अनावृष्टि सँ अकालक सँभावना सेहो रहइत छलैक। जेँ कि जमीन पर किसान स्वत्वाधिकार नहि रहैत तैँ मालिक लोकनिक अत्याचार सँ किसान समय-समय पर तबाह होइत छलाह। कृषकक समूह विशाल होइतहुँ हुनका लोकनिक कोनो विशेषाधिकार नहि छलन्हि आओर ओ लोकनि विशेषकर अपन मासिक कर्जो पर रहइत छलाह। बौद्ध-युग मे सेहो कृषि क्षेत्रक इएह स्थिति छल।

कृषि मनुष्यक मुख्य काज छल। विशेष कए लोक सब गाममे रहैत छलाह। गाँवमे ३०–४० सँ लऽ १००० तक परिवार रहइत छल। गामक समीप गाछी–बिरछी सेहो छल। जातकमे 'ग्राम–भोज'क शब्दक उल्लेख सेहो भेटइत अछि जकर अर्थं ग्रामक अध्यक्ष कएल गेल अछि। गाममे ई सर्वश्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण पद' छल। राजाक हेतु-कर वसूल करब, कृषि व्यवस्थाक निरीक्षण करब, ग्रामीण झगड़ा–झंझटकेँ फरिछैब—'ग्राम भोज'क मुख्य कर्तव्य छल[६८]। जँ उपजा नहि होइत छल तँ ग्रामीण लोकनिक भोजनक

---

(६७) वाजसेनयीसंहिता १८

(६८) विशिष्ट विवरणक हेतु देखू *जातक* नं० ७६, १३९; Rhys Davids *Buddhist India* Chapter III; *G. D. College Bulletin Series No. 4* मे डा० रामशरण शर्माक लेख।

व्यवस्था हिनके करए पड़इत छलन्हि। उपजिनिहार खेतमे पहरुदार सेहो राखल जाइत छल। उत्पादनक साधन मूलरूपेँ धनी लोकनिक हाथमे छल तेँ साधारण कृषकक स्थिति दयनीय रहइत छलैन्हि। जँ कोनो कारणेँ अन्न नहि उपजल तँ हिनका लोकनिकेँ कष्टक सामना करए पड़इत छलन्हि। अकाल पड़बाक उल्लेख सेहो प्राचीन साहित्यमे भेटइत अछि। महावस्तुमे एहि बातक स्पष्ट उल्लेख अछि जे एक बेर वैशालीमे भीषण अकाल पड़ल छल। भूखसँ पीड़ित भए असंख्य लोक मुइल छल आओर मुर्दाक गन्धसँ समस्त नगरक वातावरण दुर्गन्धपूर्ण भए गेल छल[६९]। एहि युगमे बाढ़िक प्रकोपक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। गण्डक सँ पूर्वक क्षेत्रमे जलक बाहुल्य रहइत छल आओर मौर्यकालीन अभिलेखमे सेहो अकालक उल्लेख पाओल जाइछ। मिथिलाक अन्तर्गत, विदेह, वैशाली, चम्पारण्य, अंगुतराय, पुण्ड्र आदि स्थान सब कृषिक हेतु प्रसिद्ध छल आओर एहि समस्त प्रदेशकेँ अन्नक भण्डार कहल जाइत छल। वैशालीक पूब दिश जे अंगुतराय जनपद छल ताहिमे बुद्ध गेल छलाह आओर जनपदक आपण गाममे ओ रहल छलाह। आपण गाम सुखी–सम्पन्न छल। खेती करबाक हेतु खेतकेँ छोट–छोट टुकड़ीमे बाँटल जाइत छल आओर खेतक बीच सबमे आड़ि सेहो होइत छल। ई प्रथा अद्यपर्यन्त मिथिलामे देखल जाइत अछि। पैघ–पैघ जमीन्दारक वर्णन सेहो तत्कालीन साहित्यमे सुरक्षित अछि।

उद्योग व्यापार आओर वाणिज्य

छोट-मोट उद्योग धन्धाक व्यवस्था छल। व्यापारी लोकनि वणिक् कहबइत छलाह। जातक कथा सभमे वर्णित कथासँ ई ज्ञात होइत अछि जे विदेहक निवासी वंगाल होइत समुद्रक मार्गसँ विदेश जाए व्यापार करइत छलाह। एहि हेतु ओ लोकनि अपन नाव जहाज सेहो बनवइत छलाह। ऐतरेय ब्राह्मणमे एकर उल्लेख भेल अछि—'यो वै संवत्सरस्य अबार च पार च वद' (१७।७-८)। विदेहमे बाहरोसँ व्यापारी लोकनि अबइत

---

(६९) तुलना करू : पाली टेक्स्ट्स सोसायटीसँ प्रकाशित *Psalm of Bretheren* ; थेरीगाथा 5/55 आओर ओकर टीका सेहो।

छलाह। अपन चीज विक्रय करबाक हेतु श्रावस्तीक व्यापारी वैशाली आओर विदेह अबइत छलाह[७०]। सामुद्रिक व्यापारकेँ ई लोकनि बड्ड महत्व दइत छलाह। ढोल बाजा बनेबाक आओर अन्यान्य छोट मोट उद्योगमे सेहो ई लोकनि बड्ड निपुण छलाह। गुलामक व्यापार सेहो होइत छल। समुद्रक व्यापारीकेँ 'समुद्र वाणक' कहल जाइत छलन्हि। समुद्रमे चलए बाला जहाजकेँ 'वाहनम्' कहल जाइत छलैक। वैशाली आओर विदेह मुख्य व्यापारक मार्ग पर छल। तक्षशिलासँ विदेह धरि सड़क छल। महापरिनिर्व्वाण सुत सँ ई ज्ञात होइत अछि जे राजगृह, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र, वैशाली, कुशीनगर, कपिलवस्तु, श्रावस्ती आओर मिथिलाक बीच आवागमनक मार्ग छल[७१]। काश्मीर सँ होइत गान्धार धरि मिथिला सँ सोझे एक सड़क अबैत छल, जकरा मिथिला सँ उज्जैन, वनारस, चम्पा, ताम्रलिप्ति, कपिलवस्तु, इन्द्रप्रस्थ, शाकल, कुशीवती, पाटलिपुत्र आदि स्थानक सड़कसँ सम्बन्ध छल। मैथिल लोकनि दच्छिनी चीनमे अपन एक सांस्कृतिक उपनिवेश सेहो बसौने छलाह आओर ओतए किछु स्थानक नाम विदेह आओर मिथिला सेहो रखने छलाह।

व्यापारक संचालनक हेतु व्यापारी लोकनि अपन 'श्रेणी' आओर 'संघ' बनवइत छलाह। किछु गोटए एकरा 'गण'क संज्ञा दइत छथि। वैदिक साहित्यमे 'श्रेष्ठी' शब्दक उल्लेख भेल अछि[७२]। ऋग्वेदमे व्यापारी लोकनिके 'पणि' कहल गेल अछि। रामायणमे 'नैगम' शब्दक उल्लेख भेल अछि आओर महाभारतमे सेहो व्यापारी संघक अप्रत्यक्ष रुप सँ उल्लेख भेटइत अछि[७३]। उपनिषद्‌मे 'श्रेष्ठिन' शब्दसँ एही भावक बोध होइत

---

(७०) B. C. Law : *Kshatriya tribes* १२९-३०.

(७१) विशेष विवरणक हेतु देखू डा० मोतीचन्दक '*सार्थवाह*' जे बिहार राष्ट्र-भाषा परिषद् पटना सँ प्रकाशित भेल अछि।

(७२) देखू ऐ० ब्रा० ३।३०।३ ; ४।२५।८-९ ; ७।१८।८—बृ० उ० १।३।१२ ; कौसतिकी उ० २८।६ ; गौतम १०।४९ ; ११।२१

(७३) *JBORS* 1922 p. 36

अछि। मनु आओर पाणिनिमे सेहो श्रेणी शब्दक उल्लेख अछि[७४]। बौद्ध साहित्य तँ श्रेणीक उल्लेख सँ भरपूर अछि। लोहार, सोनार, कुम्हार, तेली, व्यापारी, मछुआ इत्यादि लोकनिक अपन-अपन अलग श्रेणी रहैन्हि। हुनका लोकनिक अपन नियम कानून सेहो भिन्ने होइत छलन्हि जे ओ लोकनि मिलि कए बनबइत छलाह। हिनका लोकनिक मध्य जँ कोनो मतभेद होइत छल तँ ओकरो निवटारा एहि संघहि द्वारा होइत छल। संघ श्रेणीक प्रधान लोकनिकेँ राजदरबारमे समादर होइत रहैन्हि आओर कानून इत्यादि बनेबाकाल हुनका लोकनिक राय लेल जाइत छल। धनी लोकनि अपना धनकेँ गाड़िकेँ रखइत छलाह आओर सूद पर टाका पैसा सेहो लगबइत छलाह। युद्धकालीन अस्त्र-शस्त्र सेहो बनइत छल आओर कहल जाइत अछि जे लिच्छवीक विरुद्ध युद्ध ठनबा कालमे अजातशत्रु 'रथ मूसल' आओर 'महाशील कन्या' व्यवहारमे अनने छलाह। लिच्छवी लोकनिक राज्यमे कुंकुम आओर सुगन्धित द्रव्य पाओल जाइत छल। कताइ-बुनाइ सेहो प्रचलित छल। कमार लोकनि लकड़ी पर तरह-तरहक कलाकारी करइत छलाह आओर पाथर धातु इत्यादिक माला सेहो बनबइत छल। माटिक सौन्दर्यपूर्ण बासन आदि बनइत छल आओर ओहि पर तरह-तरहक कलाकृति सेहो होइत छल। एकरे अंग्रेजीमे 'नार्दन ब्लैक पालिस्ड वेयर' कहल गेल छैक आओर मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे सँ ई ई प्रचुर मात्रामे भेटल अछि। व्यापार-संचालनक हेतु बाटमे ठामठाम स्थल-नियामक लोकनि रहइत छलाह।

कर-व्यवस्था

टाका-पैसाक व्यवहार होइत छल कि नहि से तँ कहब कठिन मुदा वैदिक साहित्य मे हिरण्य, अयस, श्याम, लोह, शीश, त्रपु आओर कार्षापण आदिक उल्लेख अछि। चीनीक टाकाकेँ 'निष्क' कहल जाइत छल। सिक्का केँ कृष्णल, सतमान, हिरण्य पिण्ड आओर कार्षापण सेहो कहल जाइत

(७४) देखू Fick : *The social organisation in North-Eastern India* p. 266

छल[७५]। कतहु-कतहु सिक्का केँ पाद सेहो कहल जाइत छलैक। राजा जनक अपन यज्ञ मे प्रत्येक गाय पर दश पाद लगौने छलाह। ओही मे प्रत्येक ब्राह्मण केँ तीन सतमान सेहो देल गेल छलैन्ह। बौद्ध युग मे सिक्काक प्रचलन भेल छल आओर बौद्ध साहित्य मे मासक अर्धमासक, पाद अद्पाद कटापन इत्यादिक वर्णन अछि। चीनी आओर तामाक पंचमार्क्ड मुद्रा मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र सँ प्राप्त भेल अछि—हाजीपुर, चम्पारण, वैशाली, असुरगढ़, गोरहोघाट, पटुआहा, बहेड़ा, जयमंगलागढ़, पुर्णिया, बलिराजगढ़ आदि स्थानसँ घैलक-घैल ई सिक्का प्राप्त भेल अछि। बौद्धकालमे सिक्काक प्रचलन पूर्णरुपेण भए चुकल छल[७६]। लोककेँ राजाकेँ किछु कर सेहो देमए पड़इत रहैन्हि। जातक कथा मे वस्तुक दाम 'पण' क माध्यम देल गेल अछि तेँ ई बुझि पड़इत अछि जे सिक्काकेँ 'पण' सेहो कहल जाइत छलैक। साधारणतः सिक्काक तीन नाप छल–४० रत्ती, ३२ रत्ती आओर २४ रत्ती। पंचमार्क्ड सिक्कापर तरह-तरहक चित्रांकन सेहो अछि। भण्डारकर लिखने छथि जे बुद्ध आओर जनककालीन मिथिलामे पाद कर व्यवहार विशेष प्रचलित छल। पाद १०० रत्तीक चौथाइ भाग होइत छल[७७]।

मौर्ययुगसँ गुप्त युग धरि

ई० ३२० ई० सँ ५५० धरि

मौर्ययुगकेँ मंगलकारी राज्य कहल गेल अछि आओर एहि युगमे जनताक सर्वांगीन आर्थिक जीवनक नियंत्रण राज्यक माध्यमसँ होइत छल। खान आओर अन्य युगक पदार्थ पर राज्यक एकाधिपत्य छल। राज्यक जमीन आओर कृषिकार्यक निरीक्षणक हेतु अधीक्षक नियुक्त होइत छलाह। राज्यक एहि सर्वांगीन एवं व्यापक रूपक विशद् विश्लेषण कौटिल्यक अर्थशास्त्र मे भेटइत अछि। राज्यक प्रत्येक विभागक हेतु भिन्न-भिन्न अधीक्षक

(७५) उपर्युक्त वैदिक साहित्यक अतिरिक्त Bhandarkar क *Lectures on Ancient Indian Numismatics* देखू।
(७६) देखू Cunningham : *Coins of Ancient India*
(७७) देखू भण्डारकरक उपर्युक्त पोथी पृ० ८०

छलाह। राज्यक दिसि सँ कृषि के विशेष महत्व देल जाइत छलैक आओर ई स्वाभाविको छल। बंजर जमीन सभ मे खेती करबाक हेतु शूद्र लोकनि कें बसाओल जाइत छल। पुरोहित आओर विद्वान ब्राह्मण लोकनिकें दान मे जमीन भेटइत छलन्हि। मनुक्खक संगहि-संग जानवरोक उचित रक्षा होइत छल। सिंचाइक व्यवस्था राज्येक दिशि सँ होइत छल। प्राकृतिक उपद्रव सँ बचवाक हेतु राज्यक दिसि सँ सब प्रबन्ध होइत छल। ग्राम मे सहयोग समितिक व्यवस्था सेहो छल आओर जे लोकनि एहि मे सम्मिलित नहि होइत छलाह हुनका दण्डित कएल जाइत छल। उद्योग, व्यापार आओर वाणिज्य सेहो प्रगतिक पथ पर छल। प्रशस्त राजमार्गक व्यवस्था सँ व्यापारक प्रगति मे साहाय्य होइत छल। बांजारमे निर्धारित मूल्य पर सब वस्तुक विक्री होइत छल आओर मूल्य नियंत्रणक सिद्धान्त प्रतिपादन आइ सँ २३०० वर्ष पूर्व कौटिल्य कएने छलाह। निर्धारित मूल्य सँ विशेष दाम मंगनिहार व्यापारी दण्डक भागी होइत छल। जे केओ राज्यकें कर देबा मे असमर्थ छलाह हुनका ओहि बदला मे बेगारी (विष्टि) करए पड़इत छलन्हि[७८]। व्यापारी कें पूर्ण मात्रा मे कर देमए पड़इत छलैक।

गुप्त युग धरि एहि मे कोनो विशेष परिवर्तन नहि देखल जाइछ। कृषि, उद्योग आओर व्यापारक प्रगति सेहो एहि युग मे होइत रहल। फाहियान आओर हुयेन सांग सेहो एकर पूर्ण विवरण देने छथि। वैशालीसँ प्राप्त मुद्रा सँ एहि युगक आर्थिक जीवनक ज्ञान प्राप्त होइछ। वैशाली व्यापारी आओर अन्य वर्गक आन संघ आओर श्रेणी छलन्हि आओर ओतेकक व्यवस्था सेहो छल। डा० स्पुनर सेहो एहि बातक उल्लेख[७९] कएने छथि। ओहिठाम बहुत मुद्रा पर 'श्रेष्ठी निगमस्य' सेहो उल्लिखित अछि। वहुतो गोटेक नाम सेहो ओहि मुद्रा सभसँ भेटइत अछि—जेना हरि, उमाभट्टा

---

(७८) देखू हमरे पोथी : *A short study in Kautilya's Arthaśāstra*

(७९) देखू *Archæological Survey Report* 1913-4 : 'Banking was evidently as prominent in Vaisali as we should have expected it to be....'

नागसिंह, सालिभद्र, धनहरि:, उमापालित, वर्ग, उग्रसेन, कृष्णदत्त, सुखित, नागदत्त, गोण्ड, नन्द, वर्म्म, गौरिदास—ई सभ केओ 'कुलिक' छलाह। सार्थवाहमे डोड्डुक क नाम आओर श्रेष्ठीमे षष्ठिदत आओर श्रीदासक नामक उल्लेख[८०] अछि। एहने एक मुद्रा बेगूसरायसँ प्राप्त भेल अछि जाहिमे 'सुहमाकस्य' लिखल अछि[८१]। फाहियान आओर हुएनसंगक यात्राक विवरण सँ ई प्रत्यक्ष होइछ जे तिरहुतक आर्थिक अवस्था ओहि युगमे वेजाए नहि छल। एहिठाम ई स्मरण राखब जे जँ समृद्ध वैशाली राज्यक साहाय्य गुप्त लोकनिकेँ नहि भेटतन्हि तँ गुप्त साम्राज्यक स्थापना ओतेक सुलभ नहि होइत। गुप्तकालमे वैशाली व्यापारी आओर सम्पत्तिधारीक केन्द्र छल। एहि युगमे मैथिल लोकनि अपन आश्चर्यकारी साहसिक भावनाक परिचय देने छलाह।

५५०–१५०० ई० धरिक इतिहास

मिथिला तँ अति प्राचीन काल सँ कृषि-प्रधान देश रहल अछि। जनताक विशिष्ट समूह सब दिन सँ गामेमे रहइत आएल अछि आओर कृषि ओकर प्रधान आजीविका रहल छैक। जे कि एहि युगमे सामन्तवादी प्रथाक विकास भए चुकल छल[८२] तेँ लोककेँ जमीन्दारी-प्रथाक अनुभव होमए लागल छलैन्हि। जमीनक अनुसारे आब करमे कमी–वेसी होमए लागल। जाहिठाम सिचाइक व्यवस्था रहइत छल ताहिठाम कर वेसी लगइत छलैक। आओर वंजर जमीनक कम। गामक प्रधानता विशेष छल। हुयेनसंग लिखने छथि जे एहिठामक किसान लोकनि परिश्रमी होइत छलाह आओर बहुत अन्न उपजबैत छलाह। जमीन मूल रुपसँ तीन भागमे बाँटल जाइत छल—गोचर, बंजर आओर उपजाउ। गोचर भूमिमे भिन्न-भिन्न प्रकारक घास उपजैत छल[८३]। हाटक व्यवस्था सेहो प्रारम्भ भए गेल छल—

(८०) *Archaeological Survey Report* 1903-4 ; तुलना करू : चन्द्रगुप्त द्वितीयक *Gadhwa Stone Inscription.* (८१) देखू परिशिष्ट।
(८२) देखू हमर लेख Feudalism—उल्लेख पूर्वहि कए चुकल छी।
(८३) R. C. Majumdar द्वारा सम्पादित *History of Bengal* Vol. I पृष्ठ ६४३

हाटक निरीक्षणक हेतु 'हट्टपति' नामक एकटा कर्मचारी सेहो होइत छल। ब्राह्मण आओर श्रोत्रियकेँ कर रहित भूमि दानमे भेटइत छलन्हि। जमीन, एहि युगमे, छोट-छोट टुकड़ामे बँटि चुकल छल। भूमि नपबाक प्रणाली प्रचलित भए चुकल छल। गुप्त-युगमे एकरा कुल्यावल कहल जाइत छल। अन्न नापबाक प्रणाली सेहो प्रचलित भए चुकल छल आओर एकर नाम 'द्रोण' छलैक। खेतीवारी हरसँ होइत छल।

एहि युगमे व्यापारक प्रगति सेहो पर्याप्त भेल छल। ओना तँ कन्नौज एहि युगमे प्रधान नगर छल मुदा छोट-छीन व्यापार हमरो सब दिसि होइत छल आओर एमहुरका बहुत किछु वस्तु-जात विक्रीक हेतु बाहरो जाइत छल। काशी बहुतो गोटए एहि युगमे मिथिलासँ जाइत छलाह आओर ओहू सँ हुनका लोकनिक सम्पर्क बढ़ितहि रहैन्हि। सिक्काक रुपमे कौड़ीक प्रचलन सेहो छल। एहि युगमे व्यापारी लोकनिक अपन संघ छलन्हि। लहना तगादाक व्यवसाय वेस बढ़ल-चढ़ल छल। सूदक दर ९ प्रतिशत सँ १२ प्रतिशत धरि छल। भोजन वस्त्रक सामग्री एकठाँ सँ दोसर ठाँ पठाओल जाइत छल। माँटिक वर्तन बनाएब एक विशिष्ट उद्योग छल। कतेको शिला-लेखमे एकर उल्लेख भेटइत अछि। आभूषण बनाएब एक प्रमुख पेशा छल। सामान नाव आओर बैलगाड़ी पर एक स्थान सँ दोसर स्थानमे पठाओल जाइत छल। एक शिलालेखमे बड्ड सुन्दर बातक उल्लेख अछि जकरा हम प्रस्तुत कए रहल छी—चहमान वंशक एक शिलालेखमे कहल गेल छैक जे बैलगाड़ी पर जे वस्तु पठाओल जाइत छल ताहि पर चूँगी कर लगइत छलैक[८४]। एक बैलगाड़ी पर बीस बोझसँ वेसी सामान लदलासँ ओहि पर दू टाका शुल्क लगइत छल। किरानाबाला बैलगाड़ी पर एक टाका शुल्क लगइत छल। कथा-सरित्सागरसँ ज्ञात होइछ जे काशीक चारुकात रस्ताक जाल विछाओल छल। पुण्ड्रवर्द्धनसँ पाटलिपुत्र धरि मिथिला होइत जे बाट छल ताहि बाटे व्यापारी लोकनि अबइत जाइत छलाह। मिथिलाक विदेशी

(८४) देखू *Epigraphia Indica* Vol. XI पृ० ३७ मार्गे गच्छतानामा-गतानां वृषभानां शेकेषु।

व्यापार एहि युगमे छल कि नहि से कहब असम्भव। गुप्त-युग जकाँ सिक्काक प्रचलनक संगहि कौड़ीक प्रचलन सेहो बनल रहल।

वर्णनरत्नाकर-कालीन मिथिलाक आर्थिक जीवन

एहि युगक आर्थिक स्थितिक विवरण ज्योतिरीश्वर रचित 'वर्णनरत्नाकर' मे भेटइत अछि। ओहि ग्रन्थसँ ई प्रतीत होइछ जे मिथिलाक ग्रामीण स्वरुप प्राञ्जल भए उठल छल। चाऊर, जौ, विभिन्न प्रकारक दालि, बाजरा, मटर, तेलहन, कुसियार, रूइ, पिआज, लहसुन, दाना इत्यादिक पैदाइश मिथिलामे होइत छल। चूड़ा आओर चाउरक भूजाक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। सोआ, मेथी, मंगरैल आओर सोंफक खेती सेहो होइत छल। अनाज रखबा लेल बखारीक व्यवस्था छल। आम, खजूर, केरा, नेमो, नारंगी, अनार, अंजीर, जामून, कटहर, सपात आदि फलक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। मिथिलाक प्रत्येक घरमे केराक गाछ रहइत छल। चूड़ा-दही खेबाक प्रथा छल। चीनी आओर गुड़क प्राचुर्य्य छल। मधु एहिठामसँ नेपाल धरि जाइत छल। ताड़ी दारू सेहो बनइत छल। महुआक दारू बड्ड प्रचलित छल। पानक बड़का व्यवसाय मिथिलामे होइत छल आओर पान लगेबाक विधि पर ज्योतिरीश्वर तऽ विभिन्न प्रकारक विधानो कहनो छथि। पान लगाएब एक कला बुझल जाइत छल। ओहिमे तरह-तरहक मसाला पड़इत छलैक। ओ सब मसाला देशक विभिन्न भागसँ मंगाओल जाइत छल। ३० प्रकारक वस्त्रक वर्णन ज्योतिरीश्वर स्वयं कएने छथि। दामी वस्त्रक अंगपोछा बनइत छल। रंगरेजी आओर मुसहरीक उल्लेख सेहो एहि ग्रन्थमे भेटइत अछि। विभिन्न प्रकारक धातुसँ अनेकानेक प्रकारक वर्तन-वासन बनइत छल। वर्णनरत्नाकरमे अष्टधातुक उल्लेख सेहो भेल अछि। लोहा आओर अन्यान्य धातु गलेबाक कलामे मैथिल निपुण छलाह। एहिठामक लोहार लोहा गलाके हऽर, खुरपी, कैंची, चक्कू आदि बनबइत छलाह। खपरैल घरक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। कमार लोकनि काठक अनेको वस्तु बनबइत छलाह। मिथिला दूध आओर दहीक हेतु तँ प्रसिद्ध छल। ज्योतिरीश्वर ३६ प्रकारक शस्त्राशस्त्रक उल्लेख कएने छथि। देह मालिस

कएनिहारकेँ मरदनियाँ कहल जाइत छलैक। वर्णनरत्नाकरसँ ई ज्ञात होइछ जे मैथिल लोकनि तंजोर, सिलहट, अजमेर, काँची, चोलप्रदेश, कामरुप, बंगाल, गुजरात, काठियावाड़, तेलंगाना, आदि स्थान सभसँ अपन वस्त्र मंगवैत छलाह। ओहि प्रसिद्ध ग्रन्थमे श्रीखण्ड, मलय आओर सूरतक उल्लेख सेहो भेल अछि। नाओ बनेबामे मैथिल लोकनि बड्ड सिद्धहस्त छलाह आओर एकर विवरण तिब्बती यात्री, धर्मस्वामी[८५], अपन यात्रा वर्णनमे लिखने छथि। वर्णनरत्नाकरमे जे नाओ बनेबाक वर्णन आएल अछि ताहिमे २०सँ २८ हाथ धरिक नाओक उल्लेख अछि। नाओ सभमे सिंह, बाघ, घोड़ा, बत्तक, साँप अथवा माछक चिह्न रहइत छल। नाओ बनेबामे मैथिल लोकनि अपन सौन्दर्य-ज्ञानक परिचय दइत छलाह। कर्पूर, अगुरु, गरममशालाक विभिन्न प्रकारक उल्लेख सेहो ओहि ग्रन्थमे भेटइत अछि। जीवनक एहेन कोनो अंश वा सौन्दर्य सामग्रीक एहेन कोनो अवयव नहि जकर उल्लेख वर्णरत्नाकरमे नहि हो। 'पंचशायक' नामक अपन ग्रन्थमे ओ परिवार-नियोजन आओर गर्भनिरोध तक क विधि लिखने छथि। वर्णनरत्नाकर आओर कीर्त्तिलता एक संग पढ़ला उत्तर बहुतो बातक ज्ञान भ सकैछ।

विद्यापति लिखनावलीसँ ई ज्ञात होइत अछि जे राजस्वकर सेहो वसूल होइत छल। भूमि नापबाक उल्लेख सेहो एहिमे अछि। दानपत्रक सूची सेहो राखल जाइत छल। एहि ग्रन्थमे ऋण-पत्र, खेती व्यवस्थापत्र, बन्धको व्यवस्था पत्र, ढेढ़ी व्यवस्था पत्रादिक उल्लेख भेटइत अछि। दान-वाक्यावलीमे राहरि, साठी आओर लतामक चर्च अछि आओर कए प्रकारक वस्त्रक उल्लेख सेहो भेल अछि जेना—कार्पासिक वस्त्र, सरोभवस्त्र, क्षौम वस्त्र, कौशेयवस्त्र, कुशवस्त्र, कृमिजवस्त्र, मृगलोमज वस्त्र, वृक्षावक् संभव वस्त्र आओर आविक वस्त्र। कीर्त्तिलतामे बाजार, नगर, हाट, आदिक विशिष्ट वर्णन अछि[८६]। बाजारमे पनहट्टा, धनहट्टा, सोनहट्टा, पक्वान हट्टा,

(८५) देखू *Life of Dharmaswami* : by Rœrich.

(८६) एहि सभहिक reference हम अपन राजनैतिक इतिहासमे दए देने छी आओर एहि सम्बन्धमे हमर एक स्वतन्त्र पोथी अंग्रेजीमे तैयार भए रहल अछि।

मछहट्टा इत्यादिक उल्लेख भेल अछि। जहाँ एक दिशि एहि सब बातक उल्लेख अछि त' तत्कालीन दरिद्रताक सेहो। ऋणक उल्लेख कीर्त्तिकलामे सेहो अछि। पदावलीमे सेहो ठाम-ठाम दरिद्रताक उल्लेख नीक जकाँ भेल अछि। डा० उपेन्द्र ठाकुरक पोथीमे एहि युगक आर्थिक इतिहास नहि अछि यद्यपि सामाजिक इतिहास विवरण ओ केने छथि। आर्थिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ ई युग कम महत्वपूर्ण नहि छल आओर जँ केओ मैथिल वा अन्य विद्वान् एहि युगक आर्थिक इतिहास पर शोध करथि तँ ओ बड्ड लाभान्वित होएताह।

शासन पद्धति

(प्रारम्भसँ १५०० धरि)

आर्यंक विस्तार जखन मिथिलामे भेल तऽ हुनका लोकनिक राजनीतिक व्यवस्थाक स्थापना होएब एतए उचित छल। वैदिक कालमे मिथिलामे राजतंत्रीय व्यवस्था छल आओर वंशानुगत राजतन्त्र प्रणालीक जड़ि जमि चुकल छल। पवित्रताक भावना राजा लोकनिकेँ रहइत छलन्हि। राजा लोकनि शक्तिशाली होइत छलाह। राज-दरबारमे ब्राह्मणक प्रधानता छल आओर संगहि सेनापति आओर रथकार सेहो रहइत छलाह। ककरोसँ जबर्दस्ती कोनो काज लेब राजाक बिशेषाधिकार बुझल जाइत छल[८७]। राजा समस्त मानवक एक मात्र शासक मानल जाइत छल। ओहिमे जे गैरजबावदेह होइत छलाह हुनका प्रजाक भोक्ता कहल जाइत छल। जनप्रिय राजा लोकनिकेँ देवक संज्ञा भेटइत छलन्हि। राजा जनक एक जनप्रिय शासक छलाह। ब्राह्मण साहित्यमे राजा जनककेँ सम्राट सेहो कहल गेल अछि। राजा जनकक कालमे मिथिलामे राजतन्त्र चरमोत्कर्ष पर छल। अत्याचारी राजा पर अंकुश रखबाक हेतु प्राचीन मनीषि लोकनि अधिकाधिक नियम

---

(८७) ऐ० ब्रा० ७।२९ तुलना करू : H. C. Raichoudhary क *Political History of Ancient India* पृष्ठ १७१।

बनौने छलाह। अभिषेकक कालमे जे शपथ ग्रहण होइत छल ताहिमे राजाकेँ ई प्रतीज्ञा करए पड़इत छलन्हि जे ओ अपना प्रजाक हेतु किछु उठा नहि रखताह। सूत, ग्रामणी आओर लोकनिक राज्यमे बड्ड महत्व छलन्हि आओर जखन राजाक निर्वाचन होइत छल तखन इएह लोकनि सर्वेसर्वा होइत छलाह। हिनका लोकनिकेँ 'राजकृत' सेहो कहल गेल छन्हि[८८]। राजा पर अंकुश रखबाक हेतु सभा आओर समितिक व्यवस्था छल। समितिक बड्ड महत्वपूर्ण स्थान छल। गिलगिटसँ प्राप्त बौद्ध पाण्डुलिपिमे एकठाम लिखल अछि जे मिथिलाक राजाक ओतए ५०० अमात्य छलन्हि। ओहि ५०० अमात्यमे खण्ड अमात्य अग्रगण्य छलाह[८९]। खण्ड बहुत शक्तिशाली अमात्य छलाह आओर मिथिला राज्यमे हुनक बड्ड धाक जमल छलन्हि। जखन वैशालीमे गणराज्य छल तखन मिथिलामे राजतन्त्रक व्यवस्था छल एकर प्रमाण खण्डक वक्तव्यसँ भेटइत अछि[९०]। मिथिलाक राजा विदेहक ओतए केवट नामक एकटा प्रधान मन्त्री रहइत छलाह[९१]। मिथिला पर जखन एकबेर उत्तर पांचाल दिशसँ आक्रमण भेल छल तखन मिथिलाक रक्षार्थ केवट किछु उठा नहि रखने छलाह। हुनक कृतिक विशद विश्लेषण जातक कथामे नीक जकाँ भेल अछि। कएल जनकक कुकृतिसँ तङ्ग भए मिथिलाक जनता राजतन्त्रक जूआकेँ उठा फेकलक आओर ओहि स्थान पर वैशालीक देखादेखी गणतन्त्रक स्थापना केलक। किछु दिनक पश्चात् विदेह गणराज्य अपन सुरक्षार्थ वैशालीक गणराज्यसँ मिलि-जुलिकेँ रहए लागल आओर वज्जी संघक प्रमुख सदस्य सेहो।

वैशाली गणराज्यक शासनपद्धति

बुद्धक कालमे वैशालीक प्रजातन्त्र—वज्जी संघक आठ सदस्य महक एक सदस्य छल। ओना तँ वैशालियोमे पूर्वमे राजतन्त्रे छल मुदा पाछाँ एहिठाम गणतन्त्रक स्थापना भेल। वैशालीमे कोना आओर कहिया

---

(८८) देखू श० ब्रा० ३।४।१।७ ; १३।२।२।१८ (८९) *Gilgit Mss.* Vol. III Part II p. 134 (९०) *B. C. Law Commemoration Volume* Vol. I. 134-41 (९१) देखू महाउमग्ग जातक नं० ५४६

प्रजातन्त्रक स्थापना भेल से कहब कठिन मुदा एतबा तँ निश्चित रूपसँ बुझल अछि जे महात्मा बुद्धक समयमे एहिठाम प्रजातन्त्र शासन छल आओर स्वयं भगवान बुद्ध एहिसँ मात्र प्रभाविते टा नहि भेल छलाह अपितु एकर प्रशंसा करइत नहि थकइत छलाह। विश्वक इतिहासमे वैशालीक प्रजातन्त्र अति प्राचीन मानल गेल अछि आओर तेँ एकर महत्वो विशेष रहल छैक। ओना तँ महाभारतमे भीष्मक कथन छन्हि जे हिमालयक तराइमे किछु गणतांत्रिक लोक सब रहइत छलाह मुदा एहि मे तथ्यक अंश कतेक अछि से कहब कठिन[९२]। केओ-केओ एहि सँ लिच्छवी संघ कहएबाक संकेत करइत छथि। एतबा कहल जा सकैछ जे रामायण महाभारत काल मे एहि क्षेत्र मे कौखन प्रजातन्त्रक स्थापना भेल होएत। बुद्धक समय मे वैशाली उन्नत प्रजातंत्र छल। जातक कथा मे कहल जाइछ जे एहि ठाम ७७०७ राजा छलाह। ई लोकनि राजकुलोद्भव जकाँ व्यवहार करइत छलाह आओर वैशालीक पुष्करिणी हिनके लोकनिक लेल सुरक्षित रहइत छल। एहि सँ ई निश्चितरूपेँ प्रतीत होइत अछि जे अहिठाम पूर्व मे राजतंत्र छल।

हिनका लोकनिक शासन-व्यवस्था वैज्ञानिक आधार पर संघटित छल। ७७० क जे उल्लेख भेटैछ ताहि आधार पर ई अनुमान कएल जा सकैछ जे ई शासक लोकनि वैशालीक एक विशिष्ट क्षेत्र सँ सम्बन्धित छलाह। राजा, उप-राजा, सेनापति आओर भाण्डागारिक क उल्लेख भेटैछ। वैशाली वज्जी संघक प्रधान केन्द्र सेहो छल आओर एकर सीमा बहुतो दूर धरि पसरल रहैक[९३]। वैशालीक संसद कँ संथागार कहल जाइत छल आओर एहि स्थान पर प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार कएल जाइत छल। 'जैनकल्पसूत्र' मे 'नवगण रयनो' क जे उल्लेख अछि ताहि सँ ई भान होइत अछि जे ई वैशाली शासनक कार्यकारिणी समिति छल[९४]। हिनका लोकनिक न्याय व्यवस्था प्रशंसनीय छल। छोट पैघ न्यायालय एहिठाम बहुत छल। राज-पुरुष लोकनि एहि न्यायालयक प्रधान सभापति होइत छलाह। न्यायप्रणाली

---

(९२) Beni Prasad : *The Theory of Govt. in Ancient India* p. 66 (९३) *JBORS VI* 259-62. (९४) R. C Majumdar : *Corporate Life in ancient India* p 232

क सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता ई छल जे अभियुक्त केँ तखनहि दण्डित कएल जेतन्हि जखन ओ क्रमशः सातो न्याय समिति सँ एकमत सँ दण्डित घोषित होएताह। एहिमे सं कोनो समिति हुनका मुक्ति दए सकैत छलन्हि। एवं प्रकारे ओहिठाम व्यक्तिगत स्वतंत्रताक सुरक्षा पर विशेष ध्यान देल जाइत छल। एकर दोसर कोनो उदाहरण संसारक इतिहासमे नहि अछि[९५]।

गण के जीवित रखबाक हेतु संघ आवश्यक छलैक किएक तँ ओहिकालमे साम्राज्यवादी प्रवृतिक विकास भए रहल छल। तैँ लिच्छवी लोकनि अन्य गणराज्यक संग एक संघक स्थापना कैलन्हि जे वज्जी संघक नामसँ प्रसिद्ध भेल। एहि संघ मे समानताक सिद्धान्तक पालन होइत छल। संघीय संसदक व्यवस्था सेहो उत्तम छल। संघीय संसदक १८ सदस्य छलाह। कल्पसूत्र मे एकर उल्लेख भेल अछि। एक विदेह चेटक वैशाली मे आविकए वसि गेल छलाह आओर हुनके बेटीक विवाह बिम्बिसार सँ भेल छलन्हि जनिक पुत्र अजातशत्रु छलाह आओर जे पाछाँ लिच्छवीगण पर आक्रमण कए एकरा नष्ट भ्रष्ट कएने छलाह। ई सत्य कहल गेल अछि जे राजक समक्ष लड़ू सम्बन्ध व्यर्थ बुझना गेल अछि। 'वैदेहीपुत्र' कहला उत्तरों अजातशत्रु केँ वैशाली पर चढ़ाइ करबामे कनेको संकोच नहि भेल छलैक। वैशाली संघ अपन विशिष्ट शासनक हेतु प्रसिद्ध रहल मुदा एकर व्यक्तित्व थोड़बे दिनक बाद लुप्तप्राय भए गेलैक। महान साम्राज्यवादी कौटिल्यक आँखि मे तँ वैशाली जेना काठ जकाँ रहैन्हि। कौटिल्य दू प्रकारक संघक वर्णन कएने छथि—(i) राजशब्दोपजीवी–जिनक शासक राजाक उपाधि धारण करइत हो (ii) आयुध अथवा वार्ताशस्त्रोपजीवी–जे शस्त्र पर जीवैत हो। कौटिल्यक कथन छलन्हि जे ई लोकनि भने भौतिक समृद्धि प्राप्त करबा मे समर्थ होथु मुदा हिनका लोकनि आध्यात्मिक सुखक अनुभव कथमपि नहि होइतन्हि।

कौटिल्य एक महान साम्राज्यवादी विचारक छलाह आओर मौर्य साम्राज्यक दृष्टपोषक सेहो। मौर्य साम्राज्यक शासन-प्रणाली केन्द्रित छल आओर

(९५) देखू *Hindu Polity* 52-53 ; R. C. Majumdar क पूर्वोल्लिखित पोथी p. 233 आओर *JBORS* I. 177

तैँ ओ आओर कोनो प्रकारक शासन-प्रणालीक पक्षपाती नहि छलाह। मौर्य साम्राज्यक समय मे मिथिलाक शासन-प्रणाली केहन छल तकर कोनो प्रमाण तँ स्पष्ट रुपे नहि भेटइत अछि मुदा मौर्य साम्राज्य मे प्रान्तीय आओर जिला शासनक रूपरेखा देखला स ई बुझबा मे असौकर्य नहि जे वैशाली निश्चित रुपेँ प्रान्तीय शासनक प्रधान केन्द्र रहल हो। वैशाली आओर चम्पारणक महत्व अशोकक शासन काल मे आओर बढि गेल किएक तँ अशोक स्वयं बौद्ध छलाह आओर प्रत्येक बौद्ध स्थान मे ओ जाइत छलाह। रमपुरबा मे जे हुनक टूटा स्तम्भलेख अछि ताहि सँ ई अनुमान लगाओल जाइछ जे शासनक दृष्टिकोण सँ उत्तर विहारक महत्व घटल नहि छलैक। एकर एक आओर महत्वपूर्ण कारण ई अछि जे नेपाल जेबाक बाट तँ मिथिले क्षेत्र दएकेँ छलैक तैं एहि क्षेत्र कँ विशेष महत्व भेटिते रहतैक। ओहू सँ पुष्ट प्रमाण एकटा ई अछि जे पुर्णिया जिला मे सिकलीगढ़ मे सेहो एकटा अशोककालीन स्तम्भ भेटल अछि जाहिसँ उपर्युक्त बातक पुष्टि होइत अछि। एहि साम्राज्यवादी छत्रछायाक अंतर्गत वैशाली अपन प्रजातांत्रिक व्यवस्थाकेँ सोहाग सिंदुर जकाँ नुकौने छल आओर जखने ओयह साम्राज्य-वादी सत्तासँ ओकरा मुक्ति भेटलैक तखन ओ पुनः अपन व्यवस्था पुनर्स्थापित कए लेलक। पातञ्जलिक भाष्यमे सेहो जतय-ततऽ मिथिला जनपदक उल्लेख भेटैछ आओर बहुतो इतिहासकारक ई मत छन्हि जे मौर्य साम्राज्यक पतनोपरान्त लिच्छवी लोकनि पुनः अपन सत्ता जमौलन्हि। गुप्त काल मे वैशाली तीरभुक्ति प्रान्तक राजधानी छल आओर ओहिठाम सँ प्राप्त मुद्रा मे एकरा 'अधिष्ठान', सेहो कहल गेल छैक जकर अर्थ राजधानी होइत छैक। एकर महत्व एहू सँ बुझवा मे अबैछ जे स्वयं गोविन्दगुप्त एहि प्रान्तक राज्य-पाल छलाह आओर हुनक एक अभिलेख सेहो एहिठाम भेटल अछि।

वैशाली गुप्त साम्राज्यक एक प्रान्तक प्रमुख राजधानी छल आओर एहि विभिन्न राज्यकर्मचारी लोकनिक कार्यालय सेहो छल। हुनका लोकनिक अनेकानेक मुद्रा ओहिठामसँ प्राप्त भेल अछि (देखू परिशिष्ट)। प्रांतक विभाजन विषय अथवा जिला मे होइत छल आओर सब सँ छोट इकाई होइत छल ग्राम। गुप्तयुग मे तीरभुक्ति कत्तेक विषय मे बटल छल से कहब तँ असम्भव

मुदा एखन हालहिमे मुजफ्फरपुर जिलासँ जे एकटा ताम्रलेख भेटल अछि ताहि आधार पर ई कहल जा सकैछ जे तीरभुक्ति मे ओहियुग मे चामुण्डा नामक एकटा विषय छल। विषयक शासक केँ विषयपति कहल जाइत छलन्हि आर ग्रामक शासक केँ ग्रामीक। गुप्त युग मे शासनक दृष्टिकोण सँ हमरा लोकनिक ई क्षेत्र बड्ड प्रसिद्ध छल।

हर्षक शासन काल मे सेहो मिथिलाक प्रधानता बनल रहल। राज्य सत्ताक कमजोरीक कारणे राजतंत्रक विकेन्द्रीकरण भए गेल छल। पाल शासन काल मे सेहो तीरभुक्ति एकटा प्रधान शासन केन्द्र छल आओर बनगाँव अभिलेख तिरहुतक क्षेत्रहिं सँ भेटल अछि। ओना तँ नारायणपुरक भागलपुर ताम्रपत्रक लेख मे तीरभुक्ति आओर कक्ष विषयक नामक संगहि संग कलशपोत आओर मकुटिक गामक नाम सेहो भेटैछ। मौर्य–गुप्त-हर्ष आओर पालकालीन शासन व्यवस्थाक उल्लेख डा० उपेन्द्र ठाकुर अपन पोथी मे नहि कएने छथि। सम्भवतः वो उपर्युक्त सब वंश केँ विदेशी वंश मानइत छथि तेँ सम्भवतः एकरा छोड़ि देने छथि। पालकाल मे मिथिलाक विशिष्ट स्थान छल आओर जखन कालाचूरी वंशक आक्रमणक संभावना बढ़ि गेल छल तखन पालवंशक राजालोकनि मिथिलहि केँ अपन प्रधान केन्द्र बनौने छलाह आओर एतहि सँ ओ लोकनि विदेशीक सामना करइत छलाह। ओना तँ एकटा रामायणक पाण्डुलिपि सेहो तीरभुक्ति शब्दक उल्लेख भेटइछ आओर वैशालीसँ प्राप्त एकटा ताराक मूर्ति पर सेहो "तीरभुक्तौ वैशाली तारा" क उल्लेख अछि। एहि सब सँ ई प्रमाणित होइछ जे गुप्तयुग सँ कर्णाट वंशक उत्थान धरि तीरभुक्ति विभिन्न राजाक प्रान्तीय शासनक केन्द्र रहल छल आओर एकरहि अन्तर्गत कक्ष, हौद्रेय (हरदी), आओर चामुण्डा विषय छल। आरो विषय अवश्ये रहल होइत, मुदा हमरा लोकनि केँ एकर ज्ञान एखन धरि नहि अछि। अभुका मुंगेर जकाँ ताहुदिन मे कृमिला विषय उत्तर आओर दक्षिण मुंगेर मे पसरल छल आओर एहि हिसाबेँ चारिटा विषयक पता तँ लगैत अछि। प्रान्तक मुख्य अफसर प्रान्तपति, राजस्थानीय, कुमारामात्य आओर उपरिक कहबइत छलाह। प्रान्तपतिक हेतु कतेको शब्दक व्यवहार होइत छल। विषयपतिक अधीन चौरोद्धरनिक आओर दण्ड-

पासिकक उल्लेख अभिलेखादि मे भेटइत अछि। गुप्त आओर उत्तर गुप्त काल मे जिला परिषद् सेहो होइत छल। ग्राम से ग्राम-पंचायतक व्यवस्था छल जकरा शिलालेख मे पंचमंडली आओर पंचकुली कहल गेल छैक[९६]।

१०९७ सँ १५०० धरि

१०९७ मे जखन नान्यदेव एतए कार्णाट वंशक स्थापना कैलन्हि तखन सँ एहिठामक शासन विधान सुव्यवस्थित भेल आओर मिथिलाक निजी गौरवक विकास सेहो। केओ-केओ 'कार्णाट-युग' (१०९७-१३२५) केँ स्वर्णयुग सेहो कहइत छथि। एहि सम्बन्धक विशिष्ट विवरण हम अपन राजनैतिक इतिहास मे दए चुकल छी एहिठाम ओकरा दोहराएब उचित नहि बुझल जाइत अछि। एहियुगक शासन व्यवस्थाक पूर्ण परिचय हमरा लोकनि केँ चण्डेश्वर रचित 'राजनीति-रत्नाकर' सँ भेटइत अछि। चण्डेश्वर सर्वप्रथम 'राजनीति' शब्दक उल्लेख कएने छथि। नान्यदेव स्वयं राज्यक संस्थापक छलाह तैं शासन मे हुनक प्रधानता होएव आवश्यक छल।

शासनक प्रधान राजा होइत छलाह। प्रजाक रक्षा केनिहारकेँ राजा कहव उचित बुझल जाइत छल। चण्डेश्वर प्रजाकेँ विष्णु कहने छथि। राजा शासन, न्याय आओर शासन सम्बन्धी सब बातक प्रधान होइत छलाह। शासनक हेतु प्राचीन परम्पराक ओ लोकनि ध्यानमे रखैत छलाह। शासकक संगहि संग ओ लोकनि प्रसिद्ध विद्वानो होइत छलाह आओर ओकर सबसँ पैघ प्रमाण छथि नान्यदेब, रामसिंहदेव, शिवसिंह, लखिमा, विश्वास देवी कंसनारायण इत्यादि। नान्यदेवक भरत-नाट्य-शास्त्रक टीका एखनो बेजोड़ अछि।[९७] राजा ईश्वरक प्रतिनिधि बुझल जाइत छलाह। राज्याभिषेक सेहो होइत छल। राजालोकनि परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज, महानृपति, क्षितिपाल, भूपाल, मिथिलाधिपति, भुजवल भीम, भीम पराक्रम, कर्णाट चूड़ामणि, दसमदेव अवतार, कार्णाट भूमिपति मुकुटमणि, कर्णाटान्व्य भूषणाः इत्यादि पदवीसँ विभूषित होइत छलाह।

---

(९६) *Epigraphia Indica* XI. 49.

(९७) राजनीतिरत्नाकर : पृष्ठ ९९—महती देवता ह्येषा नर रुपेण तिष्ठति।

नान्यदेव, गंगदेव आओर रामसिंह देवक शासनधरि कोनो गोलमाल नहि देखल जाइछ मुदा शक्तिसिंह देवक शासन कालमे मन्त्री लोकनि सब सत्ता अपना हाथ लए लेने छलाह। ओइनवार वंशक कालमे ओना तँ चण्डेश्वर अपन राजाकेँ करद कहने छथि मुदा हमरा बुझने ओइनवार शासक लोकनि स्वतंत्र छलाह आओर जँ से बात नहि होइत तँ शिवसिंह आओर भैरवसिंह अपन सिक्का कोना चलवितथि। ई राजा लोकनि शक्तिशाली होइत छलाह मुदा ओहि युगमे सामान्तवादी व्यवस्थाक पूर्ण विकास भए चुकल छल तैँ राजा सामन्त लोकनिक कथनसँ बाहर नहि जा सकइत छलाह।

मन्त्रि-परिषद

बहुत पूर्वहिं कौटिल्य कहि गेल छलाह जे जहिना एक पहियासँ कोनो गाड़ी नहि चलि सकैछ ठीक तहिना मात्र राजालोकनि असगरे शासन नहि चला सकइत छथि तेँ मंत्रीक होएब शासन विधानमे आवश्यक बुझना गेल। चण्डेश्वरक राजनीतिरत्नाकरमे सेहो मंत्रिपरिषद्क व्यवस्था अछि। मिथिलामे प्रधान मंत्रीकेँ आओर महामतक कहल जाइत छलैन्ह। अन्धराठाढ़ी आओर हावीडीह अभिलेखमे प्रधानमंत्री लोकनिकेँ मंत्रीक नामसँ संबोधित कएल गेल अछि। मंत्री लोकनिकेँ संधि, विग्रहा यान, आसन, द्वैधीभाव, आओर आश्रमक पूर्ण ज्ञान रहब आवश्यक बुझना जाइत छल। श्रीधरदास आओर रत्नदेवक वंशज कार्णाट शासनक अन्तंगत सब दिन मंत्रित्व पद पर बनल रहला श्रीधरदासकेँ सेनवंश दिशिसँ महामण्डलिक पदवी भेटल छलन्हि आओर रत्नदेवक वंशज रजदेवकेँ कर्णाट लोकनि 'रउत' (सामन्तवादी पदवी) पदवीसँ विभूषित कएने छलथिन्ह। कर्णाट लोकनिक अधीन रामादित्य, कर्मादित्य, वीरेश्वर, देवादित्य आओर चण्डेश्वर सेहो मंत्री छलाह। गर्गंश्वर सेहो अपनाकेँ महाभक्त आओर महाराजाधिराज लिखने छथि। शक्तिसिंहक निरंकुश शासनसँ जखन मंत्रिगण उबि गेलाह तखन ओ लोकनि सात वृद्ध लोकनिक एकटा परिषद् बनौलन्हि आओर शक्तिसिंहके गद्दीसँ हटादेलन्हि। एहिसँ मंत्रिपरिषद्क अधिकारक व्यापकताक पता लगैछ पाछाँ जखन हरसिंहदेव वयस्क भेलन्हि तखन हुनक राज्याभिषेक भेल ताधरि चण्डेश्वर सम्भवतः राज्यक भार संभारने छलाह। चण्डेश्वर सांधि-

विग्रहिक संगहि संग सप्रकृत्य महावार्तिक नैबन्धिक सेहो छलाह। एहिसँ ई प्रत्यक्ष होइछ जे चण्डेश्वर कतेक शक्तिशाली छलाह। मंत्री लोकनि निम्नलिखित पदवीसँ विभूषित होइत छलाह सामन्त, महासामन्त, महाराज, माण्डलिक, महामाण्डलिक, महामत्तक इत्यादि। ई लोकनि हृदयसँ दान इत्यादि सेहो करइत छलाह आओर एहि दिशामे वीरेश्वर आओर चण्डेश्वरक नाम अग्रगण्य अछि। चण्डेश्वरक अधीन जे एकटा सामन्त हरिब्रह्म छलाह जे चण्डेश्वरक प्रसंशामे बहुतो कविता वनौने छलाह[९८] आओर जे अखनो 'प्राकृत पैंगलम ग्रन्थ' (मैथिलीक अन्यतम उदाहरण मे छपल अछि।

मन्त्रिपरिषदक अतिरिक्त आरो कतेक पदाधिकारी छलाह जनिका सहाय्यसँ शासनक कार्य चलइत छल—

(i) महामुद्राधिकृत (ii) महासर्वाधिकृत (iii) महाधर्माध्यक्ष (iv) धर्माध्यक्ष (वर्धमान गंगदेवक अधीन एहि पद पर छलाह) (v) प्राड्विवाक—कर्णाटकालमे जटेश्वर कोषाध्यक्ष छलाह आओर लक्ष्मीदत्त स्थानान्तर विभागक अध्यक्ष छलाह।

ग्राम शासनक न्यूनतम इकाई छल। ग्रामक अध्यक्षकेँ ग्रामपति कहल जाइत छल। ग्रामपति लोकनिक ई प्रधान कर्त्तव्य छल जे ओ लोकनि राज्य कर वसूल कए राजाक ओतए पठाबथि। गुल्म सेहो एकटा ग्राम पदाधिकारी होइत छलाह। ३ अथवा ५ टा गामक मिलाके ऐकटा गुल्म नियुक्त होइत छलाह। एकर अतिरिक्त दश ग्रामपति, विंशति संग्रामपति, त्रिंशति ग्रामपति, सहस्र ग्रामपति इत्यादिक उल्लेख राजनीति रत्नाकरमे भेल अछि। प्रत्येक गामवे एकटा मुखिया होइत छल। केन्द्रीय शासन ग्राम शासनक सफलता पर निर्भर करइत छल। ग्राम सभामे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक आओर सांस्कृतिक आदि सब बात पर बहस होइत छल। गाममे जे झगड़ा-दन होइत छल सेहो ग्रामसभामे फरियैल जाइत छल आओर जँ ग्रामसभा ओकरा फरियैवामे असमर्थ रहइत छल तखन

---

(९८) एहि ग्रन्थक उल्लेख Dr J K Mishra : History of Maithili Literature Vol I मे नहि अछि।

ओ ओहिसँ ऊपरक अधिकारीक ओतए ओकर सूचना दइत छल। मिथि-लाक समस्त राजनैतिक संगठनक आधारशिला छल ग्रामसभा। ग्रामसभाक सब पदाधिकारीकेँ पारिश्रमिक सेहो भेटइत छलन्हि जकर विवरण 'राजनीति रत्नाकर'मे एवं प्रकार देल गेल अछि।

(i) दशेस—दशगामक अधिकारीकेँ जोतबाक हेतु ओतेक जमीन भेटइत छलन्हि जतेक ओ एक हरसँ स्वयं जोति सकइत छलाह। (ii) विंश-तिंश - बीस गामक अधिकारीकेँ ओतेक जमीन भेटइत छलन्हि जतेक ओ चारि टा हरसँ स्वयं जोति सकइत छलाह। (iii) सतेस—एक सौ गामक अधिकारीकेँ पारिश्रमिक रूपमे एकटा पूर्ण ग्रामे भेटैत छलन्हि। (iv) सहस्राधिपति—एक हजार गामक अधिकारीकेँ एकटा सम्पूर्ण नगर भेटइत छलन्हि।

ग्राम शासनक संगठनक प्रसंगमे गंगदेवक बड्ड नाम अछि। मिथिलामे ग्राम शासनक संगठनक सर्वश्रेष्ठ श्रेय हुनके छन्हि। ओ समस्त राज्यकेँ राजस्व शासनक दृष्टिकोणसँ कतेको परगनामे बँटने छलाह आओर प्रत्येक परगनामे चौधरी आओर कोतवालक प्रबन्ध कएने छलाह। इएह लोकनि ग्राम-शान्ति आओर राजस्व वसूलीक हेतु उत्तरदायी होइत छलाह आओर हिनके लोकनिक योग्यता आओर सहयोग पर केन्द्रीय शासनक सफलता निर्भर करइत छल। ग्राम शासन आओर केन्द्रीय शासनक मध्य सम्पर्क बनाए रखबाक एक विशेष कर्मचारी होइत छलाह जिनका 'स्निग्ध' कहल जाइत छलन्हि। 'स्निग्ध'केँ ग्राम विभागक मन्त्रियो कहल जा सकैछ। कखनो-कखनो हिनका लोकनिक स्वार्थसँ गामवला सब तबाहो होइत छल। चण्डेश्वरक 'राजनीति-रत्नाकर'सँ ग्रामसभा एवं शासनक मंत्रीक उल्लेख सेहो भेल अछि। एक आओर कर्मचारीक उल्लेख ओहि ग्रन्थमे अछि जकर नाम 'सवार्थार्चनाकम्' छल। हिनका लोकनिकेँ ग्रामवासी राहु बुझैत छलाह। सम्भवतः ई लोकनि कल्याण विभागक अफसर होइत छलाह। गाममे पंचायतक चुनाव जनतांत्रिक पद्धतिसँ होइत छल आओर मिथिलामे ई परम्परा बड्ड पुरान अछि। प्रत्येक गामक हेतु एक पुलिसक नियुक्त सेहो होइत छल। प्रतिदिन एहि पुलिस लोकनिक अपन काजक ब्योरा मुखियाक

ओतए देमए पड़इत छलन्हि आ्रओर कोनो कतहु गड़बड़ी होइत छल तँ ओहि लेल पुलिसकेँ उत्तरदायी ठहराओल जाइत छलन्हि। पटवारीक व्यवस्था सेहो एही युगमे भेल छल।

चण्डेश्वरक 'राजनीति-रत्नाकर'सँ कर्णाट-ओइनवार कालीन शासन-व्यवस्थाक पूर्ण विवरण भेटइत अछि। राजनीति-रत्नाकरमे १६ अध्याय अछि जाहिमे—राजा, मंत्री, धर्ममन्त्री, न्यायाधीश, सभ्य, किला, मंत्रणा, कोष, सेनापति, दूत, शासन, कार्यकारिणी, दण्डादिक विधान पर विवेचन भेल अछि। चण्डेश्वरक अतिरिक्त मिथिलामे आरो एहन कतेक पोथी अछि जाहिसँ ओहिठामक संविधान पर प्रकाश भेटइत अछि। वर्णरत्नाकरमे भूपाल, माण्डालिक, सामंत, सेनापति, पुरपति, मंत्री, पुरोहित, धर्माधिकरण, सांधिविग्रहिक, महामत्तक, प्रतिबलकरणाध्यक्ष, शान्तिकरणिक, राजगुरु, दुर्गपाल इत्यादिक उल्लेख भेटइत अछि। विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा आ्रओर कीर्त्तिलतामे सेहो राजनीतिक मूलभूत सिद्धान्त सुरक्षित अछि। वर्द्धमानक 'दण्डादिविवेक' आ्रओर वाचस्पतिमिश्र 'विवादचिन्तामणि' आ्रओर 'हरिहर सुभाषितम्'मे सेहो शासन-विधान आ्रओर न्याय सम्बन्धी बहुतो बात भेटइत अछि आ्रओर मैथिल विद्वानक हाथेँ एहि सभ ग्रन्थक अध्ययन अपेक्षित बुझना जाइत अछि। धर्मशास्त्र, निबन्ध, स्मृति आ्रओर राजनीतिक क्षेत्रमे मिथिलाक स्थान एहि युगमे विशिष्ट रहल आ्रओर एहि बातकेँ आइयो सब केओ स्वीकार करइत छथि मुदा जा धरि स्वयं मैथिल लोकनि एहि सब रत्नक पुनरुद्धार नहि करताह ता धरि किछु सम्भव नहि।

धर्म, दर्शन, शिक्षा एवं संस्कृति

वैदिक युगहिसँ मिथिला शिक्षा, साहित्य, धर्म एवं दर्शनक प्रधान केन्द्र रहल अछि। जनकक राजदरबार तँ ब्रह्मविद्याक प्रधान केन्द्र छल आ्रओर एहिठाम जाहि दर्शनक सूत्रपात भेल तकरे विश्लेषण अद्यावधि चलि रहल अछि। प्रारम्भ वैदिक आर्य पूर्णरूपेण उन्मुक्त छलाह आ्रओर जखन हुनका लोकनि जेँ एहि भूमिमे गड़ि गेला तखन ओ लोकनि निश्चित

क्रिया-कलापक अवहेलना नहि कए सकैत छलाह। प्रारम्भमे एकेश्वरवादी मत बड्ड प्रचलित छल आओर ऋग्वेदमे एकर विशद् विश्लेषण सेहो देखल जाइत अछि। वेदक प्रारम्भिक कालमे यज्ञक महत्व विशेष छल मुदा पाछाँ जे हमरा लोकनि प्रजापतिक कथा-पिहानी पढ़इत छी ताहिसँ ईहो ज्ञात होइछ जे 'अवतारवाद'क सिद्धान्त सेहो जोर पकड़ि रहल छल। ब्राह्मण साहित्यमे प्रजापति 'पुरुष'क रूपमे ठाढ़ भेल छथि आओर एहेन बुझि पड़इत अछि जेना विश्वक भार सम्हारब कार्य हुनके माथ पर पड़ि गेल हो। 'आत्मा' आओर 'ब्रह्म'क विकास उपनिषद्क युगमे भेल। हिन्दू-धर्मक दार्शनिक विश्लेषण उपनिषद्मे भेटइत अछि आओर एहिमे विशिष्ट भागक विश्लेषण मिथिला भूमि पर राजा जनकक दरबारमे भेल छल। "तत् त्वं असि"क मूल मंत्र हमरे लोकनिक देन छी जकर विश्लेषण बादक प्रकाण्ड पण्डित लोकनि विभिन्न रुपेँ कएने छथि। माया, कर्म, मुक्ति, आत्मा सबहिक विश्लेषण राजा जनकक दरबारमे विशद रुपेँ भेल छल। धर्म मनुष्यक आन्तरिक सुखानुभूतिक वस्तु थीक—एहू सिद्धान्तक विवेचन हमरहि लोकनिक ओतए भेल छल। शतपथ ब्राह्मण मे कएलगेल अछि—मनश्चहँ वैवाकच भुञ्जो देवभ्यो यज्ञः वहतः (१।४।४।१) स्मरण रखबाक वस्तु ई अछि जे प्राचीन परम्पराक अवहेलना राजा जनक यज्ञ करबाक अधिकारक घोषणा सँ कैलन्हि आओर यज्ञ सेहो बिना पुरोहित वर्गक हस्तक्षेप केँ। जखन ओ ई कार्य सफलतापूर्वक कऽ लेलन्हि तखन हुनक अभिलाषा तँ पूर्ण भेवे कैलन्हि मुदा एकरा संगहि संग इहो मान्य भेल जे कर्मक माध्यमसँ सब केओ सब किछु भ सकैछ। उपनिषद्-साहित्य मिथिलाक एहि गुण गौरव सँ भरल पूरल अछि। जनकक एहि प्रतिज्ञा सँ मिथिला मे एक नूतन युगक आविर्भाव भेल। आत्माक तत्वज्ञक हेतु संसारमे कोनो वाधा नहि रहि जाइत छन्हि। एहू सत्यक विवेचन मिथिलहि मे भेल छल—"तरति शोकं आत्मवित"—आओर एकरहि संगहि संग इहो कहल गेल छल जे "ब्रह्मविद् बहमैव भवति'[९९] ब्रह्मक जननिहारे ब्राह्मण

(९९) द्रष्टव्य Radhakrishnan : *Indian Philosophy* Vol. I p. 239 ; 143. आओर तुलना करू Vivekanand : *Science and Philosophy of Religion* पृ० ११, १३१, ८६-९०

कहबैत छथि। वृहदारण्यक उपनिषद् मे एहि सब बातक स्पष्टीकरण भेल अछि।

मिथिलामे राजा जनकक ओतए (जनको वैदेहः) दूर-दूर सँ दार्शनिक लोकनि अवइत छलाह। याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयक अतिरिक्त एहिठाम असंख्य दार्शनिक रहइत छलाह आर मिथिलाकेँ तँ दार्शनिकक भूमिए कहल गेल अछि। सांस्कृतिक दृष्टिकोणसँ तँ ओहुना उपनिषद् युग भारतीय संस्कृतिक चरमोत्कर्ष छल[१००]। प्रारम्भहि सँ छात्र लोकनि के ब्रह्म, शान्त, दान्त, उपरत, टिटिक्षु आओर समादिञक शिक्षा देल जाइत छलन्हि आओर एहि प्रकारेँ दार्शनिक-शिक्षाक पृष्टभूमिक मार्ग प्रशस्त कैल जाइत छल। मिथिला मे जनकक युग मे शिक्षा आओर संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल। कुरु-पांचालसँ लोक सब एतए दार्शनिक शिक्षा लेबऽ अवइत छलाह। जनक स्वयं जित्वन, उदंक, बरकु, गर्द्धभी विपीन, सत्य-काम एवं शाकल्य सँ शिक्षा प्राप्त कएने छलाह। जनक अश्वमेध यज्ञ सेहो कएने छलाह। जनकक सभा मे याज्ञवल्क्यक अतिरिक्त उद्दालक आरुणि, अश्वबल, जारत् कारव आर्त्तभाग, भुज्यु लाह्यायणि, उशस्त चाक्रायण, कहोऽकौशितकेय, विदग्ध शाकल्य आदि प्रसिद्ध विद्वान उपस्थित छलाह। एहि युग मे गौतम आओर कपिल आयुर्वेद-शास्त्र पर सेहो लिखने छलाह। ब्रह्मवैवर्त्त मे कहल गेल अछि जे निमि आओर हुनक उत्तराधिकारी जनक वैदेह सेहो आयुर्वेद पर लिखने छलाह। चक्रपाणि 'शुश्रतक' टीका मे कपिलक उल्लेख कयने छथि आओर व्यास 'निदानग्रन्थ'क टीका मे गौतमक। मिथिला मे 'गयायुर्वेद' (गायबरदक आयुर्वेद) पर सेहो एकटा ग्रन्थ लिखल गेल छल मुदा ओकर एखन तक कोनो पता नहि अछि। शुश्रत अपन पोथी 'उत्तार तंत्र' मे विदेह राजक वर्णन कएने छथि—'शालाक्यशास्त्राभिहिताविदेहाधिप कीर्तितः'।

न्याय शास्त्रक प्रणेता महर्षि गौतम मैथिल छलाह। गौतमक

(१००) 'Highest Level of intellectual attainments and spiritual progress' तुलना करू B. K. Sarkar : *Creative India* पृष्ठ ४ ; आओर *B. C. Law Commemoration Volume* I 128-29.

अक्षपादक उल्लेख चीनी यात्रीक विवरणमे सेहो भेटइत अछि। याज्ञवल्क्य मिथिलाक छलाह एहिमे तँ कोनो सन्देह नहि आर हुनक जीवन चरित्र त मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहासक जीवन चरित्र थीक[१०१]। केओ-केओ हुनक योग दर्शनक अगुआ सेहो मानइत छथि[१०२]। सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारमे ओ उदार छलाह। ओ योगीश्वरो कहवइत छलाह। हिनका अतिरिक्त, गौतम, कपिल, ऋषि शृङ्गय (जनिक स्थापित कएल मधेपुरामे सिंहेश्वर महादेवक स्थान अछि)। विभाण्डक सतानन्द, वेदवती आदि विद्वान एवं विदुषी रहइत छलीह।

बौद्धधर्मक उत्थानक पाछाँ वैदिक परम्पराकेँ मिथिलामे किछु चोट अवश्य लगलै मुदा शीघ्रहि ओ ओहि वातक आक्रमणसँ हँटिकए पुनः ठाढ़ भेल। मिथिलामे आन प्रान्तक अपेक्षा न्याय दर्शनक प्राधान्य विशेष रहल। महिषीक मंडनमिश्र स्वयं एक प्रसिद्ध मीमांसक छलाह आओर हुनक 'भावविवेक' आर 'विधिविवेक' पोथी सब अखनहु समाहृत होइत अछि। 'स्वतः प्रमाणं' (मीमांसा वेदान्त) आओर 'परतः प्रमाणं (न्यायादि) शब्द हुनक दार्शनिक ज्ञानक परिचय दैत अछि। शंकराचार्य हुनका सँ तर्क-वितर्क करबाक हेतु मिथिला आएल छलाह। वेदान्तपर मण्डनमिश्रक 'ब्रह्मसिद्धि' पोथी विश्व प्रसिद्ध अछि एहि पोथीक 'ब्रह्मतत्व समीक्षा'क अंशपर वाचस्पति मिश्र टीका लिखने छलाह। 'मण्डनक बाद वाचस्पतिक नाम अबैछ जे मीमांसामे मण्डनमिश्रक 'विधिविवेक' पर टीकाक रुपमे 'न्यायकणिका' लिखलन्हि, वेदान्तमे ब्रह्मतत्व समीक्षा, आओर ब्रह्मसूत्र शंकर भाष्यक टीका 'भामती'क नामे लिखलन्हि आओर सांख्यकारिकाक टीका रुपें 'साँख्य तत्व कौमुदी' लिखलन्हि, आओर न्यायमे 'न्यायवार्तिक टीका रुपें' 'न्याय वार्तिक तात्पर्य', 'तत्वविन्दु' आओर 'न्याय सूची निबन्ध'

---

(१०१) R. K. Mukherjee : *Men & Thought in Ancient India* पृष्ठ ५५ आओर Deussen : *Philosophy of the Upnishad* पृष्ठ ३४७

(१०२) योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं संपूज्य मुनयोऽब्रुवन्। आओर देखू ४।२।१०४ अव्वयात्त्यप्।

लिखलन्हि आओर योगमे योगदर्शनक टीकारुपेँ 'तत्ववैशारदी' लिखलन्हि। एहिसँ ई प्रत्यक्ष भ'जाइत अछि जे दर्शनक एहेन कोनो शाखा नहि छल जाहि पर ओ नहि लिखने होइथ। हुनका सन विद्वान संसारमे विरले जन्म लैत अछि आओर तैँ महापण्डित राहुल साँस्कृत्यायन हिनक भूरि-भूरि प्रशंसा कएने छथि। हिनका प्रयाससँ समस्त न्यायशास्त्र पर मिथिलाक एकाधिपत्य भए गेल। वाचस्पति बौद्ध तार्किक वसुबन्धुक उल्लेख कएने छथि। हिनक किछुए दिनक बाद मिथिलामे उदयनाचार्य भेलाह जे न्यायशास्त्रक अद्वितीय विद्वान छलाह। आ जे निम्न लिखित पोथी सबहिक रचयिता छलाह किरणाबली, लक्षणबली, कुसुमांजली न्याय परिशिष्ट. न्यायवार्तिक तात्पर्य परिशुद्धि। आत्म तत्वाविवेकादि। हिनक बाद गंगेश सर्व श्रेष्ठ बुझना जाइत छथि आओर ओएह नवन्यायक संस्थापको छलाह। हिनक 'तत्व चिन्तामणि'—अपूर्व न्याय ग्रंथ मानल गेल अछि—एकर जँ मैथिली विद्वान मैथिलीमे अनुवाद करितथि तऽ मैथिलीक बड उपकार होइत। ओहि ग्रन्थमे गंगेश 'खाद्य-खण्डन' ग्रन्थमे प्रतिपादित मतक खण्डन कएने छथि। 'तत्व-चिन्तामणि'क प्रसिद्धि तँ एहीसँ बुझि पड़ैछ जे मिथिलामे पक्षधर एहिपर 'आलोक' नामसँ टीका लिखलन्हि आओर बंगालमे रघुनाथ शिरोमणि 'दीधिति' आओर मथुरानाथ तर्क वागीश 'प्रकाश' नामसँ एहि ग्रन्थपर टीका लिखलन्हि[१०३]। पुनः 'दीधिति पर जागदीशी आओर गादाधरी टीका लिखल गेल। गंगेश तँ एहि रुपक 'नव्य-न्याय'क सृष्टि केलन्हि जे आगाँ चलि कए विशेष विद्वतप्रिय भेल आओर प्राचीन न्याय शास्त्र पठन-प्रणाली आमूल परिवर्तन अनलक। युगयुगान्तरसँ भारतक[१०४] श्रेष्ठतम नैयायिक मैथिले भेल छथि। मिथिला युगयुगान्तरसँ न्यायशास्त्रक निर्माण एवं पठन-पाठनमे अग्रगण्य रहल अछि आओर बौद्ध लोकनिक कइक बेर दाँत खट्टा भेल छलन्हि

(१०३) Ingliss नामक एक अमरीकी विद्वान् *Materials for the Study of Navya Nyaya* नामक ग्रन्थ Harward Oriental Series सँ प्रकाशित कएने छथि। केओ मैथिल विद्वान एखनधरि स्वतन्त्र रूपे नव्यन्यायपर काज नहि कएने छथि।

(१०४) अक्षपाद, वात्सायन आओर उद्योतकर मैथिल छलाह से राहुल जी स्वीकार कएने छथि।

एहिठामसँ नव्यन्यायक प्रचार बंगालोमे भेल छल। पक्षधर आओर वर्द्धमान सेहो न्याय शास्त्रक पैघ विद्वान भेल छथि। रघुनाथ शिरोमणि पक्षधर मिश्रक शिष्य छलाह। रघुनाथ शिरोमणि बंगालमे नव्यन्यायक स्थापना केलन्हि।

दार्शनिक पृष्ठभूमि मे मिथिला मे जे विकास भेल ताहि फले मिथिलामे कर्मकाण्ड, मिथिलाक संस्कृतिक एक प्रधान अंग बनि गेल। कर्मकाण्डक विकास एहिठाम अति प्राचीनहि काल मे भेल आओर एखनो हमरा लोकनिक जीवन एवं संस्कार पर एकर प्रभाव देखबामे अबैत अछि। वर्णाश्रमक विकासक संगहि संग कर्मकाण्डो अपना लोकनिक जीवन संस्कारक एक प्रमुख अंग बनि गेल अछि। कर्मकाण्ड पर अनेकानेक ग्रन्थ मिथिला मे लिखल गेल अछि आओर कर्णाटकाल मे वीरेश्वर, गणेश्वर आओर रामदत्त एहि पर कतेको पोथी लिखने छथि। चण्डेश्वरक 'गृहस्थ रत्नाकर' आओर 'कृत्यरत्नाकर' एहि दृष्टिकोणसँ बड्ड महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि। मिथिलाक मुख्य संस्कार जे सब वर्ग मे देखल जाइत अछि से भेल नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन आओर विवाह। ई सब कार्य मिथिला मे अपना पद्धतिक अनुसार होइत अछि। प्राचीन मिथिला मे जैमिनीय कर्ममीमांसा समादृत छल आओर एखनो एकरे प्रधानता अछि। कर्मकाण्डक पुष्टिकरणक हेतु तँ महाराज भैरवसिंहक शासन काल मे जरहटिया ग्राम मे १४०० मीमांसकक एक महान सम्मेलन भेल छल। मैथिल लोकनि श्रौत, स्मार्त आओर आगम तीनू कर्मकाण्डक अनुष्ठानक विधि लिखने छथि। एहि दृष्टिकोण सँ गोकुल उपध्यायक 'कुण्ड-कादम्बरी' ग्रन्थ महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। एकर अतिरिक्त सन्ध्यातर्पण आओर एकोदिष्ट पार्वण क नियम सेहो मैथिल लोकनिक ओतए प्रचलित अछि। मैथिल श्रीदत्तक 'आह्निक'क प्रचलन एखनहुँ देखबामे अबैछ। विद्यापतिक 'वर्षकृत्य' सेहो एहि दृष्टिकोणसँ महत्वपूर्ण अछि। कर्मकाण्ड पर अनेकानेक ग्रन्थक प्रणयन भेल छल जाहिमे 'देश कर्म पद्धति'क बड्ड नाम छल। पूर्व मीमांसक लोकनिक ध्यान सेहो एहिदिशि पड़ल छलन्हि। श्राद्धकर्म पर सेहो अनेकानेक ग्रंथक रचना भेल।

मध्ययुगमे मिथिलाक धर्म आओर दर्शनमे कोनो विशेष परिवर्तन

देखबामे नहि अबैछ। मध्ययुगमे शिव, शक्ति आ ओर विष्णुक पूजा विशेष रूपें प्रचलित छल। मिथिलामे स्थान स्थानपर शिवलिंग आओर शिव मंदिरक स्थापना भेल छल। शिवपूजाक विधान पर बहुतो पोथी लिखल गेल। पालकालीन एक शिलालेखसँ ई ज्ञात होइछ जे एहिठाम एक हजार शिव मंदिर बनल छल। मिथिलामे त्रिमूर्त्तिक कल्पना बड्ड पुरान रहल अछि। ब्रह्मा–विष्णु आओर महेशक पूजाक विधान तेँ मिथिलामे एखनो गाम-गाममे देखल जा सकैछ। शिवक पूजा विशेष रुपेँ प्रचलित रहल अछि। स्वयं विद्यापति शिव पर कतेक नचारी आओर महेशवाणी लिखने छथि। शिवक संगहि संग मिथिलामे शक्ति पूजा सेहो बड्ड प्रचलित रहल अछि। मध्ययुगमे मिथिला एक प्रसिद्ध तान्त्रिक केन्द्र छल आओर मिथिला क्षेत्रमे चामुण्डा, जयमंगलागढ़, कात्यायनी आओर उग्रताराक स्थान पीठस्थान मानल गेल अछि। तान्त्रिक केन्द्र होएवाक कारणे मिथिलाक प्रसिद्धि बड्ड छलैक आओर मिथिलाक बाहरोसँ लोक सब एतए अवइत छलाह। शक्तिक पूजाक विराट रुप एहुखन मिथिलामे नवरात्रिमे देखल जाइत अछि[१०५]। तंत्रक प्रभाव तँ मिथिलाक वेश–भूषा आओर साधारण जीवनमे ऐखनो देखबामे अबैछ जेना अइपन, सम्वर पूजा, पाग, त्रिपुण्ड इत्यादि। मध्ययुगमे प्रत्येक स्थान पर मातृका पूजाक प्रथा छल आओर अंजना ई प्रथा प्रचलिते अछि। नेपालहुमे शक्ति पूजाक सूत्रपातक श्रेय कर्णाट शासक हरिसिंहदेवकेँ छन्हि जे ओहिंठाम तुलजा देवीक स्थापना कएने छलाह। सूर्य पूजाक विधान सेहो मिथिलामे प्रचलित छल आओर एकर प्रमाण तँ कतोक अभिलेखसँ भेटइत अछि। ओइनवार शासक नरसिंहदेवक बनाओल सूर्य मंदिर एखनो कन्दाहामे ठाढ़े अछि। एकर अतिरिक्त कृष्ण-भक्तोक संख्या मिथिलामे कम्म नहि छल। वर्णरत्नाकरमे तँ विभिन्न प्रकारक सम्प्रदायक उल्लेख भेटइत अछि आओर ओहि आधार पर ई कहल जा सकैछ जे एहिठाम नाथ पंथ आओर अन्यान्य पंथक लोक सब सेहो छलाह। धर्मस्थान आओर सिद्ध लोकनिक वर्ण सेहो वर्णरत्नाकरमे भेल अछि। किछु बौद्ध लोकनि

---

(१०५) तन्त्रक सम्बन्ध मे देखू डा० उपेन्द्र ठाकुरक लेख जे *Indian Historical Quarterly* मे प्रकाशित भेल अछि।

सेहो ओहि युगमे अवश्ये रहल होयताह। कारण ज्योतिरीश्वर स्वयं 'बौद्ध पक्ष' शब्दक व्यवहार कएने छथि आओर उदयनक उल्लेख सेहो ओही संगे।

पावनितिहारक उल्लेख सेहो हमरा लोकनि के चण्डेश्वरक 'कृत्य-रत्नाकर' सँ भेटइत अछि। फागुन मास मे होलीक उल्लेख भेल अछि। प्रत्येक मास मे कोनो ने कोनो उत्सव अवश्य होइत छल। प्रत्येक पूजाक अवसर पर यज्ञ आओर दानक व्यवस्था सेहो होइत छल। स्कन्दक पूजा दीप जराकेँ होइत छल। कार्तिकेय व्रतक बड्ड प्रधानता छल। हिन्दोल चैत्र, मदन द्वादशी, वसन्तोत्सव, अक्षय तृतीया, गौरीव्रत, गंगादशहरा, मत्स्य द्वादशी, दुर्गाक रथयात्रा, पितृ पक्ष, नवरात्रि, देवोत्थान एकादशी, कोजागरा, शिव चतुर्दशी आदि पावनिक नाम चण्डेश्वर लिखने छथि। मिथिला मे बिहुलापूजा, इन्द्रपूजा, कृष्णाष्टमी, गणेशचतुर्थी, जीतिया, धन्वन्तरी पूजा, दीपावली, सामाचकेवा, मधुश्रावणी, नवान्न आदिक विधान सेहो बनले छल। एहि सब बातक जेना बंगाल मे वैज्ञानिक अध्ययन भेल अछि तेना मिथिलामे नहि। हम तऽ ई कहब जे एहि विषय पर एक सुन्दर पोथीक निर्माण भ सकैत अछि। हरिहरक्षेत्रक स्थान सेहो पौराणिके काल सँ प्रसिद्ध रहल अछि। मध्यकालमे मुसलमान लोकनि सेहो मिथिलामे आबि चुकल छलाह आओर दुहु सम्प्रदायक बीच साँस्कृतिक समन्वय भए गेल छल आओर ओकरो प्रभाव मैथिल संस्कृति पर पड़ल। भाषा, साहित्य आओर संस्कृति तीनू एहि सम्पर्क सँ प्रभावित भेल।

बौद्धधर्म आओर अन्यान्य सम्प्रदाय

ई० पू० छठम शताब्द मे बिहारक पुण्यभूमि पर बौद्ध धर्म आओर जैन धर्मक विकास भेल छल। वर्द्धमान महावीर तँ मिथिला अंचलेक छलाह आओर भगवान बुद्ध सेहो वैशालीक प्रजातान्त्रिक व्यवस्थासँ बड्ड प्रभावित भेल छलाह[१०६]। बौद्ध धर्मक विकास दिनानुदिन होइत गेल आओर सम्राट् अशोकक समय मे ई धर्म विश्वधर्म बनि गेल। भगवान बुद्ध मध्यम मार्गक समर्थक छलाह। बुद्धक कथन छलन्हि जे आत्मनिरोधक

(१०६) बौद्धधर्म आओर दर्शनक हेतु देखू हमर पोथी 'सिद्धार्थ'।

माध्यम सँ आत्माक उन्नति भ सकैछ। बौद्ध लोकनि 'अहिंसा परमोधर्मः'क पक्षपाती छलाह आओर बौद्धधर्मक चलाओल पंचशील आओर दशशीलक गप्प हम एखनो सुनि रहल छी। शील, समाधि आओर प्रज्ञा केँ ई लोकनि उत्कृष्ट यज्ञ कहलन्हि। अशोकक उपरान्त आओर कणिष्कक शासन काल मे बौद्धधर्म हीनयान आओर महायान सम्प्रदाय मे बँटि गेल, जाहि मे महायान हिन्दू धर्म सँ बड्ड प्रभावित भेल। एहिठाम ई बात स्मरणीय अछि जे वैशाली मे बौद्धधर्मक दोसर संगति भेल छल जाहि मे किछु क्रान्तिकारी निर्णय सेहो लेल गेल छल। महायान शाखाक प्रभुता बढ़ला उत्तर बौद्धधर्म मे मूर्ति आदि बनब शुरु भ गेल। महायान भागवत् गीता सँ विशेष प्रभावित भेल छल। कुमारिलभट्ट आओर शंकरक प्रभाव सँ बौद्धधर्मक ह्रास भेल। शंकरदिग्विजय मे कुमारिलक मुँह सँ शंकराचार्य केँ निम्नांकित वाक्य कहाओल गेल अछि :

श्रुत्यर्थ धर्मविमुखान् सुगतान् निहन्तुं
जातं गुहं भुवि भवंतमहं नु जाने ॥

एहि मे तथ्य कहाँ धरि, से कहब कठिन मुदा ई तँ निश्चित अछि जे कुमारिल, शंकराचार्य, मंडन आओर वृद्धवाचस्पतिक प्रयास मिथिला धरि मे बौद्ध धर्मक अंकुश नहि जमि सकल आओर सर्वथा एहिठाम हिन्दू धर्मक प्रधानता बनल रहल। जैन धर्मक कोनो प्राधान्य मिथिलामे कहियो विशेष नहि रहल।

अद्वैत वेदान्त

अद्वैत वेदान्तक इतिहासमे शंकराचार्य एक नवीन धाराक प्रवर्तक मानल जाइत छथि। ओ श्रीविद्याक परमोपासक छलाह[१०७]। बड सूक्ष्म ढँगसँ ओ अपना ग्रन्थ सबमे बौद्धमतक खण्डन कएने छथि। अद्वैत मतक दोसर महान प्रतिपादक छलाह मिथिलाक मण्डन मिश्र। शंकराचार्यक मुख्यसिद्धान्त निम्नांकित अछि :

(i) जगन्मिथ्या-आओर (ii) ब्रह्मसत्यं शंकराचार्य अद्वैत वेदान्तक

(१०७) विशिष्ट अध्ययनक हेतु देखू गंगानाथ झाक *मैथिली वेदान्त दीपिका* मैथिली भाषाक अपूर्व ग्रन्थ।

दृष्टिकोणसँ गीताक भाष्य सेहो लिखने छथि। ओ अपना ग्रन्थ सबमे ज्ञान-मार्ग पर विशेष जोर देने छथि। बाह्याडम्बरक विरोधी होइतहुँ ओ कर्म-काण्डक विरोधी नहि छलाह। हुनका सिद्धान्तक एक मात्र सार इएह छल जे एक परमात्माक सार सब जीवात्मा थीक।

मिथिला विश्वविद्यालय

अति प्राचीन कालसँ मिथिला विद्याक केन्द्र रहल अछि आओर कर्णाट ओइनवार युगमे तँ संस्कृतक हेतु मिथिलाक माहात्म्य बड्ड बढ़ि गेल छल। साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ ओहि युगमे मिथिलेटा एहेन अंचल छल जाहि-ठाम देशक कोन-कोनसँ विद्वान लोकनि आबिकेँ शरण लैत छलाह। नालन्दा आओर विक्रमशिला विश्वविद्यालय जखन नष्टप्राय भए रहल छल तखन बहुत पण्डित एवं जे पोथी लऽकए भागि रहल छलाह, ताहिमे बहुतो काँ मिथिलामे शरण भेटलन्हि। उत्तर भारतमे आओर जतय कतहु उथल-पुथल होइक तैँ ओतहिंसँ विद्वान लोकनि मिथिला दिशि चल अबइत छलाह, किएक तँ एहिठाम विद्वान लोकनिक समादर होइत छल। मण्डनमिश्रक समय सँ मिथिलाक प्रसिद्धि समस्त भारतमे प्रसारित भए चुकल छल आओर तकर बाद तँ एक पर एक एहेन विद्वान होइत गेलाह जाहिसँ मिथिलाक प्रसिद्धि दिन प्रति दिन बढ़ले चल गेल। मध्य युगमे न्याय-वैशेषिक-मीमांसा वेदान्तक हेतु मिथिला भारतप्रसिद्ध भए गेल छल आओर मुसलमानक आक्रमणक फलस्वरुप जे वर्णाश्रमक डोरी ढील भेल जाइत छल ताहु हेतु मिथिला निवन्ध आओर कर्मकाण्डो पर ग्रन्थक रचना प्रारम्भ भए गेल छल। कर्णाटयुगमे संस्कृत–साहित्य चरमोत्कर्ष पर छल आओर संस्कृत साहित्याकाशमे श्रीदत्त उपाध्याय, हरिनाथ उपाध्याय, भवेशमणि इन्द्रपति, लक्ष्मीपति, चण्डेश्वर आदि नक्षत्र जकाँ चमकइत छलाह।

पद्मनाभदत्त मिथिलामे व्याकरणक एक नवीन पद्धतिक जन्म देलन्हि जे 'सुपद्म' नामसँ प्रसिद्ध भेल। छन्द आओर कामशास्त्र पर सेहो बहुत पोथीक रचना भेल एहिमे भानुदत्त मिश्र आओर ज्योतिरीश्वरक नाम प्रसिद्ध अछि। ई सभ विद्वान अपना रुपमे एक संस्थे छलाह। ज्योतिरीश्वरक

'पंचशायक' आओर रंगशेखर कामशास्त्रक प्रसिद्ध ग्रंथ अछि आओर सरस्वतीकण्ठाभरण पर रत्नेश्वरक टीका एक अन्यतम ग्रंथ मानल गेल अछि। भवदत्त 'नैषध-चरित' पर टीका लिखने छलाह आओर श्रीकर आचार्य 'अमरकोष' पर। पृथ्वीधर 'मृच्छकटिक' पर अपन टीका लिखने छलाह। एहि युगमे ज्योतिरीश्वर अपन वर्णनरत्नाकर सेहो लिखने छलाह। इतिहासकार लोकनि एहि युगकेँ मिथिलाक संस्कृति-साहित्यक स्वर्णयुग मानने छथि। मिथिलामे एहि युगमे उदयन, गंगेश, वर्द्धमान, पद्मनाभ, जगद्धर, विद्यापति, शंकर, वाचस्पति, पक्षधर आदि विद्वान भेल छलाह। विद्यापतिके एक स्वरसँ सब केओ भारतीय भाषाक सर्वश्रेष्ठ गीतिकार मानइत छथि[१०८]। गीतिकाव्यक दृष्टिकोणसँ कालिदास, जयदेवक बाद महाकवि विद्यापतिक एक स्थान छन्हि ओना त विद्यापति मैथिली-पदावली लऽकए प्रसिद्ध छथि मुदा स्मरण रखबाक विषय ई जे एहेन कोनो विषय नहि अछि जाहिपर विद्यापति नहि लिखने होथि। लखिमारानी सेहो प्रथम कोटिक विदुषी छलीह। ओहि दिनमे मिथिलामे गामे-गामे विद्यालय छल आओर जाहिठाम जाहि विषयक पंडित रहइत छलाह ताहिठाम सैह विषय नीक जकाँ पढ़ाओल जाइत छल। राजा-महाराजाक दिसिसँ विद्यालयकेँ प्रोत्साहन भेटइत छलैक।

मिथिला विश्वविद्यालयमे ताहिदिन अन्य विषयक अतिरिक्त नव्यन्याय पर विशेष ध्यान देल जाइत छल। नव्य-न्याय पढ़बाक हेतु भारतक विभिन्न भागसँ मिथिला विश्वविद्यालयमे छात्र लोकनि अबइत[१०९] छलाह। विद्वता आओर विद्याक क्षेत्रमे मिथिलाक स्थान अग्रगण्य छल आओर मध्ययुगमे नालन्दाक स्थान मिथिलोकेँ प्राप्त भ गेल छलैक। नालन्दा जकाँ मिथिला विश्वविद्यालय के ओना विशाल अट्टालिकावाला भवन नहि छलैक। मिथिला विश्वविद्यालयक आन वैशिष्ट्य छलैक। स्नातकत्व प्राप्त करबाक जे कसौटी एहिठाम छल ताहिसँ यदि अभुका स्नातक लोकनिकेँ मिलाओल जाइन्ह तँ

---

(१०८) देखू J. C. Ghosh : *Bengali Literature*. (१०९) एहि सम्बन्ध मे देखू R. K. Mukherjee : *Education in Ancient India* ; ii) S. C. Vidyabhushan : *History of Indian Logic*.

एकोगोटए स्नातक नहि भए सकताह। मिथिला विश्वविद्यालयमे जे परीक्षा पद्धति छल तकरा 'शलाका-परीक्षा' कहल जाइत छलैक। ई परीक्षा बड्ड कठिन छलैक। एहिमे शास्त्रार्थक व्यवस्था छल आओर ओहि शास्त्रार्थमे प्रकाण्ड पण्डित लोकनि सेहो बैसैत छलाह। 'शलाका'क अर्थ भेल जे पाण्डुलिपिक पृष्ठ सभ जे सूइसँ घोपल जाइत छल ताहिमे सँ कतहुसँ कोनो विषय पर शास्त्रार्थक सूत्रपात भए सकइत छल। जखन पाठ्यक्रमक पढ़ाइ समाप्त होइत छल, तखन सब छात्र एकठाँ बैसइत छलाह आओर ओहिमे गुरुजन सेहो सम्मिलित होइत छलाह आओर तकर बाद शास्त्रार्थ प्रारम्भ होइत छल आओर ओहि शास्त्रार्थक पश्चात् स्नातकत्वक प्रमाण-पत्र देल जाइत छलन्हि। ओहूसँ एक कठिन परीक्षा प्रणाली छल जकरा 'षड़यन्त्र' कहल जाइत छल। एहि प्रणालीमे तँ छात्र लोकनिकेँ अपन विद्वताक प्रदर्शन जनताक मध्य करए पड़इत छलन्हि। ओहि परीक्षामे केओ हुनकासँ कोनो प्रकारक प्रश्न कए सकइत छल आओर जनता-जर्नादन हुनका उत्तरसँ सन्तुष्ट होइत छलथिन्ह तखने हुनका प्रमाणप्रत्र भेटि सकइत छलन्हि[११०]। प्राध्यापक लोकनिकेँ उपाध्याय, महोपाध्याय, महामहोपाध्याय कहल जाइत छलन्हि। मिथिला विश्वविद्यालयमे चारू वेद, मीमांसा, न्याय, दर्शन, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद आदि विषयक शिक्षा देल जाइत छल। स्मृति आओर न्यायक प्रधानता विशेष छल। मिथिलाक विश्वविद्यालयक संबन्धमे एकटा किंवदन्ती प्रचलित अछि जकर उल्लेख आवश्यक बुझना जाइत अछि। पक्षधर मिश्रक एकटा बंगाली शिष्य रहथिन्ह रघुनाथ शिरोमणि। परीक्षाक अवसर किछु एहेन बात भेल जाहिसँ रघुनाथ शिरोमणिक विद्वता पर चोट पहुंचल। सन्ध्या भेला उत्तर पक्षधर मिश्र अपन आङन गेला आओर पूर्णिमाक इजोरियामे बैसि अपन पत्नीकेँ ई कहइत रहथिन्ह जे आइ हमरासँ एक बड्ड पैघ गलती भ गेल अछि! शास्त्रार्थ कालमे रघुनाथ वेचारा ठीके बजने छल मुदा हम ओकरा काटि देने छलियैक जाहिसँ ओकरा प्रतिष्ठापर अवस्से चोट पहुँचल हेतैक। हम तँ उचित बुझैछी जे हम ओकरा बजाकए ई बात स्पष्ट कहि दियैक। एम्हर रघुनाथ तरुआरि नेने गुरुपर आक्रमण करबाक हेतु झोंझरिमे

(११०) एहि सम्बन्ध देखू प्रो० रमानाथ झाक लेख : Proceedings of the All India Oriental Congress XII Vol. I-PartII

नुकाएल सब बात सुनि रहल छल। पक्षधर मिश्र जहिना अपन स्वीकारोक्ति अपना पत्नीक समक्ष केलन्हि तहिना रघुनाथ अपन तरुआरि फेकि गुरुक चरणपर खसि पड़लाह। अपन मूर्खताके हेतु माँफी मगलैन्हि आओर उद्गार प्रगट कैलन्हि अहाँसन गुरुसँ हमरा इएह आशा रखबाक चाही छल। आइ जँ प्रत्येक गुरु पक्षधरमिश्रक एहि आदर्शकेँ मानि लेथि तँ गुरु-शिष्य सम्बन्ध स्वमेव सन्तोषजनक भ जाएत। रघुनाथ शिरोमणिसँ प्रसन्न भए पक्षधरमिश्र हुनका बंगाल स्वतन्त्ररुपेँ नव्यन्यायक विश्वविद्यालयक स्थापनाक आदेश देलथिन्ह आओर ओहिदिनसँ नदिया नव्यन्याय अध्ययनक प्रधान केन्द्र बनि गेल। नदियाक स्थापनाक उपरान्त मिथिलाक महत्व घटय लागल। स्मृतिक क्षेत्रमे ओहिकालमे चण्डेश्वर, हरिनाथ, भवशर्मण, इन्द्रपति, पद्मनाभ, वाचस्पति आदि छलाहे आओर तैँ मिथिला विश्वविद्यालयमे अहू विषयक अध्ययन पर विशेष जोर देल जाइत छल। मध्ययुगमे मिथिला विश्वविद्यालयक देन महत्वपूर्ण रहल अछि आओर जे मिथिलमे से नहि रहइत तँ आइ संस्कृत एहि अवस्थामे नहि रहि सकैत ?

कला

उत्खननक अभाव मे ई कहब असम्भव जे मिथिला मे कलाक की स्थिति छल। ओना मिथिला-महात्म्य मे तँ बहुत किछु वर्णित अछि[१११] मुदा ओहि आधार किछु निश्चित रूपेँ नहि कहल जा सकैछ। जातक कथामे सेहो किला, राजदरबार आओर बहुत बातक उल्लेख अछि। ई निश्चित रूपेँ कहि सकैछी जे अशोक कालमे उत्तर विहार मे सेहो किछु भवनादि, स्तम्भादिक निर्माण भेल आओर वैशालीमे थोड़ बहुत चैत्य इत्यादि बनल छल कारण पाली-साहित्य मे एकर ठाम-ठाम उल्लेख अछि। पुनः गुप्तकालीन अवशेष मे सेहो किछु मिथिलाक क्षेत्र सँ प्राप्त भेल अछि। माटिक बनल मुरुत तँ पर्याप्त मात्रा मे हाजीपुर सँ पुरैनिया धरि भेटइत अछि आओर एम्हर आब पालकालीन सेहो बहुत मूर्ति वैशाली, उच्चैठ, बलि-राजगढ़, नौलागढ़, जयमंगलागढ़, महिषी, पुर्णिया आओर सहरसा

(१११) देखू हमर लेख: *Mithila as gleaned through Mithila-mahatmya* प्राच्य भारती मन्दार मे छपल।

जिला सँ प्राप्त भेल अछि। पालकालीन मूर्ति तँ एक कला शैलीक अन्तर्गत छल तेँ ओहि मे मिथिलाक वैशिष्टय देखबाक प्रयासे करब व्यर्थ बुझना जाइत अछि। एतेके धरि कहब आवश्यक जे कलाक दृष्टिकोणसँ मिथिला कोनो युगमे बाँझ नहि छल आओर सब युग मे किछु ने किछु कलात्मक वस्तुक निर्माण मिथिला मे होइत रहल। एहिठामसँ प्राप्त जे माँटिक मूर्ति आदि किछु विशेष वस्तु भेटए तखन एहि क्षेत्र मे मिथिलाक किछु देन छल वा नहि से कहल जा सकैछ। मूर्तिकला आओर स्थापत्य कलाक वास्तविक एवं वैशालीक अध्ययन उत्खननक उपरान्त सम्भओ होइछ। स्पूनर महोदय १९१६ मे किछु मंदिरक अध्ययन कए ई सिद्ध करबाक प्रयत्न कएने छथि जे एहिमे मिथिलाक अपन शैली विकसित भेल अछि[११२]। एहि मे जाहि मंदिरक उल्लेख स्पूनर महोदय कएने छथि तकर नाम निम्नांकित अछि—i) वगड़ाक हरमंदिर (चम्पारण) ii) त्रिवेणीक कमलेश्वरी नाथ-मंदिर (चम्पारण) iii) सौराठक महादेवस्थान मंदिर(दरभंगा) iv) अहियारीक रामचन्द्रक मंदिर (दरभंगा) v) सुबेगढ़क भगवती मंदिर (मुजफ्फरपुर) vi) शिवहरक शिव मंदिर (मुजफ्फरपुर) vii) मुजफ्फरपुरक राम-मंदिर viii) सिमराँवगढ़क कंकाली देवीक मंदिर। एम्हर जे बहेड़ा मे उत्खननक फलस्वरुप एकटा मंदिरक आविष्कार भेल अछि ताहि सँ मिथिला-शैली पर सेहो प्रकाश पड़इत अछि[११३]। स्पूनर महोदयक ध्यान कन्दाहाक सूर्य मंदिर दिसि नहि गेलन्हि से बड़ु आश्चर्यक विषय, कारण ओइनवार वंशकालीन स्थापत्यक कन्दाहाक मंदिर एक अन्यतम उदाहरण मानल गेल अछि। भगीरथपुर सँ जे किछु प्राप्त भेल अछि ताहू आधार पर मिथिलाक कलात्मक शैलीक सम्बन्ध मे अध्ययन भ सकइत अछि। मुजफ्फरपुर मंदिरक सम्बन्ध मे स्पूनर साहेब कहने छथि जे 'नवरत्न टाइप' क विशिष्ट उदाहरण अछि।

भवन-निर्माण कलामे सेहो मिथिला ककरोसँ पाछू नहि छल।

---

(११२) *JBORS II* 'Tirhut types of Temple'.

(११३) देखू हमर लेख : *Some recent discoveries in North Bihar* जकर उल्लेख राजनैतिक इतिहासमे भेल अछि।

सिमराँवगढ़क अवशेषसँ कर्णाटकालीन भवननिर्माण कलाक उदाहरण भेटइत अछि आओर एम्हर जे थोड़ बहुत उत्खनन भेल अछि ताहिसँ सेहो कलाक अंग पर प्रकाश पड़ल अछि। १३म शताब्दमे तिब्वती यात्री धर्मस्वामी एतए आएल छलाह से सिमराँवगढ़क विशाल भवन एवं किलाबन्दीक वर्णन कएने छथि। कर्णाट राज्यगढ़ सिमराँवमे जे अवशेष भेटल अछि ताहिसँ ई प्रतीत होइछ जे नीचामे पहिने पाथरक आधार देल जाइत छल आओर ताहि परसँ चिक्कन ईटाक भवन बनइत छल[११४]। अन्धरा ठाढ़ी, भीठ भगवानपुर, सिंहौल, नौलागढ़, जयमंगलागढ़, बलिराजगढ़, बहेड़ा, भगीरथपुर आदि स्थानसँ भवन निर्माण कलाक अवशेष भेटल अछि। पूर्णिया मधेपुरा दिसि जे अवशेष छल से तँ कौशिकीक पेटमे चल गेल। पाथर आओर ईटा पर तरह-तरहक नक्काशी सेहो होइत छल आओर एहने एक ईटा बहेड़ासँ प्राप्त भेल अछि। जाहि पर किछु पर अश्वमेधक घोड़ाक छाप तऽ किछु पर तांत्रिक चक्र। मैथिल संस्कारक अध्ययन एहि वस्तुक माध्यमसँ सेहो भ सकैछ। जतबा जे एखन धरि मिथिलामे प्राप्त भेल अछि तकरा कलाक दृष्टिकोणसँ अन्यतम कहि सकै छी।

मूर्त्तिकलाक क्षेत्रमे सेहो प्रचुर सामग्री भेटल अछि। हाजीपुरसँ पूर्णिया धरि असंख्य मूर्तिकला (पाथर आओर माँटिक)क नमूना सब प्राप्त भेल अछि। वैशाली, लौरिया नन्दनगढ़, अरेराज, पुनौरा, जनकपुर, दरभंगा, भगीरथपुर, देकुली, बहेड़ा, बलिराजगढ़, लदहो, बौराम, बामूर, भीठ भगवानपुर, बरौनी, जयमंगलगढ़, नौलागढ़, बीहट, वीरपुर सहौल, पटुआहा, महिसी, बलबा गढ़हौ, हरदी, परसरमा, अन्धरा ठाढ़ी, श्रीनगर, पुरैनिया, सिकलीगढ़ आदि स्थानसँ प्राप्त विभिन्न युग मूर्त्तिकलाक अध्ययन अपेक्षित अछि[११५]। लौरियानन्दन गढ़ मातृदेवताक स्वर्ण-मूर्त्ति कलाक अन्यतम नमूना मानल गेल अछि। भीठभगवानपुरसँ प्राप्त अनेकानेक मूर्त्तिक साकार रूप विद्यापतिक साहित्यमे देखबामे अबैत अछि। दुख एही बातक अछि जे भीठभगवानपुरक मूर्त्ति एखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि।

---

(११४) देखू *JASB* IV-122-23. (११५) देखू हमरे पूर्वोल्लिखित लेख आओर *G. D. College Bulletin Series Nos. 1, 2, 3, 4.*

पालकालीन कलाक आधारपर कर्णाट आओर ओइनवार वंशक लोक सब प्राचीन मैथिल मूर्त्तिकला-शैलीकेँ जीवित रखने छलाह। ई० पू० छठम शताब्दसँ १५०० ई० धरि मिथिलामे मूर्त्तिकलाक कहियो ह्रास नहि भेल अछि, ई स्पष्टरूपेँ कहल जा सकैछ। मौर्य, शुंग गुप्त, पाल आओर कर्णाट कालमे ई कला अभूतपूर्व छल; एकर उदाहरण तँ मिथिलासँ प्राप्त मूर्त्तिकला अछि। संहौलसँ प्राप्त एक मूर्त्ति गणेशदत्त कालेजक ऐतिहासिक संग्रहालयमे सुरक्षित अछि जे भुवनेश्वर आओर खजुराहोक कलासँ साम्य रखैछ। शिव, दुर्गा, विष्णु, महादेव, सूर्य, स्कन्ध, नन्दी, अष्टमातृक, लक्ष्मीनारायण आओर भिन्न देवी-देवताक मूर्त्ति मिथिला-अंचलसँ प्राप्त भेल अछि। गणेशदत्त कालेजक संग्रहालयमे मौर्य-युगसँ पाल युग धरिक मूर्त्ति सभक नमूना अछि। बहेड़ासँ एकटा काँसाक मूर्त्ति सेहो भेटल जकर बनावट कुर्कीहार मूर्त्तिकला सन छैक। जे एहि सभक प्रकाशन संगठित रूपेँ नहि भेल अछि तेँ एहि दिसि विद्वानक ध्यान एखन धरि नहि गेल छन्हि आओर डा० उपेन्द्र ठाकुर सेहो एहि मूर्त्तिकला पर किछु नहि लिखने छथि।

मिथिलाक अपन वैशिष्ट्य ओकर भित्ति चित्र आओर अपन कलामे छैक जकरा आर्चर महोदय 'मैथिली पेन्टिङ्ग'क संज्ञा देने छथि। अरिपनक आधार तँ ओना पुराणमे सेहो अछि मुदा तंत्रसँ ई-कम प्रभावित नहि अछि। अइपन कोहवर लिखब एक विशिष्ट कला बुझल जाइछ आओर मिथिलाक प्रत्येक नारीकेँ एहिमे सिद्धहस्त होएब उचित बुझना जाइत अछि। सिकी-मौनी, सूप, वर्तन, वासन आदि पर सेहो चित्र बनेवाक प्रथा प्रचलित अछि। अतिप्राचीन कालसँ ई प्रथा मिथिलामे चल आबि रहल अछि। एकरा गृहकला सेहो कहल गेल छैक[११६]। एहिमे तरह-तरहक रंग व्यवहार होइछ जेना गुलाबी, पीअर, हरियर, लाल, सुगा पाँखिक रंग। एक प्रकारक माँटि सेहो ओहन होइत छल जाहिसँ रंग तैयार कएल जाइत छल। कोबरा-सरबाक चित्र सेहो जाहि दिनमे बनइत छल आओर हमरा लगमे बरौनीसँ प्राप्त एकटा पाण्डुलिपिक प्रथम पृष्ठ अछि जाहि पर मड़बाक चित्र बनल अछि आओर बरपक्ष तथा कन्यापक्षक लोक पाग पहिरने ओहि पर बइसल

(११६) एहि लेल देखू *मार्ग* III No. 31 पृष्ठ २५

छथि। एहि पृष्ठकेँ हम बहुत महत्वपूर्ण मानइत छी कारण एहेन पाण्डुलिपि हमरा कतहु देखबामे नहि आएल अछि। ई पाण्डुलिपिक पृष्ठ छान्दोग्य विवाह पद्धतिक पाण्डुलिपिक एक पृष्ठ थीक। कागत पर चित्र बनाएब सेहो मिथिलाक पुरान कला थीक आओर बारहम शताब्दक एक पाण्डुलिपि पर एक ताराक चित्र बनल अछि जाहिमे तीरभुक्ति आओर वैशाली दुहुक उल्लेख अछि। भित्ति-चित्र, कोहबर, अइपन आदिमे दुर्गा, सीता, काली, राधा, रामकृष्ण शिव आदिक चित्र बनइत अछि आओर मिथिलामे एहेन कोनो उत्सव नहि होइत अछि जाहिमे चित्रादि नहि बनइत हो। सूर्य, चन्द्रमा, बाँस, कमल, तोता, मैना, माँछ इत्यादिक प्रयोग सेहो एहि सब चित्रमे होइत छैक। चित्र बनेबाक पाछाँ एक विशिष्ट कथा साहित्य जुटल अछि जकर संग्रह आओर अध्ययन अपेक्षित बुझना जाइत अछि। आर्चर महोदय सबहिक जे किछु विश्लेषण कएने छथि से संक्षेपे कहल जाएत कारण एखनो एहि क्षेत्रमे सब काज बाँकिये अछि।

मध्ययुगमे संगीतक क्षेत्रमे सेहो बेश प्रगति भेल छल। मिथिलामे नान्यदेवक शासनकालमे नान्यदेवक प्रयासेँ संगीतमे बहुतरास नवीन राग आओर भासक प्रयोग शुरु भेल। नान्यदेव स्वयं एक महान संगीतज्ञ छलाह। सारंगदेव अपन 'संगीत रत्नाकर'मे एहि बातक उल्लेख कएने छथि। नान्यदेव स्वयं 'सरस्वती हृदयालङ्कार' नामक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ सेहो लिखने छलाह। श्रीधरदासक अन्धराठाढ़ी लेखमे कहल गेल अछि जे नान्यदेव 'ग्रन्थमहार्णव' नामक पोथीक रचयिता सेहो छलाह। नान्यदेव स्वयं १६० राग सभहिक वर्णन कएने छथि[११७]। नान्यदेवक स्थापित कएल परम्परा संगीतक क्षेत्रमे चलिते रहल आओर एक पर एक संगीतज्ञ मिथिलामे होइत गेलाह। पुरुष परीक्षाक एक कथासँ ई ज्ञात होइछ जे हरसिंहदेव सेहो स्वयं पैघ संगीतज्ञ छलाह। सिंह भूपाल, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, जगज्ज्योतिमल्ल आर लोचन प्रसिद्ध संगीतज्ञ भए चुकल छथि। विद्यापति आओर लखिमाक नाम सेहो एहि क्षेत्रमे अमर रहत[११८]। शिवसिंह जयत नामक एक कायस्थकेँ

(११७) देखू *Journal of the Andhra Historical Research Society* I-62. (११८) देखू Dr. B. B. Majumdar क लेख *Indian Nation* Pooja No. 1947

विद्यापतिक गीत सभकेँ लयमे करबाक आदेश देने छलथिन्ह। संगीतक क्षेत्रमे मिथिलाक अपन अलग शैली छल। मैथिल लोकनि संगीतमे कतेक पारखी होइत छलाह तकर पता वर्णरत्नाकरक भाटवर्णना कल्लोलसँ लागि सकैछ जाहिमे ७ प्रकारक गायन दोष आओर १४ प्रकारक गीतिदोषक उल्लेख अछि। पेशेवर गवैयाकेँ विद्यावन्त कहल जाइत छल। वर्णरत्नाकरमे नृत्यवर्णनाक उल्लेखक संगहि संग लोरिक नाचक उल्लेख सेहो अछि। ढोल क विभिन्न प्रकारक रस आओर तालक वर्णन सेहो कैल गेल अछि। जगधर अपन संगी सर्वस्वमे सेहो मैथिल संगीत शैली विशद विश्लेषण कएने छथि[११९]। मिथिला संगीत शैलीक क्षेत्रमे घनश्यामक श्रीहस्तमुक्तावली सेहो प्रसिद्ध मानल गेल अछि[१२०]। संगीतक क्षेत्रमे वंशमणिझाक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि। लोचन अपन रागतरङ्गिणीमे मैथिल रागक सम्बन्धमे निम्नलिखित उद्गार प्रगट कएने छथि।

श्रीमद्विद्यापतिकवयितुः काव्यार्णानुवद्धांस्तत्तत्प्रायानथतदनुगख्यात
गीतैर्विद्वान्।
रागानेभ्यः कथमपि तथा वर्तुलीकृत्य धीमाना
प्रेम्णाल्ली मन्नापरितोलोचनस्तांल्लिलेख (७.३४)

रागक उल्लेख

ललिता विभासी तदनु भैरव्य हिरानि वराड़ी च।
गोपीवल्लभ गुजरी रामकली कापशारङ्गी॥
कौशिक कोराराख्यौ वसन्तो धनछी तथा।
असावरी च श्रीरागो गौड़ा मालव मालवौ॥
भूपाली राजविजयना यः कामोददेशाखौः
केदारोऽथ मलारी इत्येते मैथिलाः कथिताः

मैथिल रागक प्रचार ओहिकालमे नेपाल, गोरखपुर, बंगाल आओर आसामधरि भेल छल। संगीत आओर नृत्यकला मध्ययुगमे मिथिलामे

(११९) *JBORS* XIV. 2 (१२०) *Nepal Catalogue* p. 270

चर्मोत्कर्षपर छल आ ओर एकर साक्षी ज्योतिरीश्वर छथि। नृत्यक क्षेत्रमे कीर्तनिया नृत्यक विशेष प्रचलन छल। एकप्रकारक नृत्यक वर्णन ज्योतिरीश्वर कएने छथि। शुभंकरठाकुर नृत्य विद्या पर एक महान ग्रंथ लिखने छलाह। हिन्दी विश्वकोषमे लिखल अछि जे मैथिली गवैया लोकनिके त्रिपुराक राजाक ओतएसँ बजाओल जाइत छलन्हि। (द्रष्टव्य–हिन्दी विश्वकोष–खण्ड–१०–पृष्ठ ४०)। संगीतमे मिथिला-शैलीक विकासक हेतु लोचनक रागतरंगणी एक अनिवार्य्य ग्रंथ बुझना जाइत अछि किएक तं एहिमे काव्य आओर संगीत कलाक विश्लेषण भेल अछि। लोचन स्वयं एक बड्ड पैघ संगीतज्ञ छलाह आर मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासमे हुनक स्थान अग्रगण्य अछि। आ नाम अमर।

परिशिष्ट : क

मिथिलासँ प्राप्त किछु हिन्दू आर मुस्लिम अभिलेख

(१) अशोकक पंचम स्तम्भलेख (रमपुरवा : चम्पारण)

१ देवानं पिये पियदसि लाज हेवं आह। सड्वीसति साभि सितेन मे इमानि पि जातानि अवध्यानिकयनि। सेयथ २ सुके सालिक अलुने चकवाके हँसे नंदीमुखे गेलाहे जतूक अंबाक पिलिक दुग्ले अनठिक मछे वेदवेयके ३ गंगा पुपुटके संकुज मछे कफट सेयके पंन-ससे सिमले संडके ओक पिंडे पलसते सेन कपोते ४ गाम कपोते सबे चतुपदे ये पटिभोगं नो एतिन च खादियाति। अजका नानि एलका च सूकली च गभिनीव ५–पाय-मीना व अवध्य पोतके च कानि आसं मासिके। विधि कुकुटे नो कट विये। तुसे सजी वेनो झापयित विये। ६ दावे अनठाये व त्रिहिसाये व नो झापयि-तविये। जीवेन जीवे नो पुसितविये। तीसु चातुंमासु तिस्यं पुंनमासियं ७ तिंनि दिवसानि चम्वुदसं पंनडसं पटिपदं घुवाये च अनुपोसथं मछे

अवध्ये नोपि विकेतविये । एतानि येव ८ दिवसानि नाग वनसि केवट भोगसि यानि अंनानिपि जीवनिका यानि नोहं तवियानि । अठमि पखाये चावु दसाये ९ पंनऽसाय तिसा ये पुनावसुने तीसु चातु मासीसु सुदिवसाये गोने नो निलाखेतविये । अजके एलके सूकले १० एवापि अं ने नीलखियति नो नीलखित विये । तिसाय पुना वसुने चातु मास-पखाय अस्वस गोनस ११ लखने नो कट विये । याव सडुवीसति वसाभि सितेन मे एताये अंतलिकाये पंन वीसति बंधन मोखानि कयनि ।

(२) अशोकक षष्ठम स्तम्भ लेख (रमपुरवा : चम्पारण)

१ देवानं पिये पियदसि लाज हेवं आह । दुवाऽस वसाभि सितेन मेधंमलिपि लिखापित लोकस हित सुखाये । से तं अपहट २ तं तं धंम बढ़ि पापोव । हेवं लोकस हित सुखे ति पटिवेखामि अथ इयं नातिसु हेवं पत्यासंनेसु हेवं अपक ठेसु/किंमं कानि ३ सुखं आव हामी ति तथा च विदहामि । हेमेव सर्वकायेसु पटिवेखानि । सवपासंग पिमे पूजित विवधाय पूजाय । ए चुइयं । ४ अतन पचूप गमने से मे मोख्यमुते । सडुवीस वसाभि सितेन मे इयं धंम लिपि लिखापिती ।

(३) वैशालीसँ प्राप्त किछु महत्वपूर्ण शिलालेख

१ ध्रुवस्वामिनीक मुद्रा अभिलेखे महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त पत्नी श्री गोविन्द गुप्त माता श्री ध्रुव स्वामिनी (एहि पर शीघ्रहि हमर लेख प्रकाशित भए रहल अछि ।) २ घटोत्कच गुप्तस्य

(४) संघ श्रेणी एवं राजकर्मचारी लोकनिक मुद्रा-लेख

१ कुमारामात्याधिकरणस्य । २ युवराजपादीय कुमारामात्याधिकरण । ३ श्रेष्ठिसार्थवाहकुलिकनिगम । ४ श्रीयुवराजभट्टारकपादीय कुमारामात्याधिकरणस्य ५ श्रीपरमभट्टारकपादीय कुमारामात्याधिकरण । ६ युवराजभट्टारकपादीय......काधिकरणस्य ७ युवराजभट्टारकपादीय बालाधिकरणस्य ८ श्रीरणभाण्डागाराधिकरणस्य ९ दण्डपाशाधिकरणस्य १० महाप्रतिहार तरवर विनयशूरस्य

११ महादण्डनायक अग्निगुप्तस्य १२ भट्टास्वपति यज्ञवत्सस्य १३ तीरभुक्तयौ परिकाधिकरणस्य १४ तीरभुक्तौ विनयस्थितिस्थापकाधिकरणस्य १५ तीर-कुमारामात्याधिकरणस्य १६ उदानकूपे परिषद: १७ वैशाल्याधिष्ठानाधिकरण १८ वैशाल्यामरप्रकृतिकुटुम्बिनाम् १९ वैशाल विषयाः २० श्रेष्ठकुलिकनिगम् २१ वैशाली अनुटकारे सम्यानक २२ सुजातर्षस् २३ आम्रातकेश्वर २४ श्रीविष्णुपाद स्वामीनारायण २५ जयत्यानन्तो अभवान साम्बा २६ जितं भगवतोनन्तस्यनन्देश्वरी वरस्वामिनः २७ नमः पशुपतेः २८ रविदास २९ भगवतादितस्य ३० राज्ञोमहाक्षत्रपस्य स्वामीरुद्रासिंहस्य दुहितु राज्ञोमहाक्षत्र-पस्य स्वामीरुद्रसेनस्य भगिन्या महादेव्या प्रभुदमायाः।

३१ देयधर्मोयम् प्रवर महायानायिनः करणिक उच्छाह माणकस्य सुतस्य यदत्रपुण्यं तद्भवत्वचर्योपाध्याय मातापित्रोरात्मनश्च पूर्वंगमं कृत्वा सकल-सत्वरासे रनुत्तरज्ञानावाप्रै यति।

३२...कुमारामात्याधिकरणश्च सर्व्वंग विषये ब्राह्मणाद्यपुरस्सरान् वर्त-मानान्भाविनश्च श्रीसामन्त.......विषयपतिन्साधिकरणान्.......व्यवहारी जन-पदान बोधयत्यस्तु वो विदितम।

३४ श्री लोकनाथस्य

३५ ल०सं० २३९ शोधरवली श्री चण्डेश्वरस्य कीर्ति —

एहि मे लक्ष्मण सम्वत् देल अछि ताहि आधार पर एकरा महामत्तक चण्डेश्वरक अभिलेख मानि सकै छी।

५ किछुदिन पूर्व मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत कटरा थाना सँ पाँचम छठम शताब्दक एकटा ताम्रलेख भेटल अछि जे गुप्तकालीन थीक आओर जाहि तीरभुक्तिक उल्लेखक संगहि संग चामुण्डा विषयक उल्लेख सेहो अछि। ई अभि-लेख आओर चम्पारणसँ प्राप्त तीन-चारिटा ताम्रलेख अप्रकाशित अछि आओर ई पटना प्रमण्डलक विद्वान आयुक्त श्रीश्रीधरवासुदेवसोहनी संग छन्हि। आशा अछि जे ओ शीघ्र एहि सभ अभिलेख केँ प्रकाशित करौताह।

६ गुप्तकालीन एकटा मुद्रा (माटिक) हमरा बेगूसराय मे प्राप्त भेल छल जाहिमे एकपीठ पर गुप्ताक्षर मे लेख अछि आओर दोसर पीठ पर मिथिलाक्षर मे आओर लं०सं० क उल्लेख सेहो अछि। (मुद्रा क गुप्ताक्षरवाला लेख) सुहमाकस्य सुहमाकस्य (मिथिलाक्षरवाला लेख) सं० ६७ द्यौ पौर्शदिने नगम केदत्तम् दूभम् शाध्येच्यैकेः केशवापदे इति—ई मुद्रा हमरा लग अछि।

एकर अतिरिक्त बुद्ध मंत्र—ये धम्महेतु प्रभवा"""" आदि लिखल ढेरक ढेर मूर्ति मिथिलामे भेटइत अछि।

८ पालकालीन मिथिलाक शिलालेख

(i) भागलपुर कौपरप्लेट मे तीरभुक्ति आओर कक्ष विषयक उल्लेख अछि आओर ओहिमे कहल गेल अछि जे तीरभुक्तिमे हजार शिवमन्दिरक निर्माण भेल छल (ii) इमादपुर (मुजफ्फरपुर जिलासँ प्राप्त) अभिलेख। महिपाल प्रथमक अभिलेख ॐ श्रीमान महिपाल देव राजसम् ४८ ज्येष्ठ दिने सुकलपक्षे २ आलै चकोऽरि माहवसुत साहि देवधर्म्म (iii) वनगाँव (सहरसा) सँ प्राप्त विग्रहपाल तृतीयक ताम्र अभिलेख :

(पाँति २४) : काञ्चनपुर समावासीता श्रीमञ्जय स्कन्ध वारात परम सौगतो महाराजाधिराज श्रीमन्नयपालदेव पादानुध्यातः परमेश्वरः परम भट्टारको २५ : महाराजाधिराजः श्रीविग्रहपाल देवः कुशली। तीरभुक्तौ हौद्रेय वैषयिकवसुकावर्तात। यथोप्तत्या पंचशति कांशे॥ २६ : समुपगता शेष....३७–शाण्डिल सगोत्राय। ३८ शाण्डिल्यासित देवल प्रवराय। नरसिंह सब्रह्म चारिणे। छन्दोग शाखाध्यायिने। मीमांसा व्याकरण तर्क विद्याविदे। ३९–कोलाञ्च विर्निगताय। इट्टाहाक वास्तव्याया योग स्वामी पौत्राय। तुंग पुत्राय। श्री घन्टुक शर्मणे। विषुवत संकान्त्याम्। विधिवत। गं। ४० गायाम् स्नात्वा शासनी कृत्य प्रदतास्माभिः।

(iv) नौलागढ़ (बेगूसराय) सँ प्राप्त विग्रहपाल तृतीयक अभिलेख सिद्धम्

श्री विग्रहपाल देव राज्ये सम्वत् २४ क्रिमिलिया शौण्डिक महामती दुहित्रा धाम्मजिपल्या आशोकया कारिता॥

(v) नौलागढ़सँ प्राप्त दोसर अभिलेख

नमोधर्माय......श्रद्धा कारुण्य संभेदरदान मस्तुम् माये पुण्यधारां। भिक्षा भुजामित्यमायधतुमत्त । वाट (वदि)... आश्रय मान्वता यर्द् वध (च) स्वाहा (or श्रद्धा) क्रौद्वोचिन्ता....भा...वमद...दमल व्यवस्थिताह.... श्रद्धाया भाव (च)...यद् गृहादि (धै)....याद दक....विहार...एहि अभिलेख सँ संदिग्धरुपेँ ई बुझना जाइत अछि जे पालकाल मे मिथिलामे नौलागढ़ अंचलमे कोनो एकटा बौद्ध विहार अवश्य छल।

अन्यान्य अभिलेख

पंचोभ ताम्रलेखक किछु अंश

पांति १—श्री संग्रामगुप्तः २—ॐ स्वस्ति परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर, परममाहेश्वर, वृषभध्वज्, सोमान्वयजार्जुन वंशोन्न जयपुर ३—परमेश्वर महामाण्डलिक श्रीराजादित्य गुप्तदेव पादानुध्यात राजपुत श्रीकृष्णगुप्त सुत परमभट्टारक महाराजाधिराज ४—परमेश्वर परममाहेश्वर वृषभध्वज सोमान्वयजाज्र्जुन वंशोद्भव जयपुर परमेश्वर महामाण्डलिक श्रीमत् संग्रामगुप्त देवपाद प्रवर्द्धमान विजयराज्ये ५—सप्तदश सम्वत्सरे कार्तिक कृष्ण नवम्यां तिथौ श्री मज्जयस्कन्धवारात् अयदेव महाराजाधिराज महामाण्डलिक श्रीमत् संग्रामगुप्त देवोविजयी....

६—७—महासान्धिविग्रहिक, महाव्यूहपति, महाधिकारिक, महामुद्राधिकारिक महामतक, महापीलुपति, महासाधनिक, महाक्षपटलिक, महाप्रतिहार, महाधर्माधिकरणिक, महाकरणाध्यक्ष, ८—वार्तिनैबन्धिक, महाकटुक, महौत्थिक, तासनिक, महादण्डनायक, महादानिक, महापंचकुलिक, महासामन्तराणक, महाश्रेष्ठिदानिक, धूलिदानिक, घट्टपाल, खण्डपाल, नरपति, गुल्मपति, ६—नौ बलव्यापृत गोमहिष वड़बाध्यक्ष राजपादोपजीविनो.......
११—...........समस्तपीड़ोपकर वर्जितो अचाटभट प्रवेशो महतानुग्रहेण

एहि अभिलेखमे शासन सम्बन्धी बहुतो एहेन शब्दक उल्लेख भेल अछि जकर विश्लेषण एखनो धरि फरिछा केँ नहि भेल अछि। ई सब अभिलेख हमर Selected Inscription of Bihar मे प्रकाशित अछि।

आसीक (महिआहीक) पाथर-लेख

जातो वंशे विल्व पंचाभिधाने धमाध्यक्षो वर्द्धमान भवेशात्। देवास्याग्रे देवयष्टि ध्वजाग्रा रूढँ कृत्वाऽस्थापय द्वैन तेयम् ॥

एहि मे नैयायिक वर्द्धमानक उल्लेख भेल अछि।

तिलकेश्वरगढक अभिलेख

अब्देनेत्र शशांकपक्ष गणिते श्री लक्ष्मणाक्ष्मपतेर्मासि श्रावण संज्ञके मुनि तिथौ स्वात्यांगुरुशोभने। हावीपतन संज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवा कर्मादित्य सुमंत्रिणेह विहिता सौभाग्यदेव्याज्ञा-

एहि अभिलेख मे रानी सौभाग्यदेवी, मंत्री कर्मादित्यक उल्लेखक संगहि हैहट्ट भगवतीक उल्लेख सेहो भेल अछि।

खोजपुरक अभिलेख

एक महत्वपूर्ण अभिलेख खोजपुरक दूर्गाक मूर्त्ति पर अछि जाहि मे ल०-सं० १४७क उल्लेख भेल अछि आओर मदनकपुत्र सूर्यकरक नाम सेहो उल्लिखित अछि।

कन्दाहाक अभिलेख

कन्दाहा अभिलेखक उल्लेख पूर्वहि राजनैतिक इतिहास मे भए चुकल अछि। स्मरणीय अछि जे एहू अभिलेख मे 'विल्वपंचकुलोद्भुत' शब्द व्यवहृत अछि जे वर्द्धमानक आसीक अभिलेख मे अछि।

भगीरथपुरक अभिलेख

पांति १—स्नुषाहरिनारायणक्षितिपतेर्गतेः क्ष्माभृतां बधून्नृपतिमण्डलीमहितराम भूमीपतेः २—द्विजोत्तम सुखप्रदानृपति कंसनारायण प्रवीरजननीमुदा मठमधीकरत सुन्दरम्। ३—दानैर्य्या दलयाम्बभूव जगतां दारिद्र्यमत्युत्कटं कीर्त्यायाः सुन्दर तरान् लोकांश्चकारायुतान। ४—किञ्चोच्चैर्विनयान्नयाश्च वशतां नीतोयया बान्धवाः सेयं विश्वविलक्षणोज्वल गुणग्रामा मठं निर्ममे। ५—वेदरन्ध्रहरनेत्र चिन्हिते लक्ष्मणस्य नृपतेर्म्मतेब्दके। विश्वविश्रुतगुणागुणालयं देवतालय मर्मुमुदाऽकरोत।

६—कविता माधव सुकवेः कीर्तिदेव्याः सुधाम्बुधि स्फीता। त्रिभुवन भुवनाभोगेः विलसतु कल्पान्तपर्यन्तम्॥ ७—देवीदेवालयमियममुं कारयामास कृच्छे भक्त्या नक्तं दिनमथमति""क्ता। यैषां शेषे जगति जागतीनाथ नायस्य योषा भूषा भूता विविध विधया रुपनारायणस्य। ८—धन्वा का कीर्तिरस्या कुलधर कविता कीर्तनीयानुमत्या लक्ष्मीः सा कापि लक्ष्मीधरमुपगता माधवाराधनाया। सूनुर्जिययान् यदीयो यवनपयिभयाधाकस्तीरभुक्तौ राजाराजाधिराजः समरः"""सः कंसनारायणौ सौ""श्रीमदनुमतिदेबी नामाज्ञयाः—मिथिलाक राजनैतिक एवं साँस्कृतिक इतिहासक दृष्टिकोण सँ ई अभिलेख बड्ड महत्वपूर्ण अछि।

श्रीनगर (मधेपुरा)क अभिलेख

मगरध्वज योगी ७०० इयह अभिलेख एकटा अन्धराठाढ़ीमे सेहो अछि।

वरांटपुर (सहरसा)क अभिलेख

श्रीमन्माहेश्वरी वरलब्ध सत्क्रिया विराजमान बुद्धेश वंशस्य सदा चन्द्रराज श्रीमत् सर्व्वसिंहदेव विजयी

लदहो विष्णुमूर्त्तिक पादुका लेख

(एखनधरि अप्रकाशित छल) श्रीरामनाथ राजन्यो विष्णुः सेवक सेवकः स्वरेर देव तलयो विष्णुर्नाम करिष्यति।

मिथिलामे एखनो असंख्य लेख सब चारुकात छिड़िआएल पड़ल अछि तैँ प्रत्येक मैथिलक ई कर्तव्य होइछ जे ओ लोकनि एहिदिसि ध्यान दए ओकर संग्रह करथि। जे शिलालेख सब राजनैतिक इतिहासवाला खण्डमे छपि चुकल छल से एहिठाम नहि देल गेल अछि।

१० मिथिलासँ प्राप्त किछु मुस्लिम अभिलेख

(i) महेशवारा (बेगूसराय)सँ प्राप्त १२६१ ई० एकटा अरबी शिलालेख १९५५ मे प्राप्त भेल जे भण्डारकर शोधसंस्थान (१९५६) मे प्रकाशित भेल अछि। एहिमे विशाल भवन बनेबाक उल्लेख अछि। ई लेख बंगाल सुलतान रुकबुद्दीन कैकाउसक समय थीक। (ii) तुगलककालीन वेदीवन

(चम्पारण)क अभिलेख १ तमाम शुद इन हलकाते - उल - अक्ताब - उल अकबर २ दर अहाद इसद्दान शाह - इ - अदिल शाह मुहम्मद ३ बिन तुगलक शाह लजलामुलकोहुब दौलतहु ४ अनाम बजैल इज्जुद दौलत वद्दीन ५ काजी - इ - मुहर - खासब जिकरुल्लाह बकर ६ वोएन वन्दाह महमुद विनु युसुफ अलमुलकावा ७ विष्टुम मह - इ - रबिउल अव्वल सनत सब ब अरबीनव सब मयत—

वेदीवन अभिलेख बड्ड महत्वपूर्ण अछि। हिन्दू लोकनि बहुत दिनधरि एकरा 'भगवानक चरणपाद' कहि पूजा करइत रहथि। ई शिलालेख महमुद तुगलक कालक थीक (हिजरी ७४७=१३४६ ई०) एहिसँ निश्चित रूपें ई प्रतीत होइछ जे १३४६ मे चम्पारण धरि तुगलक शासनक प्रमाण भेटइयै।

दरभंगासँ प्राप्त मुहम्मद तुगलकक अभिलेख

—कल्लताह ओतलमनजा विलहसनत फलहु अश्र अम्सलह बिन मस्जिद अलमुजाहिद फी साबीलिल्लाह मुहम्मद बिन अस सुल्तान अस सइद इस शहीद इल गाजी गियासुद्दुनिया वद्दीन अनरुल्लाह बुरहानहु इज सोयलत अन तारिख - ई - बेन एही फकुल हवाल मस्जिद अल अक्स फिसानत इ सित ब इशरीन बसबा मयात अल हिजरिय उन नबुबः ७२६—

—ई अभिलेख मुल्ला तकियाक बयाज मे सुरक्षित अछि आओर पटनाक मासिर पत्रिका मे छपल छल (१६४६ ई० मे)। अभिलेख सँ ई प्रतीत होइछ जे महम्मद तुगलकक आदेशानुसार दरभंगा मे एकटा विशाल मस्जिद हिजरी ७२६ मे बनल छल। हरिसिंहदेव पराजित भए चुकल छलाह। तुगलककालीन टूटा सिक्का सेहो भेटल अछि जाहिपर तुगलकपुर उर्फ तिरहुत लिखल अछि।

दरभंगासँ प्राप्त इब्राहिमशाह शार्कीक अभिलेख

कलन नबिया सल्लालाहु अलैहा वसल्लम मम बिन मस्जिद अल्लाह बिनल्लाह लहु वैतन फिल जन्नत ही विन हजल मस्जिद फी जमनल इमाम नायब-उलखलीफा अमीरुल मुमीनीन अबुल फतह इब्राहिम शाह अस सुलतान खलदह खिलाफत तहु क्षनत खस व समन मयत ८०५—

ई अभिलेख बहुत महत्वपूर्ण अछि कारण (८०५–१४०२–३) इब्राहिमशाहक लेख मिथिलाक केन्द्रमे भेटल अछि आओर एहिसँ ई प्रमाणित होइछ जे शर्की लोकनि दरभंगापर अधिकार प्राप्त कएने छलाह— ओहि वर्ष दरभंगा बाटे इब्राहिमशाह बंगाल जाइत छलाह आओर हुनक उद्देश्य छल शिवसिंहकेँ परास्त करब कारण शिवसिंह बंगालक राजा गणेशक साहाय्य कए रहल छलथिन्ह। एहि सम्बन्धमे प्रो० अस्करीक लेख *Bengal Past and Present* मे छपल अछि।

बंगाल सुलतान नसीर शाहक अभिलेख

(बेगूसराय–मटिहानीसँ प्राप्त)

बिसमिल्लाह इर रहमान इर रहिम नसरुन मीनल्लाह व फथुन करीब। हजल मस्जिद अल जमायउल मुअज्जम नसीरशाह अस सुलतान खल्ल दल्लह वो मुलकहु व सलन्तहु।

—इ ओहि नसीरशाहक अभिलेख थीक जे मिथिलाक ओइनवार वंशक अन्तिम शासककेँ पराजित कएने छलाह।

परिशिष्ट ख

१२३४-३६ ई० क मध्य तिब्बतसँ एक यात्री आएल छलाह जनिक भारतीय नाम धर्मस्वामी छलन्हि। ओ तिरहुतमे कर्णाट राजा रामसिंहदेव सँ भेंट कएने छलाह आओर रामसिंहदेवकालीन मिथिलाक बहुत सुन्दर वर्णन एहिमे अछि। 'धर्मस्वामीक जीवनी'क सम्पादन प्रसिद्ध रूसी विद्वान डा० जी० रोयरिक कयने छथि आओर एकर प्रकाशन पटनास्थित काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थानसँ प्रकाशित भेल अछि। हम ओहि पोथीमेसँ किछु ओहन अंश एहिठाम दए रहल छी जाहिसँ तत्कालीन मिथिलापर प्रकाश पड़ैछ :

P. 58:—In this Country (Tirhut) there was a town called PA—TA, which had some 600,000 houses and was surrounded by seven walls........outside of the town walls stood the Raja's palace which had eleven large gates and was surrounded by twentyone ditches filled with water and rows of trees. There were three gates facing each direction, East, West and South, and two gates facing North........guards were stationed, more than ten archers at each bridge. These protective measures were due to the fear of the Turushkas........who during the year had led an army but failed to reach it. It was also said that there were three men experts in swordsmanship. The Rājā owned a she-elephent. P. 60—Ma—hes (महिंसक उल्लेख) —non-Buddhist kingdom of Tirhut. P. 61—uninhabited border of Vai'sāli. There exists a miraculous stone image of the Āryā Tāra with her head and body turned towards the left, foot placed flat, and the right foot turned sideways, the right head in the varamudra and the left hand holding the symbol by the Three Jewels in front of the heart...........they were told that the inhabitants were in a state of great commotion and panickstriken because of rumours of Turushka troops. P. 62—When they had reached the Vaisali, all the inhabitants had fled at dawn from fear of the Turushka soldiery........the soldiery left for western India P. 98—According to Dharmawami one *pana* equalled to eighty Cowries........At that time he was in possession of an extraordinary manuscript.

P. 99.—....the owner of the house stole the book—fell ill in Trihut (on his return Journey)—The tantric treated me....and I did not die....The Tantric appears to have been a manifestation of the four Armed Protector.

P. 100 –....he was told that the Rājā or the Pata city was coming to the sheet corner. The Rājā was

accompanied by a crowd of drummers and dancers with banners, buntings, brandishing fans, and sounding conches and various musical instruments. All the house tops and street corners were ever hung with silk-trappings. The Rājā named Ramasimha was coming riding, on a she-elephent, sitting on a throne adorned with precious stones, and furnished with an ornamented curtain. The Dharmaswamin received an invitation from the Minister, who said, "please come ! If you do not come in person the Rājā will punish you. The Rājā comes to the sheet-corner only once in a year, and there is a pageant." The minister sent a sedan chair (Doli) for the Dharamswamin, who went to meet the Rājā. The Dharmaswamin greeted the Rājā in Sanskrit s'lokas and the Rājā was very much pleased and presented the Dharamswamin with some gold, a roll of cloth, numerous medicines, rice, and many excellent offerings, and requested the Dharamswamin to become his chaplain but the Dharamswamin replied that it was improper for him, a Buddhist, to become the Guru of a non-Buddhist. The Rājā accepted it, and said —"well, stay here for some days !" The Dharamswamin said that the Rājā honoured him with numerous requisites. P. 101—Among the large gathering of people in the town of *PA—TA* in Tirhut, the Dharamswamin met with some Nepalese whom he had met previously.'

एहि पोथी सँ मिथिलाक साँस्कृतिक जीवन पर बहुत प्रकाश पड़ैत अछि। एहि पोथी मे जे 'वैवर्त लिपि'क उल्लेख अछि सैह आधुनिक मैथिली लिपि थीक।

शिल्पशास्त्र, चिकित्सा, दर्शन, व्याकरण, न्याय, मण्डल इत्यादिक अध्ययन ओहि युग मे होइत छल।

कालिदास सम्बन्धी किंवदन्ती एहि पोथी मे अछि आओर चन्द्रकीर्ति आओर चन्द्रगोमिनक शास्त्रार्थक चर्चा सेहो। प-ट-कें डा०

अल्तेकर सिमराँवगढ़ मानने छथि जे हमरो मान्य अछि। एहि आधार पर आब जँ ओतए उत्खनन होअए तँ बड्ड लाभदायक होएत।

तिरहुत मे तान्त्रिक चर्च अछि। एक चरित्रहीन एवं हठी स्त्रीक उल्लेख सेहो अछि।

एहि सँ लक्ष्मणसेन सम्वत् सन्बन्धी अध्ययन मे साहाय्य भेटइत अछि। मिथिला मे कुसियारक खेती खूब होइत छल। काली मंदिरक समक्ष बलिदानक प्रथा प्रचलित छल। छूआछूतक प्रथा छल आओर अछूत लोकनि अपन कान नहि छेदबइत छलाह। अछूत सँ देखल वा छूअल अन्न पैघ वर्णक लोक नहि खाइत छलाह। पान खेबाक प्रथा छल आओर मैथिल लोकनि ताम्बुल विन्यास मे प्रवीण छलाह। खुरचन-डोकाक चून बनइत छल आओर ओहि मे कै प्रकार सुगन्धित मशाला मिलाओल जाइत छल। भीजल कपड़ामे पान लगा कें राखल जाइत छल। दाँत रंगबाक हेतु सुरतीक व्यवहार होइत छल। टाकाक प्रचलन छल आओर एक पण ८० कौड़ीक बराबर होइत छल

परिशिष्ट ग

प्राकृतपैंगलम्मे किछु मैथिली शब्द

मैथिली भाषा आओर साहित्यक स्थान भारतीय भाषा मध्य महत्व-पूर्ण छैक। कलकत्ताक मैथिली संघ द्वारा प्रकाशित विद्यापति-पर्व-अंक क १९६१क अंक मे हमर एक निबन्ध प्रकाशित भेल अछि : प्राक् विद्यापति कालीन मैथिली। जाहि मे हम मैथिलीक प्राचीनता पर अपन विचार संक्षेप मे रखने छी तैं ओकरा एतए दोहराएब उचित नहि बुझना जाइत अछि। मैथिली लिपिक प्राचीनताक सबसँ पैघ प्रमाण इएह जे 'ललित विस्तर' मे एकर उल्लेख अछि; आदित्यसेन (सातम शताब्द)क अभिलेख एहि लिपि मे अछि, धर्मस्वामीन एकर उल्लेख वैवर्त लिपिक नामे कएने छथि; ल० सं०

६६क एक माटिक मुद्रा पर मिथिलाक्षर लिखल भेटल अछि; खोजपुर (दरभंगा) सँ ल०सं० १४७क—एकर अतिरिक्त मिथिला सँ जतेक अभिलेख आओर सिक्का लेख भेटल अछि सब मैथिली लिपि मे अछि-तैं एकर वैज्ञानिक अध्ययनक आवश्यकता मित्रवर आचार्य परमानन्द शास्त्री मैथिली लिपिक वैज्ञानिक अध्ययन मिथिलामिहिरक पृष्ठक माध्यम सँ प्रस्तुत कएने छथि जे स्तुत्य अछि। अकबरकालीन मिथिलाक्षरक एक अभिलेख एखन हालहिमे गोड्डा (संताल परगना) क एक मन्दिरसँ प्राप्त भेल अछि आओर ओकर प्रतिलिपि काशीप्रसाद जायसवाल संस्थान, पटना मे सुरक्षित अछि।

लिपिक संगहि मैथिली भाषा सेहो बड्ड प्रचीन अछि आओर सिद्ध लोकनिक भाषा एकर सबसँ पैघ प्रमाण थीक। तिब्बती बौद्धधर्मक प्रसिद्ध रूसी विद्वान् वसिलज्यु (Wassiljeu) अपन एक लेखमे एकठाम लिखने छथि जे सिद्ध कवि लोकनि अपन - अपन मातृभाषामे गीत लिखने छलाह। साहित्य निश्चित रुपें ज्योतिरीश्वरक पूर्वहिं एक निश्चित शैली पर पहुँच चुकल छल अन्यथा लोरिक सन् वीर काव्य अथवा वर्णरत्नाकर सन् महान् ग्रन्थक रचना तँ हठात् नहिए भए गेल। डा० जयकान्त मिश्रक *History of Maithili literature* क प्रथम भागमे बहुतो एहेन विद्वान आओर ग्रन्थ अछि जकर उल्लेख नहि भेल अछि आओर जे मूलरुपसँ मैथिलीक अंग थीक। हमरा विश्वास अछि जे ओ अपन भविष्यक संस्करणमे एहि सबहक अपना पोथीमे अवश्य स्थान देथिन्ह। 'प्राकृत-पैंगलम्'क उल्लेख डा० मिश्र कतहु नहि कएने छथि आर ने कृष्णदत्त मैथिलक। (कृष्णदत्त मैथिल पर देखु हमर लेख जे *Journal of the Bihar Research Society* मे छपल अछि। बंगला भाषाक सुप्रसिद्ध विद्वान आओर प्रसिद्ध भाषा विद्वान डा० श्रीकुमार बनर्जी *History of Maithili Literature* क आलोचना करैत सेहो अइ कमीक उल्लेख कएने छथि (द्रष्टव्य-*Journal of the Asiatic Society of Bengal* XVI-*Letters* – p. 269) – प्राकृतपैंगलम्क संबन्धमे ई स्मरण राखब आवश्यक जे एकर भाषा प्रायः ओएह थीक जे विद्यापतिक कीर्तिलता आओर कीर्तिपताकाक भाषा छथि तथा एहि ग्रंथक

रचनामे (गीत सभहिक संग्रह पूर्वी भारतमे भेल छल ।) महामंत्री चण्डेश्वरक प्रशस्तिमे बनाओल दूटा गीत सेहो अछि आओर एकर बनौनिहार छलाह चण्डेश्वरक अधीनस्थ सामन्त 'हरिब्रह्म'। 'प्राकृतपैंगलम्'मे कतोक शताब्दक भाषाक परिचय भेटइत अछि आओर ओहिमे जतवा जे प्रयोग भेल अछि से मूल्यतः मैथिली प्रयोगसँ मिलैत-जुलैत अछि । 'सिद्धगान' पर जतेक लोक सब माथापच्ची कएने छथि ततबे जँ प्राकृतपैंगलम् मे एहुखन कएल जाय तँ मैथिलीक बड्ड उपकार होएत। डा० सुभद्रझा 'कबीर'केँ मैथिल सिद्ध करबाक बीड़ा तँ उठौलन्हि (देखु *Journal oJ the Bihar University* मे हुनक लेख) मुदा 'प्राकृत-पैंगलम्' जे शुद्ध मैथिलीक वस्तु थीक, ताहि पर कोनो विशिष्ट ध्यान नहि देलन्हि । एकर प्रमाण एहिसँ बुझना जाइत अछि जे ओ अपन प्रसिद्ध पोथी *Formation of Maithili Language* मे एहि ग्रन्थक बड्ड कम चर्च कएने छथि ।

डा० सुभद्रझाक पोथीसँ किछु अंश हम पाठकक हेतु उद्धृत् कए रहल छी :

पृ० ४१—'The *Prakritpainglam* gives an example to several metres and verses which may be said to have been composed in proto-Maithili....there is nothing in them that may prevent them being called Maithili of an early period....

पृ० ४२—The language of the *Chāryas*, Sarvānanda, *Prakritpainglam*, *Kirtilata* and *Kirtipataka* represent Maithili of the oldest period in as much as it preserves some of the *Apabhraṁsa* characteristics'.

पोथीक दाम ततेक छन्हि जे केओ साधारण मैथिल पाठक एकरा कीनिकए नहि पढ़ि सकैछ। एतबा कहितो ई प्राकृतपैंगलम् पर विशेष ध्यान नहि देने छथि। एहि पोथीक आलोचना जे हालहि मे छपल अछि लण्डनमे से उत्साहवर्द्धक नहि कहल जा सकैछ । भाषा आओर अन्याय समस्याक अध्ययनक हेतु आओर देखू राहुलजीक हिन्दी काव्य-धारा जाहि मे एहि सभ वस्तुक विशद् विश्लेषण भेल अछि । 'प्राकृत-पैंगलम्' मे मिथिलाक इतिहास सम्बन्धी सेहो बहुत सटीक बात सब लिखल

अछि (देखू-हमरे लेख—*Prakrtapainglam*—an important source for the study of the History of Mithila)। 'प्राकृत्-पैंगलम्'क दूटा संस्करण हमरा बुझल अछि—(i) सी० एम० घोष द्वारा सम्पादित एवं विब्लियोथीका इन्डिका सीरीज, कलकत्ता सँ प्रकाशित १६०२ ई० मे प्राकृत-पैंगलम् आओर ii) एम्हर हालहि मे हिन्दी मे एकर एक संस्करण दिल्ली सँ प्रकाशित भेल अछि।

एहि सम्बन्ध मे हरिवंश कोछड़क 'अपभ्रंश साहित्य'क अध्ययन आवश्यक बुझना जाइत अछि। 'प्राकृतपैंगलम्' पर प्रो० एस० एन० घोषालक बहुतो लेख अंग्रेज़ी मे भारतवर्षक विभिन्न शोधपत्रिका मे प्रकाशित भेल छन्हि। एहिठाम 'प्राकृतपैंगलम्' सँ हम थोड़ेक ओहन शब्दक संचय कएने छी जकर रूप शुद्ध मैथिलीक अछि एहि हेतु जे केओ १४म शताब्दक मैथिली शब्द देखए चाहथि से डा०उमेशमिश्रक लेख JBORS-XIV-पृष्ट २६६-२७३ मे देखि सकइत छथि। हम अपन 'प्राकृत-विद्यापति'वाला लेखक इ एकटा पद सेहो प्राकृतपैंगलम् सँ देने छी जाहिसँ सिद्ध होइछ जे ई मैथिली थीक। स्थानाभावक कारणं एकर विश्लेषण एहिठाम संभव नहि।

परिशिष्ट घ

मिथिलाक प्राचीन सीमा

ग्रन्थ सभ जाहिमे एकर उल्लेख अछि

i) Winternitz—*History of Indian literature* Vol. I ii) Oldenberg—Buddha iii) महाभारत आओर रामायण iv) दिव्यावदान v) शतपथ आओर ऐतरेय ब्राह्मण vi) पुरुषोत्तमदेवक त्रिकाण्डशेषकोष vii) Hardy—Manual of Buddhism viii) N. L. Dey—Geographical Dictionary of ancient and Medieval India ix) Ganganath Jha Commemoration Volume x) Sacred Books of the East मे प्रकाशित जैन सूत्र सबहिक संग्रह xi) R. K. Choudhary : *a*) Selected Inscription of Bihar *b*) History of Bihar *c*) सिद्धार्थ xii) Upendra Thakur—History of Mithila xiii) S. N. Singh—History of Tirhut.

आओर विभिन्न पत्र-पत्रिकादि मे एकर विवरण प्रस्तुत भेल अछि।

विवरण :

i) मिथिलास्थः सयोगीन्द्रः सम्यग् ध्यात्वा ब्रवीन मुनीन्। यस्मिन देशे मृगः कृष्णास्तस्मिन् धर्मान् निवोधयत् (याज्ञवल्क्यस्मृति–आचार-१२.) ii) डा० उमेशमिश्र द्वारा सम्पादित विद्याकरसहस्रक–पृ० १४७ मे लिखल अछिः जाता स यत्र सीता सरिदमलजलावाग्वती यत्रपुण्या। यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम्॥ मीमांसा-न्याय-वेदाध्ययन-पटुतरैः पण्डितैर्मण्डिताया भूदेवो यत्र भूपो यजनवसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः। iii) त्रिकाण्डशेषकोष

a) गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवेः विदेहभूः समाख्याता तीर-भुक्तभिधो मनुः। (आओर देखु-शक्तिसंगमसूत्र) b) प्राग्ज्योतिषः कामरुपे तीरभुक्तिस्तु लिच्छविः–(पृष्ठ ५६) iv) काठकसंहिता–xiii.4–

इन्द्रो वै वृत्रमहस्तं हस्तस्सप्तभिर्भोगैः पर्यहंस्तस्य मूर्ध्नो वैदेहीरुदायंस्ताः प्राचीरायंस्तस्माताः पुरस्य जघन्यमृषयं वैदेहमनुद्यान्तममन्यतेमसिदानी मालभेय तेन त्वा इतो मुच्येयेति

v) वायुपुराण (८८–३०६)

मिथिर्नाम महावीर्यो येनासौ मिथिलाऽभवत्

vi) शब्दकल्पद्रुम–७२३–विदेहा मिथिला प्रोक्ता vii) लिङ्गपुराण–तीर-भुक्ति प्रदेशे तु हलावत्तो हलेश्वरः। viii) चन्दा झा–गंगा बहति जनिक दक्षिण दिसि पूर्वकौशिकीधारा पश्चिम बहति गण्डकी उत्तरहिमवत बलविस्तारा कमला त्रियुगा अमृता धेमुड़ा वागमती कृतसारा मध्य वहत लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा

ix) राजनैतिक इतिहासक पाद टिप्पणी मे बहुत किछु लिखल जा चुकल अछि आओर देखू–*IHQ*-XXXV. No. 2.

x प्रवचनो सारोद्धार आओर विविध तीर्थंकल्पमे विदेह जनपदक राजधानी मिथिला कहल गेल अछि। एकर सीमा पूर्वसँ पश्चिम १८० मील आओर उत्तरसँ दक्षिण १२५ मील कहल गेल अछि। निरयावलियाओमे मिथिलाक राजधानी वैशाली कहल गेल अछि।

परिशिष्ट घ

मिथिलापर हमर लेख सबहिक किछु आर विशेष सूची

हम अपन राजनैतिक इतिहासक परिशिष्टमे किछु लेख सबहिक सूचीक संग अपन पोथी सबहिक नाम सेहो देने छी। ओहिमे जे छुटिगेल छल तकरा एहिठाम दए देब आवश्यक बुझै छी :

i) Cultural Heritage of Mithila ii) Agricultural in the Vedic period iii) Social history as gleaned through Jaimini—Grhyasutra iv) Position of the Brāhmanas in Ancient India v) Jaunpur as described in Vidyapati's Kirtilata vi) Cultural heritage of Bihar vii) Bihar in Kalidāsa's works viii) गीतिनाट्यकार विद्यापति ix) Traces of Slavery in Mithila x) Surya image from Barauni xi) Krṣnadatta Maithil and his works xii) Sanskrit Drama in Mithila xiii) Feudalism (जाहिमे मिथिलाक चर्च सेहो अछि) xiv) Dramatic Tradition of Mithila xv) Jata—Jattin Songs xvi) Panchobh Copperplate of Saṁgramgupta xvii) Some interesting archaeological sites in North Bihar xviii) Administrative System of the Karnātas of Mithila xix) Kosi Songs xx) Madan Mishrə, the great intellectual giant of Mithila xxi) पाली आओर बौद्ध साहित्य xxii) Indusfries in ancient Bihar xxii) Magic, rites and witchcrafts in the Atharvaveda xxiv) Mithila as gleaned through Mithilamahatmya xxv) Lichchavis of Vaisali and Nepal xxvi) प्राक्-विद्यापतिकालीन मैथिली। xxvii) Mithila in the Age of Vidyapati.

—मिथिलाक ऐतिहासिक पृष्टिभूमि मैथिलीमे निम्नलिखित पोथी जे एहिखन धरि अप्रकाशित अछि : (i) मैथिली धम्मपद्ध (ii) शारान्तिधा (iii) कुसुमावलिक नीलकमल (iv) शिवसिंहक राज्याभिषेक (नाटक) (i) लक्षणशास्त्र पर मैथिली लिपिमे एक अलभ्य ग्रन्थक पाण्डुलिपि (ii) महाभारत सचित्रक मैथिली हिन्दी मिश्रित भाषामे एक पाण्डुलिपि—सेहो हमरा संगमे अछि (iii) लालचदास हलुवाइक रचित भागवतक भाषानुवादक एक प्रति हमरा संगमे अछि—लोरिक सलहेस आओर बिहुला गीतक किछु अंशक संग्रह सेहो हम कएने छी—

Regd. No. P-714 Vaidehi Nov.-Dec. 63 R.No. 3731



वैदेही-समिति

दरभंगाक

एवं सम्बद्ध नवीनतम प्रकाशन

मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता [दू भाग] म० म० डा

●

मैट्रिकसँ एम. ए. धरिक मैथिली पोथीक जिज्ञास

●

चयनिका —श्रीकृष्णकान्तमिश्र
गप्पक फोड़न —श्रीहरिमोहनझा
चानो दाइ —श्रीसोमदेव
मिथिलाक राजनीतिक इतिहास —प्रोफेसरश्रीराधाकृष्
मिथिलाक इतिहास —प्रोफेसरश्रीकृष्णका
मैथिली साहित्यक इतिहास —प्रोफेसरश्रीकृष्णका
राली (हिन्दी) —श्रीप्रेमशंकरखरे
विवेचना —आलोचनात्मक नि
रेखाचित्र —प्रोफेसर श्रीउमान
हर्षनाथ-ग्रन्थावली —श्रीऋद्धिनाथझा
रचना-संग्रह (भाग १ एवं २)
रचना-संग्रह (भाग ३)
साहित्य-समीक्षा (भाग १ एवं २)
मैथिली साहित्यकारक परिचय-पात